# फसलों में कीट-व्याधियों पर नियंत्रण की जरूरत

किसानों के बीच तकनीक साझा करते वैज्ञानिक.

**पूसा.** विकसित कृषि संकल्प अभियान के तीसरे दिन डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के दो टीमों द्वारा 6 गांव का भ्रमण कर खरीफ उत्पादन से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराई गई. टीम वन के द्वारा गोपालपुर वासुदेवपुरम एवं वीरसिंहपुर गांव पर किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया. इसमें इंजीनियर बिनीता कश्यप, डॉ उदित कुमार, डॉ गीतांजलि, डॉ आरके तिवारी एवं सुमित कुमार सिंह के द्वारा विभिन्न विषयों पर जानकारी उपलब्ध कराई गई. कार्यक्रम में किसानों के द्वारा लगाये गये मूंग के फसल में विभिन्न प्रकार के रोग एवं कीट व्याधि के प्रबंधन के बारे में चर्चा की गयी. बीज उत्पादन पर प्रकाश डाला गया. कार्यक्रम के प्रत्येक स्थल पर 120 से ज्यादा प्रतिभागी मौजूद थे. टीम 2 का जिसका नेतृत्व डॉ धीरू कुमार तिवारी कर रहे हैं. डॉ के चौधरी सह प्राध्यापक पौधा रोग पूसा एवं डॉ मो. हसनैन वैज्ञानिक भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान पूसा ने अपनी जानकारी रामपुर अजना एवं कल्याणपुर में किसानों के बीच साझा किया. इसमें आम में लगने वाले विभिन्न रोगों एवं कीट-व्याधि के बारे में जानकारी दी गई.

प्रभात खबर
Sunday, June 1, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/683b5339bcc70506584e8da

# कृषि विश्वविद्यालय में विकसित कृषि संकल्प अभियान की हुई शुरुआत

कृषि ज्ञान वाहन के साथ गांव पहुंचे वैज्ञानिक.

**पूसा.** टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने और आधुनिक ज्ञान के साथ किसानों को सशक्त बनाने के एक दृढ़ कदम के तहत, विकसित कृषि संकल्प अभियान का शुभारंभ हो गया. इस संकल्प अभियान को मूर्त रूप देने के लिए डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों का टीम राज्य के सभी चयनित गांवों में पहुंचकर कृषि से संबंधित विभिन्न समस्याओं का निदान निकालकर विभागीय पोर्टल पर अपलोड करने का कार्य प्रारंभ कर दिया है. शुरुआत केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर एवं कुलपति डा पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने किया. यह वाहन जिसमें सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग करके किसानों को कृषि संबंधी ज्ञान और जानकारी प्रदान करने के लिए विभिन्न जिले भर के गांवों का दौरा कर रही और महत्वपूर्ण कृषि ज्ञान और सूचना को सीधे कृषक समुदाय तक पहुंचा रही है. वैज्ञानिक डा बिनीता सतपथी ने बताया कि यह अभियान 29 मई से 12 जून तक चलने वाला 15 दिवसीय राष्ट्रव्यापी अभियान वैज्ञानिक खेती के तरीकों, सरकारी योजनाओं, एकीकृत खेती और टिकाऊ तकनीकों के बारे में किसानों की जागरूकता बढ़ाने पर केंद्रित है. इस अभियान की जिम्मेवारी नोडल अधिकारी सह वैज्ञानिक डा रत्नेश कुमार झा को सौंपी गई है.

प्रभात खबर
Sunday, June 1, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/683b5339bcc78506584e8d93

# पूसा का धान, किसानों का अभिमान

## राजश्री, राजेंद्र मंसूरी-वन, राजेंद्र श्वेता, सुगंधित राजेंद्र कस्तूरी दे रहे बेहतर उत्पादन

पूर्णेंदु कुमार • जागरण

- सीधी बुआई बेहतर, 20 जून से 10 जुलाई के बीच गिराएं बिचरा
- जब पौधा 20 से 22 दिन का हो जाए तो करें खेतों में रोपाई

पूसा (समस्तीपुर) : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के विज्ञानियों ने विगत वर्षों में धान के कई प्रभेद विकसित किए हैं। राजश्री, राजेंद्र मंसूरी-वन, राजेंद्र श्वेता, सुगंधित राजेंद्र कस्तूरी एवं राजेंद्र सुभाषिनी। ये सभी प्रभेद बेहतर उत्पादन दे रहे हैं। किसान इसकी खेती भी कर रहे हैं। इस खरीफ मौसम में भी इसकी खेती की तैयारी है। राजश्री प्रभेद सबसे पुराना है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित राजश्री प्रभेद 145 से 150 दिनों में तैयार होता है। इसकी उपज क्षमता 45 से 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। राजेंद्र भगवती विश्वविद्यालय द्वारा 2009 में विकसित किया गया था। यह 110-115 दिनों में तैयार होता है। इसकी उपज क्षमता 45 से 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। राजेंद्र मंसूरी कृषि अनुसंधान केंद्र, मीठापुर द्वारा विकसित है। 155 से 150 दिनों में तैयार होने वाले इस प्रभेद की उपज क्षमता 60 से 65 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसी तरह 125 से 130 दिनों में तैयार होने वाला राजेंद्र श्वेता प्रभेद 40 से 45 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की उपज देता है। किसान के खेतों में अच्छे प्रदर्शन की वजह से इसकी मांग बढ़ती जा रही है। इसमें राज श्री प्रभेद सबसे पुरानी है फिर भी किसान बड़े ही अरमानों के साथ लगाते हैं। ज्यादातर किसान इसे जानते भी हैं। हालांकि, अगर देखा जाए तो विश्वविद्यालय के द्वारा धान की जो भी प्रभेद विकसित की गई है जिसमें कुछ ही फसल ऐसे हैं, जिन्हें किसान जानते भी हैं। अधिकांश किसान विभिन्न कंपनियों के हाइब्रिड बीज की बुआई करते हैं। इससे अधिक उत्पादन होता है।

वैज्ञानिक डा. निलंजय कुमार का बताना है कि धान की सीधी बुआई किसानों के लिए बेहतर है। राजेंद्र नीलम, राजेंद्र भगवती, राजेंद्र श्वेता इत्यादि पर बिचरा 20 जून से 10 जुलाई के बीच गिरा देनी चाहिए। जब पौधा 20 से 22 दिन का हो जाए तो उसे खेतों में रोपाई करें। वहीं, लंबी अवधि वाले राजश्री, राजेंद्र मसूरी के बिचड़े 10 जून तक नर्सरी में किसान लगा सकते है। बिहार में ऊपरी जमीन मध्य जमीन, निचली जमीन सहित गहरा क्षेत्र टाल क्षेत्र के लिए भी विभिन्न किस्म के धान की भी किसान बुआई कर सकते हैं।

**राजेंद्र भगवती का दाना पतला, लंबा व सुगंधित :** राजेंद्र भगवती प्रभेद विश्वविद्यालय के द्वारा वर्ष 2009 में विकसित किया गया था। यह 110 से 115 दिनों में पक कर तैयार होती है। इसका दाना पतला, लंबा एवं सुगंधित होता था। इसकी तना इतनी मजबूत होती है कि तेज हवा में गिरता भी नहीं है। उपज क्षमता 45 से 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर बताया होता है। वैज्ञानिकों के द्वारा कम पानी में होने वाला यह प्रभेद बताया गया है। लेकिन प्रारंभ के तीन-चार साल तो किसानों ने काफी अपनाया लेकिन अब यह किसानों से दूर होता जा रहा है।

**लंबी अवधि का प्रभेद राजेंद्र मंसूरी :** राजेंद्र मंसूरी लंबी अवधि का प्रभेद है। इसे कृषि अनुसंधान केंद्र मीठापुर से विकसित की गई थी। 155 से 150 दिन में पक कर तैयार होती है। इसकी उपज क्षमता 60 से 65 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। राजेंद्र श्वेता 125 से 130 दिनों में पक कर तैयार है। यह प्रभेद मध्य एवं सिंचित भूमि के लिए उपयुक्त है। इसके दाने मध्य लंबे एवं पतले होते हैं। साथ ही इसके चावल में सुगंध नहीं होता है। इसकी उपज क्षमता 40 से 45 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

**राजेंद्र नीलम प्रभेद धान का चूड़ा लोगों की खास पसंद :** राजेंद्र नीलम प्रभेद का दाना मध्य बोल्ड होता है। इसका चूड़ा आम लोगों की खास पसंद है। मात्र दो से तीन सिंचाई वाला यह प्रभेद ऊपरी एवं मध्य जमीन वाले खेतों के लिए बेहतर माना जाता है। इसमें कीड़ा व बीमारी नहीं के बराबर लगता है। इसकी उपज क्षमता 40 से 45 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

**सुगंधित धान में शामिल राजेंद्र कस्तूरी प्रभेद :** सुगंधित धान में शामिल राजेंद्र कस्तूरी प्रभेद विश्वविद्यालय के द्वारा वर्ष 2004 में बिहार के किसानों के लिए रिलीज किया गया था। यह मध्य एवं सिंचित भूमि के लिए उपयुक्त है। 120 से 125 सेमी लंबी होने वाली यह प्रभेद 125 से 130 दिन में तैयार होती है। इसकी उपज क्षमता 25 से 30 क्विंटल होती है। राजेंद्र सुवासिनी प्रभेद है 120 से 125 दिन में पक कर तैयार होती है। इसकी भी उपज क्षमता 25 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

### विश्वविद्यालय की सबसे पुरानी प्रभेद राजश्री

विश्वविद्यालय की राजश्री नामक प्रभेद काफी पुरानी है। लंबी अवधि का प्रभेद 145 से 150 दिन में तैयार होती है एवं इसकी उपज क्षमता 45 से 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। पौधे की लंबाई 125 से 130 सेंटीमीटर होती है। इसके चावल से बने भात की गुणवत्ता अच्छी होती है। यह पुष्पम के समय में नमी की कमी बर्दाश्त नहीं कर पाता है। पुष्पम के समय खाद का ऊपरी निवेश करने से पौधा गिर भी जाता है।

Dainik Jagran 01-06-2025

# वैज्ञानिकों का तीसरे दिन भी जारी रहा भ्रमण

किसानों के साथ वैज्ञानिक • जागरण

संस, जागरण, पूसा : विकसित कृषि संकल्प अभियान के तीसरे दिन कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के दो टीम द्वारा कुल छह गांव का भ्रमण कर खरीफ उत्पादन से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराई गई। टीम वन द्वारा गोपालपुर वासुदेवपुर एवं वीरसिंहपुर गांव में किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। इंजीनियर विनीत कश्यप, डा. गीतांजलि, डा. आरके तिवारी एवं सुमित कुमार सिंह द्वारा विभिन्न विषयों पर जानकारी उपलब्ध कराई गई। किसानों द्वारा लगाए गए मूंग के फसल में विभिन्न प्रकार के रोग एवं कीट व्याधि के प्रबंधन के बारे में चर्चा किया गया। साथ ही साथ बीज उत्पादन पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम के प्रत्येक स्थल पर 120 से अधिक प्रतिभागी मौजूद रहे। टीम टू का नेतृत्व डा. धीरू कुमार तिवारी कर रहे हैं।

**Dainik jagran 01-06-2025**

# विकसित कृषि संकल्प अभियान : वैज्ञानिकों ने किसानों को दी खरीफ फसलों से जुड़ी जानकारी

**पूसा (एसएनबी)।** विकसित .षि संकल्प अभियान के तीसरे दिन .षि विज्ञान केंद्र बिरौली समस्तीपुर के दो टीमों के द्वारा कुल 6 गांवों का भ्रमण कर खरीफ फसल के उत्पादन से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराई गई। जिसमें टीम वन के द्वारा कल्याणपुर प्रखण्ड के गोपालपुर, वासुदेवपुर एवं वीर सिंह पुर गांव में किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें इंजीनियर विनीत कश्यप, डॉ उदित कुमार, डॉ गीतांजलि, डॉ आरके तिवारी एवं सुमित कुमार सिंह के द्वारा विभिन्न विषयों पर जानकारी उपलब्ध कराई गई। इस कार्यक्रम में किसानों के द्वारा लगाए गए मूंग के फसल में लगने वाले विभिन्न प्रकार के रोग एवं कीट व्याधि के प्रबंधन से जुड़े विषय पर चर्चा किया गया। साथ ही बीज उत्पादन पर प्रकाश डाला गया कार्यक्रम के प्रत्येक स्थल पर 120 से ज्यादा किसान मौजूद थे। वहीं डॉक्टर धीरू कुमार तिवारी के नेतृत्व में टीम टू डॉक्टर मोहम्मद हसनैन वैज्ञानिक भारतीय .षि अनुसंधान संस्थान पूसा ने रामपुर, अजना एवं कल्याणपुर में किसानों के बीच खरीफ फसलों से जुडी जानकारियों को साझा किया। इस क्रम में उन्होंने आम में लगने वाले विभिन्न रोगों एवं कीट व्याधि के बारे में भी जानकारी दी।

अभियान में शामिल कृषि वैज्ञानिक व अन्य।

Rashtriya Sahara 01-06-2025

# दो-तीन दिनों में तापमान में वृद्धि की संभावना

**समस्तीपुर.** रविवार को अधिकतम तापमान 37.4 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 27.2 डिग्री सेल्सियस रहा. मौसम विभाग पूसा के अनुसार आने वाले दो - तीन दिनों में तापमान में 3-4 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी होने की संभावना है. इस दौरान 18-25 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से पूर्वा हवा चलने की संभावना है. इसके बाद पछिया हवा चलने की संभावना है. डॉक्टरों ने बताया कि मई जून माह में पुरवा हवा से स्वास्थ्य पर कई तरह का प्रभाव पड़ता है. यह पुरानी चोटों के दर्द को बढ़ा देता है. जोड़ों में दर्द को भी बढ़ा देता है. यह लोगों में सुस्ती पैदा कर पुरवा हवा में खुले में सोने से हाथ-पैर सुन्न होने या लकवा लगने की भी समस्या हो सकती है. पुरवा हवा से जोड़ों में दर्द बढ़ सकता है, खासकर उन लोगों में जो पहले से ही अर्थराइटिस या पुरानी चोटों से परेशान हैं.

प्रभात खबर
Monday, June 2, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/683ca80ea2527638799dc11b

## अन्य धान का बिचड़ा नर्सरी में गिराने की सलाह

# अल्प अवधि व सुगंधित किस्मों का बिचड़ा 20 जून से गिराएं

खेती-किसानी

- सुगंधित किस्मों का बिचड़ा बीजस्थली में पहले से गिराने से उसकी सुगंध खत्म हो जाती है

**प्रतिनिधि, समस्तीपुर**

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा के द्वारा जारी समसमायिक सुझाव में किसानों को अल्प अवधि वाले धान की किस्म एवं सुगंधित धान का किस्म का बिचड़ा बीजस्थली में 20 जून से 10 जुलाई तक बोने की सलाह दी गयी है. कहा गया है कि सुगंधित किस्मों का बिचड़ा बीजस्थली में पहले से गिराने से उसकी सुगंध खत्म हो जाती है. दूसरी ओर किसानों को अन्य धान का बिचड़ा नर्सरी में गिराने की सलाह दी गयी है. कहा गया है कि 10 जून तक लंबी अवधि वाले धान का बिचड़ा गिराने का उपयुक्त समय है. 10 से 25 जून तक मध्यम अवधि वाले धान का बिचड़ा बोने के लिये अनुकूल समय है. जो किसान धान की सीधी बोआई करना चाहते हैं, वे लंबी अवधि वाले धान की किस्म की बोआई अगले सप्ताह में कर सकते हैं, इसके लिये उनके पास सिंचाई की उचित व्यवस्था होनी चाहिये. वैज्ञानिक ने सुझाव दिया है कि खरीफ मक्का की बोआई के लिये मौसम अनुकूल है. इसके लिये देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, शक्तिमान-5, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बोआई करें. बोआई के समय प्रति हेक्टयेर 30 किलो नेत्रजन, 60 किलो स्फुर एवं 50 किलो पोटाश का व्यवहार करें. प्रति किलोग्राम 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बोआई करें. बीज दर 20 किलोग्राम प्रति हेक्टयेर रखें. भिंडी एवं बोरा जैसे फल वाली सब्जियों में भी नेत्रजन का उपरिवेशन करें एवं कीट नियंत्रण के लिये मैलाथियान 2 मिली प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 7-10 दिनों के अन्तराल पर फल तोड़ने के बाद दो बार छिडक़ाव करें. कदु वर्गीय सब्जियों में चूर्णिल असिता के आक्रमण होने पर करोथेन 1.5 ग्राम प्रति लीटर या 25 किलोग्राम सल्फर पाउडर प्रति हेक्टयेर की दर भुरकाव करें. किसान लीची तोड़ने के बाद, खासकर बरसात शुरू होने से पहले (जून के अंत से जुलई के शुरू तक), बगीचे की जुताई करें और खाद-उवर्रकों प्रयोग करें. प्रति प्रौढ़ पडे.60 से 80 किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद, 2.5 किलोग्राम, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश व 50 ग्राम सुहागा मिलाकर वृक्ष के चारों ओर समान रूप से मिट्टी में मिला दें.गरमा सब्जियों जैसे भिन्डी, नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा की फसल में निकाई गुड़ाई करें. कीट-व्याधियों से फसल की बराबर निगरानी करते रहें. प्रकोप दिखने पर अनुशंसित दवा का छिडक़ाव करें. खरीफ प्याज की खेती के लिये नर्सरी (बीजस्थली) की तैयारी करें. स्वस्थ पौध के लिये नर्सरी में गोबर की खाद अवश्य डालें. छोटी-छोटी उथली क्यारियों, जिसकी चौड़ाई एक मीटर एवं लंबाई सुविधानुसार रखें. खरीफ प्याज के लिए एन-53, एग्रीफाउण्ड डॉक रेड, अर्का कल्याण, भीमा सुपर किस्में अनुशंसित है. बीज गिराने के पूर्व बीजोपचार कर लें. बीज की दर 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें.

प्रभात खबर
Monday, June 2, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/683ca80ea2527638799dc12d

भास्कर 21/6/25 पेज 15

मंडे पॉजिटिव

सामान्य केले की तुलना में अधिक मात्रा में पोटैशियम, आयरन और विटामिन भी पाया जाता है, बाजार में अधिक डिमांड

# लाल केले की खेती से सेहत के साथ आर्थिक स्थिति भी सुधरेगी

भास्कर न्यूज़ | पूसा

बिहार के किसान हरे और पीले केले के साथ-साथ अब लाल केले की खेती कर अधिक उत्पादन, बेहतर बाजार मूल्य और उचित लाभ सभी प्राप्त कर सकते हैं। पीले और हरे रंग के केले की तुलना में लाल रंग का केला जहां अधिक नरम, मीठा और सुगंधित होता है। वहीं इसमें सामान्य केले की तुलना में अधिक मात्रा में पोटेशियम, आयरन और विटामिन भी पाया जाता हैं। पूसा विवि और केला अनुसंधान केंद्र गोरौल के वैज्ञानिक विगत तीन वर्षों से लाल केले पर जोर शोर अनुसंधान कर रहे हैं। अनुसंधान प्रक्रिया अपने अंतिम चरण में हैं। हालांकि इसे अभी व्यवसायिक स्तर पर किसानों के लिए रिलीज नही किया गया है। अनुसंधान पूरा होते ही लाल केले को पूसा विवि के अनुसंधान परिषद की बैठक में प्रस्तुत कर किसानों के लिए रिलीज किराये जाने की संभावना हैं। बताया जाता है कि दक्षिण भारत में इस केले का उत्पादन काफी अधिक मात्रा में होता है। इसकी मांग और रेट भी वहां बाजारों में अच्छी होती हैं।

## अनुसंधान : लाल केले की खेती किसानों के लिए लाभकारी

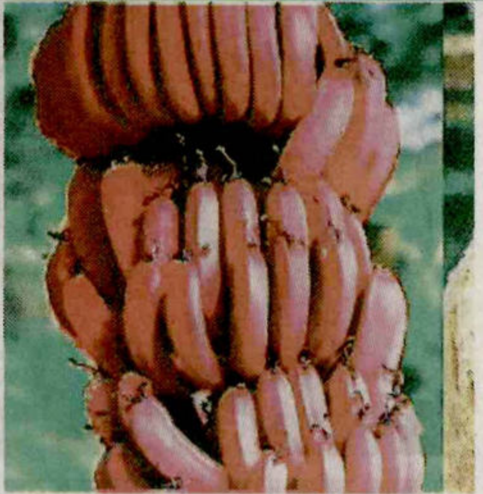

पूसा विवि के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने बताया कि बिहार में ज्यादातर लोग हरे और पीले रंग के केले की खेती करते हैं। लाल रंग के केले की खेती शायद ही किसी किसान ने किया होगा। बहुत से किसान ऐसे भी होंगे जिन्होंने अब तक इस केले को देखा भी नहीं होगा। उन्होंने कहा कि लाल केले से जुड़े विभिन्न प्रजातियों का उत्पादन पूर्वी अफ्रीका, एशिया, दक्षिण अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों में काफी मात्रा में किया जाता है। भारत में खासकर केरल और महाराष्ट्र में इसका उत्पादन अधिक मात्रा में होता है। हालांकि उन्होंने कहा कि बिहार के कृषि जलवायु में लाल केले का विकास हरे और पीले केले की तुलना में थोड़ा कम होता हैं। परंतु इसकी कीमत सालों भर अधिक रहती है ।

## कृषि वैज्ञानिक : पीले और हरे केले की तुलना में लाल केला अधिक नरम व मीठा

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि लाल केले का सेवन कई तरह की बीमारियों को रोकने में काफी सहायक होता हैं। इसमें भरपूर मात्रा में पोटैशियम, आयरन और विटामिन पाया जाता हैं जो किडनी में स्टोन बनने से उसे रोकता है। इतना ही नही इस केले में शुगर की मात्रा भी काफी कम होती है जिससे इसका सेवन डायबटीज वाले मरीज भी आसानी से कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि हरे और पीले केले की तुलना में इसमें बीटा कैरोटीन अधिक मात्रा में पाया जाता है जो धमनियों में खून का थक्का जमने नहीं देता है। इस केले का सेवन कैंसर और दिल से जुड़ी बीमारियों को भी दूर रखने में काफी मददगार हैं। डॉ. सिंह की मानें तो इस केले का छिलका लाल एवं फल हल्का पीला होता है। इसमें भरपूर मात्रा में फाइबर भी पाया जाता है।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 4 जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस दौरान उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाए रह सकते हैं। इस दौरान तराई के कुछ जिलों को छोड़कर आमतौर पर मौसम शुष्क रहने की संभावना है। इस अवधि में तापमान में बढ़ोतरी होगी।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 02 जून | 38.0 | 28.0 |
| 03 जून | 38.5 | 28.0 |
| | दरभंगा | |
| 02 जून | 38.5 | 28.0 |
| 03 जून | 38.5 | 28.5 |
| | पटना | |
| 02 जून | 40.0 | 29.0 |
| 03 जून | 40.0 | 29.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 02-06-2025

# केंद्रीय कृषि मंत्री का दौरा आज

**पीपराकोठी (एसएनबी)।** केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान सोमवार को स्थानीय कृषि विज्ञान केंद्र आयेंगे, और आयोजित कार्यक्रम में किसानों को संबोधित करेंगे। इस दौरान 6.14 करोड़ की योजनाओं का शिलान्यास करेंगे। दो हजार किसानों साथ तिरंगा यात्रा निकालेंगे। जिसको लेकर पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री व स्थानीय सांसद राधामोहन सिंह ने तैयारियों का जायजा लिया। वहीं कृषि से संबंधित पदाधिकारियों के साथ बैठक की। कहा कि .षि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार पूरे देश भर में भ्रमण कर रहे है। और जगह-जगह किसनों से वार्तालाप कर रहे हैं। इस भ्रमण कार्यक्रम के अंतर्गत सोमवार को .षि विज्ञान केन्द्र में सुबह 9 बजे आगमन सुनिश्चित हुआ है। बताया कि भारत सरकार .षि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के द्वारा 29 से 12 जून तक देशव्यापी महत्वकांक्षी महाभियान की शुरूआत की गई है। जिसे विकसित कृषि संकल्प अभियान के नाम से पूरे देश में चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम से 15 दिनों में डेढ़ करोड़ किसानों तक पहुंचने का लक्ष्य रखा गया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत पूर्वी चम्पारण के दोनों कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक की दो-दो टीमें तैयार की गई है। और प्रत्येक टीमें एक दिन में तीन-तीन गांवों का भ्रमण कर रहे है। हर कार्यक्रम में दो सौ से अधिक किसानों को एकत्रित वैज्ञानिक कृष्टिकोण से खेती करने की जानकारियां दे रहे है। किसानों की आय की दिन प्रति दिन कैसे बढ़े एवं उनकी आय दुगुनी करने और गांव के किसानों की समस्याओं की रूपरेखा भी तैयार कर रहे हैं। बैठक में विभिन्न संस्थान के पदाधिकारीगण, विश्वविद्यालय के पदाधिकारीगण, बिहार सरकार के सभी पदाधिकारीगण एवं अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

**Rashtriya Sahara 02-6-2025**

# संगृहीत डाटा के आधार पर वैज्ञानिक करेंगे अनुसंधान : वीसी

आयोजन

प्रतिनिधि, पूसा

गोष्ठी में मौजूद किसान .

विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों का गांवों में दौरा लगातार जारी है. विश्वविद्यालय में स्थापित कंट्रोल रूम से मिली जानकारी के अनुसार 31 मई तक बिहार और झारखंड के 558 गांवों के किसानों से वैज्ञानिकों ने संपर्क किया है. बिहार में 115 टीम व झारखंड में 58 टीम बनाई गई है. वैज्ञानिकों के टीम के साथ कृषि विज्ञान केन्द्र के बिहार और झारखंड के 265 विषय-वस्तु विशेषज्ञ व कृषि विभाग के 889 अधिकारी भी शामिल हुए हैं. बिहार में 765 अधिकारी जबकि झारखंड के 124 कृषि पदाधिकारियों ने गांव का दौरा किया. किसानों की समस्याओं का तत्काल निराकरण किया है. इस अभियान में बिहार और झारखंड के जनप्रतिनिधियों भी बढ चढ कर शिरकत कर रहे हैं. डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कंट्रोल रूम से मिली जानकारी के अनुसार 31 मई तक बिहार के 742 जनप्रतिनिधि जबकि झारखंड के 416 जनप्रतिनिधियों ने इस अभियान में शिरकत किया है. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि वैज्ञानिकों की टीम, जिला के कृषि अधिकारी तथा जनप्रतिनिधियों के साथ समन्वय स्थापित कर काम कर रही है. सभी वैज्ञानिकों के साथ साथ जिला के पदाधिकारी भी रिपोर्टिंग पोर्टल पर प्रतिदिन के कार्यों को अपडेट कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि यह एक मेगा अभियान है. इसका फायदा सभी किसानों को होगा. कृषि के विकास में भी यह अभियान एक मील का पत्थर साबित होगा. प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ मयंक राय ने कहा कि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिकों की 38 टीम बनाई गई है जो प्रतिदिन तीन गांव का दौरा कर रहे हैं. विकसित कृषि अभियान के नोडल पदाधिकारी डा रत्नेश कुमार झा ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को जिला के कृषि पदाधिकारियों व जन प्रतिनिधियों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है. इसके कारण वैज्ञानिकों ने लगभग पंद्रह हजार से अधिक किसानों के साथ संपर्क स्थापित किया है. विश्वविद्यालय के कंट्रोल रूम में वैज्ञानिकों से प्राप्त सभी आंकड़ों को सहेज कर रखा जा रहा है. ताकि बाद में इसका विस्तृत विश्लेषण किया जा सके. किसानों की उन समस्याओं पर जिन पर अनुसंधान करना आवश्यक है. वैज्ञानिकों को अनुसंधान के लिए प्रेरित किया जा सके.

प्रभात खबर
Tuesday, June 3, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/683df71d0fad1869e8a30e5a

भास्कर 3/6/25 पेज 15

चिंता • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक ने दी बचाव की जानकारी

# कॉलर रॉट रोग सब्जियों समेत अन्य फसलों को कर रहा नष्ट, उपज कम होने की आशंका

भास्कर न्यूज | पूसा

कॉलर रोट रोग मिर्च, टमाटर, बैंगन, कद्दू आदि सब्जियों व अन्य फसलों के लिए एक विनाशकारी रोग है। इस रोग के लक्षण पौधों के निकलने से लेकर 50 दिनों के अंतराल तक अत्यधिक दिखाई देते हैं। यह रोग बीज व भूमि जनित फफूंद से पनपने वाला रोग है। बिहार के खासकर सब्जी उत्पादक किसान वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर इस रोग का प्रबंधन करते हुए सब्जियों से बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि कॉलर रोट रोग खासकर मिर्च की सबसे महत्वपूर्ण बीमारियों में से एक है। यह एक कवक जनित बीमारी है जो स्क्लेरोटियम रॉल्फिस के कारण होता है। इस बीमारी में सबसे पहले जमीन के पास पौधों का तना सड़ने लगता है। इसके कारण मिर्च सहित तमाम तरह के अन्य फसलों के पौधे फलने की अवस्था में ही मुरझा कर मर जाते है। उन्होंने बताया कि इस रोग के हमले की शुरुआत में जहां पत्तियों पर छोटे गहरे हरे धब्बे दिखाई देते हैं जो बड़े होने के बाद अपना रंग खो देते हैं। वही फलों पर गहरे गीले धब्बे बन जाते हैं। जिन पर सफेद रंग की वृद्धि देखी जा सकती है।

कॉलर रोट रोग से ग्रसित पौधे के जड़।

## रोग ग्रसित पौधों के फल सिकुड़ जाते हैं, गुणवत्ता पर भी असर

उन्होंने बताया कि इस बीमारी से ग्रसित पौधे के फल सिकुड़ जाते हैं परंतु पौधे से जुड़े रहते हैं। इस रोग का रोगकारक मिट्टी में मौजूद रहता है। युवा पौधों पर इस बीमारी के संक्रमण के फैलने की संभावना काफी अधिक होती है खासकर जब मौसम गर्म हो तथा अत्यधिक बारिश के कारण जमीन बहुत गीली हो चुकी तो इस परिस्थिति में यह रोग प्रायः निचले हिस्से के क्षेत्रों में पनपकर जल्द से जल्द पूरे खेत में फैल जाता है। उन्होंने बताया कि इस रोग का संक्रमण टमाटर, बैंगन, स्क्वैश, तरबूज, ककड़ी और कुछ सामान्य खरपतवारों में भी लग सकता है।

## खराब जल निकास वाली मिट्टी में फसल की बुआई न करें, इसमें अधिक नुकसान

उन्होंने बताया कि किसान खराब जल निकास वाली मिट्टी में फसल की बुआई न करें तथा फसल की बुआई के पूरे मौसम में खरपतवारों को हटाते रहें। उन्होंने बताया कि किसान सभी फसल के बीज पंजीकृत कंपनियों से ही खरीदे तथा हमेशा बीजों को उपचारित करने के बाद ही उसकी बुआई करें। उन्होंने बताया कि इस रोग से अपने फसलों को बचाने के लिए किसान मैंकोजेब दवा का 3 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर फसलों पर छिड़काव करें। इसके अलावे किसान इस रोग से फसल को बचाने के लिए मेटालैक्सिल, फॉसेटाइल एल्युमीनियम एवं ऑक्सैडिक्सिल जैसे दवाओं का प्रयोग भी कर सकते हैं।

## किसान ऐसे करें कॉलर रॉट रोग का प्रबंधन

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस रोग के प्रबंधन के लिए सबसे पहले यह अति आवश्यक है की किसान अपने खेतों में रोग प्रतिरोधी फसल के किस्मों को ही चयनित कर लगाएं। अगर फसल में बीमारी लग चुकी है तो संक्रमित पौधों को उखाड़कर हर हाल में जला दे। उन्होंने बताया कि किसान मिर्च की फसल को खासकर मेड़ बनाकर उस पर ही लगाएं ताकि पानी पौधे के तने को न छू सके। इसके अलावे किसान बार-बार एक ही खेत में मिर्च, टमाटर आदि जैसे फसल को न उगाए बल्कि तीन साल के लिए चारे और अनाज से जुड़े फसलों की खेती करने के साथ-साथ फसल चक्र को जरूर अपनाए।

कृषि • विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि की ओर से अभियान

# 558 गांवों के किसानों से वैज्ञानिकों ने किया संपर्क, कृषि की नई तकनीक भी बता रहे

भास्कर न्यूज़ | पूसा

विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा से जुड़े कृषि वैज्ञानिकों का गांवों का दौरा लगातार जारी है। विश्वविद्यालय में स्थापित कंट्रोल रूम से मिली जानकारी के अनुसार 31 मई तक बिहार और झारखंड के 558 गांवों के किसानों से वैज्ञानिकों ने संपर्क किया है। बिहार में 115 टीम जबकि झारखंड में 58 टीम बनाई गई है। वैज्ञानिकों के टीम के साथ-साथ कृषि विज्ञान केंद्र बिहार और झारखंड के 265 विषय-वस्तु विशेषज्ञ तथा कृषि विभाग के 889 अधिकारी इस अभियान में शामिल होकर कृषि को उन्नत व लाभकारी बनाने के लिए किसानों को जागरूक करने में लगे हैं। बिहार में 765 अधिकारी जबकि झारखंड के 124 कृषि पदाधिकारियों ने गांव का दौरा कर किसानों की कृषि से जुड़ी समस्याओं का तत्काल निराकरण किया है। इस अभियान में बिहार और झारखंड के हजारों जनप्रतिनिधि भी बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। विश्वविद्यालय के कंट्रोल रूम से मिली जानकारी के अनुसार 31 मई तक बिहार के 742 जनप्रतिनिधि जबकि झारखंड के 416 जनप्रतिनिधियों ने इस अभियान में शिरकत किया है। कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने कहा कि वैज्ञानिकों की टीम जिला के कृषि अधिकारी और जनप्रतिनिधियों के साथ समन्वय स्थापित कर किसानों को जागरूक कर रही है।

कृषक गोष्ठी में शामिल किसान।

## किसान अपनी समस्याओं को लेकर पहले से और सजग हुए

वैज्ञानिकों की टीम बिहार और झारखंड के सभी जिलों में किसानों से संपर्क कर रही है। जनप्रतिनिधियों के सहयोग से किसानों को एक दिन पहले ही वैज्ञानिकों की टीम के बारे में जानकारी दे दी जाती है जिसके कारण किसान अपनी समस्याओं को लेकर पहले से ही सजग रहते हैं। विश्वविद्यालय के कंट्रोल रूम में वैज्ञानिकों से प्राप्त सभी आंकड़ों को सहेज कर रखा जा रहा है ताकि बाद में इसका विस्तृत विश्लेषण किया जा सके। वैज्ञानिकों के द्वारा विश्लेषण किये जाने के बाद किसानों की उन समस्याओं जिन पर अनुसंधान करना आवश्यक है उस पर वैज्ञानिकों को अनुसंधान करने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

## पदाधिकारी भी रिपोर्टिंग पोर्टल पर प्रतिदिन के कार्यों को अपडेट कर रहे

सभी वैज्ञानिकों के साथ-साथ जिला के पदाधिकारी भी रिपोर्टिंग पोर्टल पर प्रतिदिन के कार्यों को अपडेट कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह एक मेगा अभियान है जिसका फायदा सभी किसानों को होगा और कृषि के विकास में भी यह अभियान एक मील का पत्थर साबित होगा। प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. मयंक राय ने कहा कि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिकों की 38 टीमें बनाई गई है जो प्रतिदिन तीन गांव का दौरा कर रहे हैं। विकसित कृषि अभियान के नोडल पदाधिकारी डा. रत्नेश झा ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को जिला के कृषि पदाधिकारियों तथा जन प्रतिनिधियों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है जिसके कारण वैज्ञानिकों ने लगभग पंद्रह हजार से अधिक किसानों के साथ संपर्क स्थापित किया है।

# कृषि वैज्ञानिकों ने 558 गांवों का किया दौरा

संस. जागरण • पूसा : विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों का गांवों का दौरा लगातार जारी है। विश्वविद्यालय में स्थापित कंट्रोल रूम से मिली जानकारी के अनुसार 31 मई तक बिहार और झारखंड के 558 गांवों के किसानों से वैज्ञानिकों ने संपर्क किया है। बिहार में 115 टीम जबकि झारखंड में 58 टीम बनाई गई है। वैज्ञानिकों के टीम के साथ साथ कृषि विज्ञान केंद्र के बिहार और झारखंड के 265 विषय-वस्तु विशेषज्ञ तथा कृषि विभाग के 889 अधिकारी भी शामिल हुए हैं। बिहार में 765 अधिकारी जबकि झारखंड के 124 कृषि पदाधिकारियों ने गांव का दौरा किया और किसानों की समस्याओं का तत्काल निराकरण किया है। इस अभियान में बिहार और झारखंड के जनप्रतिनिधियों भी बढ़ चढ़कर शिरकत कर रहे हैं। डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कंट्रोल रूम से मिली जानकारी के अनुसार 31 मई तक बिहार के 742 जनप्रतिनिधि जबकि झारखंड के 416 जनप्रतिनिधियों ने इस अभियान में शिरकत किया है। कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि वैज्ञानिकों की टीम, जिला के कृषि अधिकारी तथा जनप्रतिनिधियों के साथ समन्वय स्थापित कर काम कर रही है। सभी वैज्ञानिकों के साथ-साथ जिला के पदाधिकारी भी रिपोर्टिंग पोर्टल पर प्रतिदिन के कार्यों को अपडेट कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह एक मेगा अभियान है जिसका फायदा सभी किसानों को होगा और कृषि के विकास में भी यह अभियान एक मील का पत्थर साबित होगा। प्रसार शिक्षा निदेशक डा. मयंक राय ने कहा कि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिकों की 38 टीम बनाई गई है जो प्रतिदिन तीन गांव का दौरा कर रहे हैं। विकसित कृषि अभियान के नोडल पदाधिकारी डा. रत्नेश झा ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को जिला के कृषि पदाधिकारियों तथा जन प्रतिनिधियों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है। जिसके कारण वैज्ञानिकों ने लगभग पंद्रह हजार से अधिक किसानों के साथ संपर्क स्थापित किया है। वैज्ञानिकों की टीम बिहार और झारखंड के सभी जिलों में किसानों से संपर्क कर रही है। जनप्रतिनिधियों के सहयोग से किसानों को एक दिन पहले ही वैज्ञानिकों की टीम के बारे में जानकारी दे दी जाती है।

बेगूसराय के तेघड़ा में किसानों को किया संबोधित • जागरण

**Dainik Jagran 03-06-2025**

# कृषि को डिजिटल समाधान से बनाना है उत्तम : शिवराज

**जासं, मोतिहारी (पूर्वी चंपारण) :** केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सोमवार को कहा कि विकसित कृषि संकल्प अभियान का उद्देश्य भारतीय कृषि को डिजिटल समाधान से उत्तम बनाना है। कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और किसान भारत की आत्मा। मैं किसानों के सेवक के रूप में काम कर रहा हूं।

विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम में पीपराकोठी स्थित कृषि विज्ञान केंद्र परिसर में पहुंचे केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि इस अभियान के तहत किसानों के घरों और खेतों में जाकर उनसे बात करता हूं। उनकी समस्या सुनना और निष्पादन

**विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत पूर्वी चंपारण के पीपराकोठी पहुंचे केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री**

प्राथमिकता है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में हमारा लक्ष्य है कि देश में कोई भी भूखा नहीं रहे।

किसान खेतों में मेहनत करते हैं और विज्ञानी प्रयोगशाला में शोध करते हैं, लेकिन दोनों का कभी मेल-मिलाप नहीं होता था। इस अभियान के माध्यम से सरकार ने विज्ञानियों व किसानों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का काम किया है। विज्ञानी किसानों तक पहुंचकर तकनीक की जानकारी

किसान चौपाल में लीची किसान से बात करते केंद्रीय कृषि मंत्री ● जागरण

देकर उत्पादन दो से तीन गुना बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

**किसानों के साथ निकाली तिरंगा यात्रा :** आपरेशन सिंदूर की सफलता को लेकर सेना के शौर्य व सम्मान में केंद्रीय मंत्री ने करीब दो हजार किसानों के साथ तिरंगा यात्रा निकाली। केंद्रीय मंत्री ने सांसद राधामोहन सिंह सहित सभी किसानों के साथ हेलीपैड से तिरंगा यात्रा आरंभ की। वहां से उत्कृष्ट पशु प्रजनन केंद्र परिसर में गोकुल योजना के तहत भगवान कृष्ण की गायों के साथ लगी प्रतिमा को देखते हुए संपूर्ण परिसर में तिरंगा यात्रा आगे बढ़ी।

Dainik Jagran 03-06-2025

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 4 जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस दौरान उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाए रह सकते हैं। इस दौरान तराई के कुछ जिलों को छोड़कर आमतौर पर मौसम शुष्क रहने की संभावना है। इस अवधि में तापमान में बढ़ोतरी होगी।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 03 जून | 38.0 | 28.0 |
| 04 जून | 38.5 | 28.0 |
| | दरभंगा | |
| 03 जून | 38.5 | 28.0 |
| 04 जून | 38.5 | 28.5 |
| | पटना | |
| 03 जून | 40.0 | 29.0 |
| 04 जून | 40.0 | 29.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 03-06-2025

# फसलों में अनावश्यक खाद न डालें

## बोले शिवराज

**मोतिहारी, हिन्दुस्तान संवाददाता।** केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सोमवार को कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। किसान आत्मनिर्भर होंगे तो देश विकसित होगा। इसके लिए मोदी सरकार ने विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरुआत की है।

पूर्वी चंपारण के पिपराकोठी केविके में आयोजित कार्यक्रम में किसानों से संवाद के दौरान शिवराज ने कहा कि पहले किसान वैज्ञानिक से कभी नहीं मिल पाते थे। उन्होंने खेती में चमत्कार और गंगा व यमुना की भांति 'लैब को लैंड' से जोड़ने के लिए 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' शुरू करने की बात कही। शिवराज ने किसानों से कहा कि फसलों में खाद का अनावश्यक उपयोग नहीं करें। मिट्टी की सेहत के अनुसार ही किसान खेतों में खाद डालें। कहा कि जब वैज्ञानिक, कृषि विवि व किसान मिलकर काम करेंगे तो कृषि उत्पादन में अधिक वृद्धि होगी। उन्होंने जर्दालू आम, बासमती चावल, मरचा चूड़ा का उत्पादन बढ़ाने के लिए नयी तकनीक के इस्तेमाल पर जोर दिया। मिरचा चूड़ा का निर्यात कैसे विदेश में बढ़े, इसके लिए योजना बनाई जाएगी। मंत्री ने केविके परिसर स्थित 6.14 करोड़ की विभिन्न योजनाओं का शिलान्यास किया। कार्यक्रम को पूर्व केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण मंत्री सह सांसद राधामोहन सिंह, गन्ना मंत्री कृष्णनंदन पासवान, पूर्व मंत्री सह नगर विधायक प्रमोद कुमार आदि ने संबोधित किया। स्वागत भाषण अटारी पटना के निदेशक अंजनी कुमार ने किया।

पिपराकोठी केविके में कार्यक्रम का उदघाटन करते केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान।

Hindustan 03-06-2025

# दो हजार किसानों के साथ निकाली तिरंगा यात्रा

तिरंगा यात्रा में शामिल शिवराज सिंह चौहाणव राधामोहन सिंह ।

■ सहारा न्यूज ब्यूरो
पीपराकोठी

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता को लेकर सेना के शौर्य व सम्मान में केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने दो हजार किसानों के साथ तिरंगा यात्रा निकाला। किसानों के कंधों पर शौर्य के प्रतीक तिरंगे के रंगों से कृषि विज्ञान केंद्र का .श्य अदभुत दिख रहा था।

सेना के शौर्य के नारों से कृषि विज्ञान केंद्र का वातावरण गूंज उठा। केंद्रीय मंत्री ने सांसद राधामोहन सिंह सहित सभी किसानों के साथ हेलीपैड से तिरंगा यात्रा आरंभ की। वहां से उत्कृष्ट पशु प्रजनन केंद्र परिसर में गोखुल योजना के तहत भगवान कृष्ण की गायों के साथ लगी प्रतिमा को देखते हुए सम्पूर्ण परिसर में तिरंगा यात्रा निकाला गया। इस दौरान कृषि मंडपम में लगे भगवान बलराम की प्रतिमा का भी अवलोकन किया। किसानों और कार्यकर्ताओं का तिरंगे के सम्मान में जोश और जुनून इस कदर था कि चिलचिलाती धूप भी बेअसर दिखी। तिरंगा यात्रा में राधामोहन सिंह, प्रमोद कुमार, सचिंद्र सिंह, पवन जसवाल, कृष्णंदन पासवान, श्यामबाबू यादव, सुनील मणि तिवारी, उपेंद्र चौधरी, रविंद्र सहनी, राजकिशोर सिंह, दुर्गा सिंह, रविंद्र सिंह, संजय जसवाल, राजेश कुमार यादव, चुमन प्रसाद, मनोरंजन सिंह सहित अन्य शामिल हुए।

**Rashtriya Sahara 03-06-2025**

# कृषि के विकास में मील का पत्थर साबित होगा विकसित कृषि संकल्प अभियान : कुलपति

**पूसा (एसएनबी)।** विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों का गांवों का दौरा लगातार जारी है। विश्वविद्यालय में स्थापित कंट्रोल रूम से मिली जानकारी के अनुसार 31 मई तक वैज्ञानिकों ने बिहार और झारखंड के 558 गांवों के किसानों से संपर्क किया है। बताते चलें कि इस अभियान में बिहार में वैज्ञानिकों की 115 टीम जबकि झारखंड में 58 टीम बनाई गई है। इस टीम में वैज्ञानिकों के साथ साथ कृषि विज्ञान केन्द्र के बिहार और झारखंड के 265 विषय-वस्तु विशेषज्ञ तथा कृषि विभाग के 889 अधिकारी भी शामिल हैं। इस दौरान उन्होंने किसानों से मुलाकात की और उनकी समस्याओं को सुन कर तत्काल उसका निराकरण किया। मिली जानकारी के अनुसार इस अभियान में 31 मई तक बिहार के 742 जनप्रतिनिधि जबकि झारखंड के 416 जनप्रतिनिधियों ने इस अभियान में शिरकत किया है।

**Rashtriya Sahara 03-06-2025**

कार्यक्रम में मौजूद कृषि वैज्ञानिक व अन्य.

# कृषि जनकल्याण चौपाल में दी योजनाओं की जानकारी

**समस्तीपुर.** कृषि जनकल्याण चौपाल का आयोजन समस्तीपुर प्रखंड के विक्रमपुर बांदे में किया गया. कार्यक्रम में कृषि से संबंधित जानकारी के साथ-साथ सरकार के द्वारा चलायी जा रही योजनाओं के बारे में बताया गया. कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र विरौली के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. आरके तिवारी, टीसीए ढोली के कृषि अभियंत्रण से डॉ. मीरा कुमारी डॉ. अजय कुमार, प्रशिक्षु प्रखंड कृषि पदाधिकारी सुष्मा कुमारी, प्रखंड तकनीकी प्रबंधक नीलू कुमारी, किसान सलाहकार राजेश कुमार सुमन उपस्थित थे. कार्यक्रम में मिट्टी जांच पर बल दिया गया. किसानों को सलाह दी गयी कि वे समुचित मात्रा में उर्वरक का उपयोग करें. स्मार्ट खेती के तहत सूक्ष्म सिंचाई, ड्रोन का उपयोग करने के बारे में जानकारी दी गयी. कार्यक्रम का संचालन कृषि समन्वयक हरिदर्शन चौधरी कर रहे थे.

प्रभात खबर
Thursday, June 5, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68409803b439c8ccadda7083

# गन्ने की नवीनतम तकनीक से अवगत हुए दर्जनों किसान

किसानों को संबोधित करते वैज्ञानिक.

**प्रतिनिधि, हसनपुर**

गन्ना उद्योग विभाग की ओर से हसनपुर चीनी मिल परिसर में कृषक कार्यशाला हुई. उपस्थित किसानों को डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के वैज्ञानिक डॉ सीके झा एवं डॉ ललिता राणा ने गन्ना की खेती के नवीनतम तकनीक, गन्ना के फसल को रोग, कीट से बचाव एवं खूंटी प्रबंधन की जानकारी दी. सहायक निदेशक ईख विकास कैलाश नाथ व ईख पदाधिकारी शिवांगी पांडेय ने गन्ना विकास मद में गन्ना उद्योग विभाग की ओर से किसानों लिए चलायी जा रही योजनाओं की जानकारी दी. लघु सिंचाई एवं जल निःसरण विभाग के वरीय अभियंता सरोज कुमार ने लघु सिंचाई विभाग से सम्बंधित समस्याओं को सुना. उनके निदान के लिए संभावित उपाय करने का आश्वासन दिया. जीएम अशोक कुमार मित्तल ने किसानों को मजदूरों की समस्या को देखते हुए गन्ना की खेती में यंत्रीकरण तकनीक को शामिल करने का सुझाव दिया. कम कृषि लागत में अधिक उपज को प्रेरित किया. जबकि शंभू प्रसाद राय ने गन्ना की खेती में यंत्रीकरण के फायदे गिनाये. मौके पर गन्ना उपाध्यक्ष सुरेंद्र पाल सिंह, प्रबंधक गन्ना अमित कुमार, एमए खान, विद्युत विभाग के जेई संजीत प्रसाद, कार्यपालक सहायक चंदन रजक, प्रमोद मणि त्रिपाठी, अतुल कुमार मिश्रा, रामकृष्ण प्रसाद, दीपक कुमार, रमण कुमार सिंह, शोभित शुक्ला, मनोज महतो, श्रवण कुमार चौबे, सतील कुमार सिंह, कृष्णा ठाकुर, सुधीर प्रसाद शाही, हरेराम प्रसाद, लक्ष्मीनाथ झा, संजीव कुमार, अवध किशोर यादव, मनोज कुमार, श्रवण महतो, राजेश कुमार आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Thursday, June 5, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68409803b439c8ccadda7083

भास्कर 5/6/25 पेज 22

# केले की बागवानी से किसान प्राप्त कर सकते हैं अधिक आमदनी

## डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ केला अनुसंधान केंद्र गोरौल के हेड ने दी जानकारी, बागवानी के लिए केंद्र किसानों को देगा मार्गदर्शन

भास्कर न्यूज़ | पूसा

बिहार के किसान केला की सघन बागवानी लगाकर अधिक से अधिक उपज और आय दोनों प्राप्त कर सकते हैं। केला की सघन बागबानी केला उत्पादन की एक नई विधि है जिसमें उत्पादन बढ़ाने को लेकर केला उत्पादक किसानों को कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा प्रति इकाई क्षेत्रफल केला के पौधों की संख्या बढ़ाने की सलाह दी जाती है। इस विधि से जहां केले का उत्पादन बढ़ जाता है वहीं लागत भी काफी कम हो जाती है। इतना ही नहीं इस विधि से केले की खेती करने पर खेतों में उर्वरक एवं पानी का समुचित एवं सर्वोत्तम उपयोग भी होता हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ केला अनुसंधान केंद्र गोरौल के हेड डॉ.संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा एवं देश के अन्य हिस्सों में किए गए शोध और प्रयोगों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि किसान रोबस्टा एवं बसराई प्रजाति के केले की खेती में पौधों की संख्या बढ़ाकर अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते है।

विवि में तैयार केले के पौधे।

### केला उत्पादक किसान सिंचाई की टपक विधि अपनाएं

उन्होंने बताया कि तमिलनाडु विश्व विद्यालय में हुए एक प्रयोग के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि किसान केले के प्रकन्दों की संख्या एक स्थान पर एक से बढ़ाकर तीन करते हुए तथा पौधों से पौधों तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी को 2x3 मीटर करके प्रति हेक्टेयर 5000 पौधा रखकर अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते है। हालांकि उन्होंने कहा की इस विधि से केले की रोपाई करने में किसानों को सामान्य विधि की तुलना में 25 प्रतिशत अधिक नेत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश जैसे उर्वरकों का इस्तेमाल करना पड़ता हैं। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा केले की सघन रोपण विधि के अंतरगत खासकर कावेन्डीश प्रजाति के समूह के केले के पौधें जो ऊतक संवर्धन द्वारा तैयार किए जाते हैं इसको जोड़ा पंक्ति पद्धति में लगाने की सलाह दी जाती है। इस विधि में केला उत्पादक किसानों को सिंचाई भी टपक विधि के द्वारा ही करने की सलाह दी जाती है। उन्होंने कहा कि इस विधि से केला लगाने पर प्रथम फायदा जहां केले कि फसल मात्र 12 महीने में ही तैयार हो जाती है। वहीं केले की उपज भी कम से कम 60 टन से अधिक किसानों को मिलती हैं।

दैनिक जागरण 5/6/25 पेज 5

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 8 जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस दौरान उत्तर बिहार के जिलों में बादल छाए रहेंगे। इस दौरान कुछ जिलों में वर्षा हो सकती है इसके बाद मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार का कहना है कि इस दौरान अधिकतम तापमान 36-40 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 25-28 डिग्री रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 05 जून | 32.0 | 24.4 |
| 06 जून | 32.5 | 24.4 |
| | दरभंगा | |
| 05 जून | 32.5 | 24.4 |
| 06 जून | 32.5 | 25.0 |
| | पटना | |
| 05 जून | 35.0 | 26.0 |
| 06 जून | 35.0 | 26.0 |

डिग्री सेल्सियस में

# केंद्रीय कृषि विवि कैंपस में महिला का पैसा छीना

**अपराध**

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया से 30 हजार नकद रुपए निकाल कर घर जा रही ग्रामीण महिला किसान से झोला छीन कर अज्ञात दो बाइक सवार युवक भाग निकले. पीड़ित महिला की सूचना पर एएसआई कुमार सुधांशु बैंक और विवि के मुख्य गेट पर लगे सीसीटीवी को खंगालने में जुटे हैं. हालांकि देर संध्या तक अज्ञात बदमाश की पहचान नहीं हो सकी थी. थानाध्यक्ष ब्रजेश कुमार सिंह ने बताया कि पीड़ित महिला दक्षिणी हरपुर पूसा पंचायत के वार्ड 8 के स्व. मुकेश राय की पत्नी रचना कुमारी है. वह दोपहर में बैंक से रुपए निकाल झोला में रखकर पैदल घर जाने के लिए चली. पलक झपकते ही पीछे से रेकी कर रहे दो युवक जिसे सीसीटीवी के आधार बैंक में भी देखा जा रहा है उसमें पैसा और मोबाइल रखा झोला को चलते बाइक से छीनकर भाग चला. खोजबीन की जा रही है. पीड़ित महिला से आवेदन लेने की प्रक्रिया जारी है.

सीसीटीवी खंगालती पूसा पुलिस.

प्रभात खबर
Friday, June 6, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6842081795cad36eb12de511

# विकसित राष्ट्र बनाने को विकसित कृषि व किसानों की जरूरत : कुलपति

**पूसा.** डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में विकसित कृषि संकल्प अभियान को सफल बनाने को लेकर कुलपति डा पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने संवाददाता सम्मेलन किया. कुलपति कहा कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए कृषि के साथ किसानों को विकसित बनाने की जरूरत है. भारत सरकार की ओर से इस तरह का अभियान रबी एवं खरीफ में चलाने का निर्णय लिया गया है. वैज्ञानिकों एवं नवीनतम तकनीक के साथ उन्नतशील बीजों का प्रभेद किसानों के दरवाजे तक पहुंचाया जा सके. किसान, विज्ञान एवं समाधान को एक साथ किसानों के द्वार पर लाकर कृषि में आने वाली सभी समस्याओं का निदान निकालना ही इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है. कुलपति ने कहा कि बिहार में वैज्ञानिकों की करीब 130 टीम गठित कर किसानों के द्वार पर भेजा जा रहा है. विवि के टीम राज्य के 13 जिले अंतर्गत आने वाली 16 कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से एक लाख 90 हजार किसानों से सीधा संवाद स्थापित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है. मृदा स्वास्थ्य कार्ड के सही उपयोग के बारे में किसानों के साथ सुझाव शेयर किया जा रहा है. किसानों से फीडबैक लेकर केंद्रीय स्तर पर किसान सारथी पोर्टल पर अपलोड किया जा रहा है. कुलपति ने जोर देते हुए कहा कि प्राकृतिक खेती समय की मांग है. रासायनिक खाद के प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति क्षीण हो चुकी है. जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम के तहत खेती करने पर कम लागत में बेहतर आमदनी लिया जा सकता है. स्वागत करते हुए वैज्ञानिक सह अभियान का नोडल अधिकारी डा रत्नेश कुमार झा ने कहा कि भारत देश को तीन जोन में विभक्त कर खरीफ मौसम के तहत विकसित कृषि संकल्प अभियान चलाया जा रहा है. इसमें 29 मई से 12 जून के अंतर्गत 4 जून 2025 तक विवि से 38 टीमें में 720 वैज्ञानिकों एवं 1756 कृषि प्रसार पदाधिकारी के टीम ने करीब करीब एक हजार से अधिक गांवों में पहुंचकर 96475 हजार किसानों के द्वार पर सीधा संवाद स्थापित किया है. जिसका फीडबैक डाटा भारत सरकार के पोर्टल पर अपलोड किया जा चुका है.

पत्रकारों का स्वागत करते डा रत्नेश कुमार झा .

प्रभात खबर
Friday, June 6, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6842081795cad36eb12de50b

**आयोजन.** विश्व पर्यावरण दिवस पर विवि परिसर के साथ और कई जगह पर किया गया पौधारोपण

# छात्र-छात्राओं को दो पेड़ लगाना अनिवार्य : वीसी

पौधारोपण करते कुलपति.

**पर्यावरण सुरक्षा**

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने विश्व पर्यावरण दिवस पर विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया. उन्होंने कहा कि दो वर्षों से विश्वविद्यालय में सभी छात्रों के लिए एक पेड़ लगाना अनिवार्य है. उस पेड़ की जियो टैगिंग कर वे उसकी देखरेख भी करते हैं. इस बार के विश्व पर्यावरण दिवस का थीम है प्लास्टिक मुक्त धरती. हम सबको मिलकर शपथ लेना चाहिए कि हम प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग नहीं करेंगे. काले प्लास्टिक की थैलियों के कारण कैंसर हो सकता है. इसके कई प्रमाण अनुसंधान में पाये गये हैं. उन्होंने कहा कि सभी लोगों को अपना झोला लेकर सब्जी लाना चाहिए. उन्होंने कहा कि एक पेड़ मां के नाम योजना के तहत इस बार भी छात्र और नये फैकल्टी सदस्य पेड़ लगा रहे हैं. डीन पीजीसीए डॉ मयंक राय ने कहा कि पेड़ की देखभाल करना भी जरूरी है. जिन लोगों ने पेड़ लगाये हैं वे उसकी देखरेख भी करते रहें. एनएसएस के संयोजक डॉ सत्यप्रकाश ने कहा कि विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत कई कार्य किये जा रहें हैं जिसमें छात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है. सहायक निदेशक छात्र कल्याण डॉ सतीश कुमार ने स्वागत भाषण दिया जबकि डॉ बलवंत ने धन्यवाद ज्ञापन किया. कार्यक्रम के दौरान निदेशक अनुसंधान एके सिंह, डीन फिशरीज डॉ पीपी श्रीवास्तव, डीन इंजीनियरिंग डॉ रामसुरेश वर्मा, डॉ महेश कुमार, ई. मनोज कुमार आदि मौजूद थे.

**प्लास्टिक प्रदूषण से रेल परिसर को मुक्त करने का संकल्पः समस्तीपुर.** विश्व पर्यावरण दिवस पर मंडल कार्यालय में डीआरएम विनय श्रीवास्तव ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छ भारत, हरित भारत की शपथ दिलायी. इसके उपरांत स्टेशन परिसर आदि जगह पर वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की गयी. इस अवसर पर अपर मंडल प्रबंधक आलोक झा सहित विभागाध्यक्षों द्वारा भी वृक्षारोपण किया गया.

**धरती को हरा-भरा करना हमारा कर्तव्यः समस्तीपुर.** विश्व पर्यावरण दिवस पर गुरुवार को मध्य विद्यालय धुरलख में पौधारोपण कर जागरूकता अभियान चलाया गया. शिक्षक चितरंजन कुमार सिन्हा ने छात्रों को पर्यावरण संरक्षण के बारे में विस्तार से बताया. उन्होंने बताया कि इस वर्ष पर्यावरण दिवस का थीम है ₹एक पेड़ मां के नाम₹. कार्यक्रम में उपस्थित सभी छात्रों को एक पेड़ मां के नाम लगाने के लिए प्रेरित किया. बताया कि इस धरती को हरा-भरा करना हमारा कर्तव्य बनता है. वर्तमान समय में पेड़ पौधों के बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है. मौके पर विद्यालय के शिक्षक पंकज कुमार पासवान, धर्मदेव पासवान, शिक्षा सेवक सुनीता कुमारी, सुशीला कुमारी, किसान सलाहकार धर्मेंद्र कुमार एवं विद्यालय के इको क्लब के सदस्य मयंक, पुष्पम, अरस्तू आदि उपस्थित थे.Samastipur News:सिंगल यूज प्लास्टिक को ना कहें : ब्रह्माकुमारी

समस्तीपुर : प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बीके तरुण ने इस वर्ष की थीम बीट प्लास्टिक पॉल्यूशन के बारे में बताते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अनुसार हर दिन दुनिया के महासागरों, नदियों और झीलों में 2000 ट्रकों के बराबर प्लास्टिक फेंका जाता है. इससे हमारा संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र बुरी तरह से प्रभावित होता है. हम खाद्य एवं पेय पदार्थों के साथ-साथ कई बार प्लास्टिक के सूक्ष्म कणों को भी अपने शरीर में प्रवेश करने का अवसर दे देते हैं. हमें अपने वर्तमान एवं भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए सिंगल यूज़ प्लास्टिक को """"""ना"""""" कहना ही होगा. सविता ने मेडिटेशन के द्वारा प्रकृति के पांचों तत्वों को पवित्रता और शांति के प्रकम्पन्न फैलाने की विधि सिखायी एवं अभ्यास कराया. उद्योगपति उमाशंकर गुप्ता, व्यवसायी सतीश चांदना ने आज के दिन पौधा रोपण का महत्व बताते हुए सभी को पौधे वितरित किये. कृष्ण ने कार्यक्रम का संचालन किया. इस अवसर पर सभी से संकल्प कराया गया कि हम आज के दिन एक पौधा लगाकर उसका संवर्धन करेंगे. कार्यक्रम में मुख्य रूप से राकेश माटा, गोपाल कृष्ण दुआ, ओम प्रकाश, राजकुमार, वरुण, राकेश, विजय, उमाशंकर, संजीव आदि उपस्थित थे.

## बच्चों ने पौधे लगा पर्यावरण बचाने का लिया संकल्प

**दलसिंहसराय.** विश्व पर्यावरण दिवस पर गुरुवार को नगर परिषद ने एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम के तहत गोलाघाट, छत्रधारी महाविद्यालय और प्रखंड कार्यालय मैदान में पौधा लगाकर योजना का शुभारंभ किया. निजी स्कूल के बच्चों ने भी इसमें भाग लिया. बच्चों ने फलदार और फूलों के पौधे लगाये. उन्होंने पेड़ को मां के नाम समर्पित कर उसे संरक्षित रखने की शपथ लिया. कार्यपालक पदाधिकारी अभिसार कुमार ने कहा कि पेड़-पौधे पर्यावरण के रक्षक हैं. स्वच्छता पदाधिकारी आयुष कुमार ने कहा कि पूरी दुनिया पर्यावरण असंतुलन से चिंतित है. वहीं अनुमंडलीय विधिक सेवा समिति की ओर से व्यवहार न्यायालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया. अवर न्यायाधीश प्रथम विवेकचंद्र वर्मा, अनुमंडल न्यायिक दंडाधिकारी काजल सोनवाला, मुंसिफ स्पर्श अग्रवाल, न्यायिक दंडाधिकारी प्रथम श्रेणी निभा आनंद, प्रशिक्षु न्यायिक पदाधिकारी अनुज कुमार, अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष प्रभात कुमार चौधरी ने वृक्षारोपण किया. आरबी कॉलेज में प्रधानाचार्य प्रो. संजय झा के मार्गदर्शन एवं कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ. सुनील कुमार सिंह के नेतृत्व में पौधारोपण किया गया.

पौधा लगाते बच्चे व अन्य.

**मोहिउद्दीननगर.** वृक्ष पृथ्वी का आभूषण है. इसे संरक्षित करने के लिए सरकारी प्रयास के अलावे जन सहभागिता की जरूरत है. पर्यावरण संरक्षण व संतुलन के लिए वर्तमान परिवेश में अधिक से अधिक पौधरोपण की आवश्यकता है. यह बातें गुरुवार प्लस टू हाई स्कूल अंदौर में मनरेगा की ओर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए एचएम संजय कुमार ने कही. अध्यक्षता मुखिया अनीता देवी ने की. संचालन कौसर नियाज ने किया. मौके जेई पंकज कुमार, अमरनाथ राय, डॉ. विजय कुमार, पप्पू कुमार, सुनील कुमार, सनी शर्मा, शिवचंद्र राय मौजूद थे.

पौधारोपण करते शिक्षक व इको क्लब के सदस्य.

कार्यक्रम में मौजूद लोग.

## पर्यावरण व नदी संरक्षण में जन भागीदारी जरूरी : डीपीओ

**समस्तीपुर.** विश्व पर्यावरण दिवस और गंगा दशहरा के अवसर पर जिला गंगा समिति जिला प्रशासन समस्तीपुर द्वारा पर्यावरण और नदियों के संरक्षण को लेकर मोहनपुर स्थित रसलपुर गंगा घाट पर जागरूकता अभियान चलाया गया. नेतृत्व जिला परियोजना पदाधिकारी नीरजेश कुमार कर रहे थे. डीपीओ द्वारा सभी श्रद्धालुओं को पर्यावरण और नदियों को स्वच्छ रखने की शपथ दिलायी गयी. विश्व पर्यावरण दिवस 2025 का थीम ₹प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करना₹ को ध्यान रखते हुए गंगा दशहरा के उपलक्ष्य पर गंगा स्नान करने आये श्रद्धालुओं के बीच कपड़े के थैले का वितरण किया गया.

पौधरोपण करते अधिकारी.

**जिला गंगा समिति द्वारा पर्यावरण दिवस पर कपड़े के थैले का किया गया वितरणः** प्लास्टिक के थैले में सिंगल यूज प्लास्टिक का बहिष्कार कर स्वच्छ भारत की ओर बढ़ने, गंगा एवं सहायक नदियों तालाबों एवं अन्य जल स्रोतों में कूड़ा कचरा एवं पॉलीथिन प्रवाहित नहीं करने की अपील की गयी. जहां गंगा में स्नान को लेकर आयें श्रद्धालु अपने घर का कूड़ा कचरा भी नदी में प्रवाहित को लेकर आये थे. मौके पर डीपीओ द्वारा नदी में कचरा नहीं डालने व कूडादान में कचरे डालने का आग्रह करते देखा गया. इसके निपटान के लिए जिला गंगा समिति के सौजन्य से दो कचरा का डब्बा भी उपलब्ध कराया गया था. पर्यावरण को लेकर नदी के तट पर पौधरोपण भी किया गया और एनएसएस के स्वयंसेवकों द्वारा चित्रकला के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया. कार्यक्रम में जिला गंगा समिति के नोडल पदाधिकारी अजय कुमार, गंगा सेवी भाई रणधीर, बिपुल कुमार सिंह, रजनीश कुमार, आदर्श, मुस्कान, अन्नू, ईशा, पिंकी के साथ-साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद थे.

प्रभात खबर
Friday, June 6, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6842081795cad36eb12de505

भास्कर 6/6/25 पेज 17

कृषि • 96475 से ज्यादा किसानों से किया सीधा संवाद, उनकी समस्या व कृषि के उलझनों का किया समाधान

# 720 कृषि वैज्ञानिक व 1756 कृषि प्रसार पदाधिकारी 992 गांवों का कर रहे दौरा

भास्कर न्यूज | पूसा

विकसित कृषि संकल्प अभियान को सफल बनाने के लिए 4 जून 2025 तक डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पुसा के अधीन 720 कृषि वैज्ञानिक एवं 1756 कृषि प्रसार पदाधिकारीयों की टीम ने 992 गांवों में पहुंचकर 96475 से ज्यादा किसानों से सीधा संवाद किया हैं। कृषक और वैज्ञानिक संवाद के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों की समस्याओं को गंभीरता से सुना तथा उनकी समस्या का समाधान भी बताया। ये बातें डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पुसा के कुलपति डॉ. पीएस पांडे ने गुरुवार को विवि में आयोजित हुए संवाददाता सम्मेलन के दौरान पत्रकारों को जानकारी देते हुई कही। उन्होंने बताया कि विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरुआत प्रधानमंत्री ने 29 मई को की थी। यह अभियान पूरे देश में 12 जून तक चलेगा। कुलपति ने बताया कि देश को समृद्ध बनाने के लिए किसानों का समृद्ध होना

पत्रकारों को संबोधित करते कुलपति।

भी बहुत जरूरी है। किसानों को और अधिक समृद्ध बनाने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री द्वारा इस विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरुआत की गई है। इस अभियान के तहत कृषि वैज्ञानिकों की टीम अलग-अलग गांव में पहुंचकर किसानों से सीधा संवाद कर रहे हैं। वैज्ञानिक किसानों की समस्या सुन उनको समाधान का तरीका भी बता रहे हैं। उन्होंने बताया कि बिहार झारखंड को मिलाकर कुल 174 वैज्ञानिक टीम बनाई गई है जिन्हें 975000 किसानों तक पहुंचकर उनसे संवाद करना है। बिहार में वैज्ञानिकों की 130 टीम काम कर रही है जिन्हें 645000 किसानों के पास पहुंचकर किसानों को कृषि के उन्नत तकनीकों को अपनाने के लिए जागरूक करना हैं। उन्होंने बताया कि डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा द्वारा 13 जिलों में 16 कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा 38 टीम बनाई गई है। जिनका लक्ष्य 190000 किसानों से संवाद करना है। इसको लेकर लगातार कार्यक्रम हो रहे हैं।

## किसानों की समस्याओं का कर रहे ऑन स्पॉट समाधान

वैज्ञानिक किसानों से फीडबैक भी ले रहे हैं ताकि किसानों की जटिल समस्याओं पर अनुसंधान किया जा सके। उन्होंने कहा कि आज के दौर में ज्यादातर किसानों की मूल समस्या यह हैं कि उन्हें समय पर बीज, उर्वरक और पानी नही मिल पा रहा हैं। अगर किसानों को खेती के दौरान ससमय ये सभी चीजें मिल जाएं तो उनकी 25 प्रतिशत से ज्यादा समस्या का समाधान स्वतः हो जाएगा। उन्होंने कहा कि विकसित कृषि संकल्प अभियान अब प्रति वर्ष चलाया जाएगा। यह अभियान साल में दो बार यानी खरीफ और रबी के सीजन में चलाया जाएगा। इस अभियान में विवि के कृषि वैज्ञानिक, कृषि शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र, विवि कर्मी के साथ-साथ कृषि विभाग के कई अधिकारी और कर्मी शामिल रहेंगे। मौके पर निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. मयंक राय, नोडल पदाधिकारी विकसित कृषि संकल्प अभियान डॉ.आरके झा, निदेशक अनुसंधान डॉ. अनिल कुमार सिंह, डॉ. कुमार राज्यवर्धन, डॉ. रामदत्त आदि थे।

## कुलपति ने अभियान के उद्देश्य को विस्तार से बताया

कुलपति डॉ. पीएस पांडे ने कहा कि इस अभियान के तहत वैज्ञानिकों की टीम किसानों को खरीफ मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलों से संबंधित आधुनिक तरीकों के बारे में भी जागरूक कर रही है। उन्होंने कहा कि किसानों को मिट्टी स्वास्थ्य कार्ड के बारे में बताया जा रहा हैं। किसानों को विभिन्न क्षेत्र के अनुसार फसलों के चयन तथा संतुलित खाद के प्रयोग के बारे में भी जानकारी दी जा रही है। किसानों को अच्छा एग्रीकल्चर प्रैक्टिस के बारे में भी बताया जा रहा है। कृषि वैज्ञानिक और कृषि विभाग से जुड़े अधिकारी किसानों को सरकार द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न योजनाओं के बारे में भी जानकारी देकर जागरूक कर रहे है। उन्होंने बताया कि हमारे वैज्ञानिक गांव में पहुँचकर किसानों को खेती करने की नई नई तकनीक, नए नए फसलों के प्रभेद, उर्वरक के प्रयोग की मात्रा आदि की जानकारी दे रहे हैं। कम से कम पानी में कैसे और कौन कौन सी फसलों का उत्पादन प्राप्त किया जा सकता हैं।

# कृषि व कृषकों का विकास ही विकसित भारत की नींव : कुलपति

संवाददाता सहयोगी, जागरण • पूसा : कृषि और कृषकों का सर्वांगीण विकास ही विकसित भारत की नींव है। यह बातें डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डा. पीएस पांडे ने गुरुवार को विकसित कृषि संकल्प अभियान के संबंध में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान कही। उन्होंने बताया कि इस महत्वाकांक्षी अभियान के तहत विश्वविद्यालय के 720 वैज्ञानिक और 1756 कृषि प्रसार पदाधिकारी की टीम ने 993 गांवों का दौरा कर अब तक लगभग 97 हजार किसानों से सीधे संवाद स्थापित किया है। कुलपति ने बताया कि इस अभियान के तहत किसानों को कृषि के नवीनतम अनुसंधान और तकनीकों से अवगत कराया जा रहा है।

किसानों से उनकी खेती से जुड़ी समस्याएं जानकर वैज्ञानिकों द्वारा मौके पर ही समाधान उपलब्ध

**डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की टीम ने 993 गावों के 97 हजार किसानों से किया सीधा संवाद**

कराया जा रहा है। वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को खरीफ मौसम में बोई जाने वाली फसलों की उन्नत किस्मों, प्रकृति अनुकूल खेती, जैविक और प्राकृतिक खेती के तरीकों तथा रासायनिक खेती से होने वाले नुकसान की जानकारी दी जा रही है। कई किसानों के पास पहले से बने मिट्टी जांच कार्ड की जांच कराने की प्रक्रिया भी समझाई जा रही है। केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं की भी जानकारी दी जा रही है। वैज्ञानिक उन्हें जलवायु अनुकूल खेती, कम पानी में अधिक उपज वाली खेती, मुर्गी पालन, बकरी पालन, मछली पालन जैसे

प्रेस को संबोधित करते कुलपति सहित अन्य पदाधिकारी • जागरण

वैकल्पिक कृषि माध्यमों से भी अवगत करा रहे हैं।

कुलपति ने यह भी बताया कि किसानों को प्रमुख रूप से बीज की समय पर उपलब्धता, सिंचाई के लिए पानी की कमी, खाद और कीट नियंत्रण जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। मौके पर प्रसार शिक्षा निदेशक डा. मयंक राय, निदेशक अनुसंधान डा. ए.के. सिंह, डा. रत्नेश झा, सूचना पदाधिकारी डा. कुमार राजवर्धन सहित अन्य उपस्थित रहे। कई अतिथियों ने भी अपनी-अपनी बातें रखीं। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों ने उन्हें ध्यान से सुना।

**Dainik Jagran 06-06-2025Ē**

# बहुवर्षीय पौधे लगाए, कपड़े के थैले का वितरण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश

संस, जागरण • मोहनपुर : विश्व पर्यावरण दिवस पर बहुवर्षीय पीपल व पाकर का पौधारोपण किया गया। रसलपुर के बालनाथ मंदिर परिसर में एक सभा हुई। अध्यक्षता श्रवण कुमार सिंह ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नमामि गंगे कार्यक्रम के पूर्व जिला संयोजक रणधीर भाई ने कहा कि पौधरोपण जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक प्लास्टिक के थैलों का बहिष्कार करना है। उन्होंने गंगा दशहरा के अवसर पर गंगा स्नान के लिए आए लोगों में कपड़े के थैले बांटे गए। विशिष्ट अतिथि मुजफ्फरपुर के पर्यावरण सेवी योगेश कुमार ने कहा, बहुवर्षीय वृक्षों को विलुप्त होने से बचाने की जरुरत है। उन्होंने गंगातट की सफाई पर जोर दिया। मौके पर अविनाश, अश्विनी, राजीव वर्मा व ब्रजेश नारायण, गंगा प्रहरी कुणाल सिंह ने भी विचारों को रखा।

विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण करते ग्रामीण • जागरण

विश्वविद्यालय परिसर में पौधा लगाते कुलपति व मौके पर अन्य • जागरण

**काले प्लास्टिक की थैलियों से कैंसरः** संस, जागरण, पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डा. पीएस पांडेय ने विवि परिसर में पौधरोपण किया। उन्होंने कहा कि दो वर्षों से विश्वविद्यालय में सभी छात्रों के लिए एक पेड़ लगाना अनिवार्य है। उस पेड़ की जियो टैगिंग कर वो उसकी देखरेख भी करते हैं। इस बार का थीम प्लास्टिक मुक्त धरती है। हम सबको मिलकर शपथ लेनी चाहिए कि हम प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग नहीं करेंगे। काले प्लास्टिक की थैलियों के कारण कैंसर हो सकता है। इसका प्रमाण अनुसंधान में पाया गया है। एक पेड़ मां के नाम के तहत छात्र और नए फैकल्टी सदस्य पेड़ लगा रहे है। डीन पीजीसीए डा. मयंक राय ने कहा कि पेड़ की देखभाल करना भी जरूरी है। एनएसएस संयोजक डा. सत्यप्रकाश ने कहा कि विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत कई कार्य किये जा रहें हैं। इसमें छात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है। सहायक निदेशक छात्र कल्याण डा. सतीश कुमार ने स्वागत भाषण दिया। डा. बलवंत ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मौके पर निदेशक अनुसंधान और एके सिंह, डीन फिशरीज डा पीपी श्रीवास्तव, डीन इंजीनियरिंग डा. राम सुरेश वर्मा, डा. महेश आदि थे।

**Dainik Jagran 06-06-2025**

## केन्द्रीय कृषि विवि में विश्व पर्यावरण दिवस पर कुलपति, कृषि वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों ने लगाये पौधे

# प्लास्टिक उपयोग पर लगे अंकुश : वीसी

**पूसा, निज संवाददाता।** डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि पृथ्वी को मां का दर्जा दिया गया है। उस मां को संरक्षित रखना भी हम सब की जिम्मेवारी है। इसमें पौधारोपण एक बेहतर विकल्प है।

उन्होंने कहा यह पर्यावरण संतुलित रखने में अहम भूमिका निभाता है। इसके लिए विवि ने एक पेड़ अपने नाम लगाने की शुरूआत की थी। इसके साथ ही अब एक पेड़ मां के नाम लगाने की जिम्मेवारी हम सब की है। यह वर्तमान के साथ आने वाली पीढ़ी को बेहतर पर्यावरण उपलब्ध कराने में अहम भूमिका निभायेगा। जरूरत है पौधा को लगाने के साथ उसके बचाव व जियो टैगिंग करने की। साथ ही प्लास्टिक के उपयोग पर अंकुश लगाने की। इसके लिए सभी को संकल्पित भाव से बाजार से सामानों के लिए कपड़े का झोला इस्तेमाल करने की जरूरत है। वह गुरुवार को विवि परिसर स्थित छात्रावास परिसर में एनएसएस के तत्वाधान में विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर आयोजित पौधारोपण समारोह के मौके पर बोल रहे थे।

उन्होंने वानिकी विभाग के अधिकारी से पूरे विवि परिसर की मैंपिंग करने व योजनाबद्ध तरीके से पौधारोपण करने पर बल दिया।

विश्व पर्यावरण दिवस पर गुरुवार को डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में पौधरोपण के बाद कुलपति समेत डीन-डायरेक्टर और विद्यार्थी।

■ **प्लास्टिक के उपयोग पर अंकुश लगाने का लिया गया संकल्प**

उन्होंने कहा कि अगले छह महीने में विवि की सभी सड़कें चकाचक हो जायेगी। इस दौरान कुलपति समेत डीन डायरेक्टर, वैज्ञानिक व छात्रों ने पौधारोपण किया। संचालन एनएसएस के विवि समन्वयक डॉ. सत्यप्रकाश ने किया। मौके पर निदेशक अनुसंधान डॉ. अनिल कुमार सिंह, डीन डॉ. मयंक राय, डॉ. पीपी श्रीवास्तव, डॉ. रामसुरेश, डॉ. सतीश कुमार सिंह, डॉ. रामदत्त, डॉ. बच्चा बाबू, डॉ विपिन कुमार, महेश कुमार, डॉ. सीके झा, डॉ. निलांजय आदि मौजूद थे।

पौधरोपण करते कृषि विश्वविद्यालय के वीसी व अन्य।

## पूसा में बीडीओ के नेतृत्व में निकली साइकिल रैली

**पूसा।** विश्व पर्यावरण दिवस पर गुरुवार को साइकिल रैली निकाली गई। इस दौरान रैली में शामिल लोग पर्यावरण संरक्षण से जुड़े नारे लगा रहे थे। रैली का नेतृत्व बीडीओ रविश कुमार रवि एवं मार्गदर्शन मनीष कुमार ने किया। साईकिल रैली प्रखंड मुख्यालय से चलकर विभिन्न मार्गो से होते हुए अस्पताल चौक पर समाप्त हुआ। समस्तीपुर साइकिल एसोसिएशन के तत्वाधान में आयोजित जागरूकता रैली के बाद वक्ताओं ने कहा कि सामूहिक प्रयास से ही पर्यावरण को संतुलित रखा जा सकता है। इसके लिए पौधारोपण के साथ उसके संरक्षण के प्रयास की जरूरत है।

Hindustan 06-06-2025

# विकसित भारत के लिए किसानों की समृद्धि जरूरी : कुलपति

**पूसा, निज संवाददाता।** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि वर्ष 2047 में विकसित भारत का सपना को साकार करने के लिए कृषि, गांव व किसानों को विकसित होना जरूरी है।

इसे विकसित करने के लिए पीएम ने वैज्ञानिकों को किसानों से मिलकर उनकी समस्याओं की जानकारी लेकर समाधान करने की जरूरत है। इसी कड़ी को सशक्त करने के लिए वर्ष में दो बार (रबी व खरीफ से पूर्व) वैज्ञानिक गांव में जाकर कृषि की नवीनतम तकनीकों के उपयोग के प्रति जागरूक करने, उन्नत प्रभेद, कृषि यांत्रिकरण आदि पर जानकारी देंगे।

**Hindustan 06-06-2025**

# पहली बार किसान के दर तक पहुंच रहे तीनो किसान, विज्ञान एवं समाधान : डॉ पीएस पांडेय

**पूसा (एसएनबी)।** डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पंचतंत्र भवन सभागार में विकसित कृषि संकल्प अभियान के विषय पर आधारित एक प्रेस कांन्फ्रेंस का आयोजन किया गया । जिसमें उपस्थित भारत सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान के पठारी क्षेत्र के रीजनल नोडल अधिकारी सह विवि के कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मंत्री के परिकल्पना विकसित भारत 2047 के लिए किसानों को विकसित होना जरूरी है। उन्होंने ने बताया कि यह पहला मौका है जिसमें किसान विज्ञान एवं समाधान तीनों गांव गांव में किसानों के द्वारा तक पहुंच रहा है। उन्होंने कहा कि इस अभियान की भुमिका कृषि के क्षेत्र में अहम साबित होगा। वही अभियान के दौरान किसानों से फसल से जुड़े फीडबैक लिया जा रहा है। जिसके आधार पर वैज्ञानिक शोध करेंगे जिसका लाभ किसानों को खेती में मिलेगा। उन्होंने बताया कि किसानों को प्राकृतिक खेती , जलवायु अनुकूल खेती एवं फसल के विविधीकरण की भी जानकारी दिया जा रहा है जिससे किसानों को लाभ होगा। उन्होंने ने बताया कि विकसित भारत के लिए विकसित किसान एवं विकसित कृषि होना जरूरी है। उन्होंने ने संबोधन में कहा कि विकसित संकल्प अभियान में किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड के महत्व, क्षेत्र विशेष के लिए खरीफ मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलों से संबंधित आधुनिक तकनीक एवं धान की सीधी बुवाई ,सरकारी योजनाओं की जानकारी सहित अन्य जानकारी दिया जा रहा है।

संबोधित करते वीसी व अन्य।

Rashtriya Sahara 06-06-2025

# विश्वविद्यालय परिसर में एक पेड़ लगायें छात्र : कुलपति

**पूसा (एसएनबी)।** डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया। इस दौरान उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि दो वर्षो से विश्वविद्यालय में सभी छात्रों के लिए एक पेड़ लगाना अनिवार्य है और वे जियो टैगिंग कर उस पेड़ की देखभाल भी करते है। इस बार के विश्व पर्यावरण दिवस का थीम है प्लास्टिक मुक्त धरती। इसको लेकर हम सबको मिलकर शपथ लेना चाहिए कि हम प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग नहीं करेंगे। उन्होंने ने कहा कि काले प्लास्टिक की थैलियों के कारण कैसर हो सकता है। इसके प्रमाण अनुसंधान में पाये गये है। उन्होंने कहा कि सभी लोगो को अपना झोला लेकर सब्जी लाना चाहिए। इस दौरान एक पेड़ मां के नाम योजना के तहत इस बार भी छात्र एवं नये फैकल्टी सदस्य पेड़ लगा रहे है। डीन पीजीसीए डॉ मयंक राय ने कहा कि पेड़ की देखभाल करना जरूरी है। जिन लोगों ने पेड़ लगाए है वे उसकी देखरेख भी करते रहें। एनएसएस के संयोजक डॉ सत्यप्रकाश ने कहा कि विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत कई कार्य किये जा रहें है जिसमें छात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है। सहायक निदेशक छात्र कल्याण डॉ सतीश कुमार ने स्वागत भाषण दिया जबकि डॉ बलवंत ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मौके पर निदेशक अनुसंधान एके सिंह, डीन फिशरीज डॉ पीपी श्रीवास्तव, डीन इंजीनियरिंग डॉक्टर राम सुरेश वर्मा, डॉ महेश कुमार, ई मनोज कुमार समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

छात्रों को प्रेरित करते वीसी व अन्य।

**Rashtriaya Sahara 06-06-2025**

# किसानों की उन्नति के लिए वैज्ञानिक करें शोध : कुलपति

नव नियुक्त फैकल्टी का वर्ग लेते कुलपति.

<u>प्रतिनिधि, पूसा</u>

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में 11 जून तक चलने वाले गुरु दक्षता कार्यक्रम के दौरान कुलपति डा पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने नव नियुक्त शिक्षकों के साथ विचार साझा किये. शिक्षकों को राष्ट्रहित में काम करने व विश्वविद्यालय को विश्वस्तरीय पहचान दिलाने के लिए प्रेरित किया. उन्होंने नव-नियुक्त शिक्षकों को किसानों की उन्नति के लिए उनकी समस्याओं को समझ कर शोध करने की सलाह दी. फैकल्टी इंडक्शन प्रोग्राम नव नियुक्त शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण प्रशिक्षण है. इससे जिम्मेदारियों को समझने में मदद मिलती है.

उन्होंने कहा कि इससे शिक्षण कौशल को बेहतर बनाने व अपनी कक्षा को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए मार्गदर्शन मिलेगा. क्षमता में विश्वास करने व तेजी से वर्ग अनुकूलित करने में मदद मिलेगी. व्यावसायिक विकासः यह शिक्षकों को उनके करियर को आगे बढ़ाने और अपनी विशेषज्ञता को विकसित करने के लिए अवसर प्रदान करता है.

प्रभात खबर
Saturday, June 7, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68433d71983fa98bd62a7fe5

# 7 जून को मुजफ्फरपुर सहित चार जिलों में होगी हल्की वर्षा

**मौसम**

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 07 से 11 जून, 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमानित अवधि के दौरान उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल छाये रहने की संभावना है. 7 जून की सुबह तक उत्तर पश्चिम बिहार के कुछ स्थानों (मुजफ्फरपुर, सारन, पश्चिमी तथा पूर्वी चम्पारण) में हल्की वर्षा होने की संभावना है. उसके बाद मौसम के शुष्क रहने की संभावना जतायी गयी है. अगले तीन दिनों में तापमान में 2-4 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है. अधिकतम तापमान 36-39 डिग्रीसेल्सियस के बीच रह सकता है. जबकि न्यूनतम तापमान 25 से 29 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है.

पूर्वानुमानित अवधि के दौरान औसतन 18 से 20 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से पूरवा हवा चलने की संभावना है, जबकि बेगूसराय जिले में पछिया हवा चल सकती है. सापेक्ष आद्रर्ता सुबह में 80 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 25 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है. आज का अधिकतम तापमान 35.2 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 0.8 डिग्री अधिक रहा, वहीं न्यूनतम तापमान 25.0 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 0.9 डिग्री कम रहा.

प्रभात खबर
Saturday, June 7, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68433d71983fa98bd62a7fe2

अगले साल के लिये भूमि का चयन और तैयारी जरूरी है. आम के बाग के लिये बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है.

प्रभात खबर
मुजफ्फरपुर, शनिवार 07.06.2025 

# आम जब पक जाये तभी करें बागों से तुड़ाई

## तुड़ाई के बाद आम को ठंडी और हवादार जगह पर रखें

डॉ अनिल कुमार सिंह, वरीय वैज्ञानिक एंड प्रधान, केवीके वैशाली

डॉ रंजू कुमारी, वरीय वैज्ञानिक, बीएयू, सबौर

डॉ रजनीश सिंह, वैज्ञानिक, केवीके सरैया

संवाददाता, मुजफ्फरपुर

आम की खेती देश में सबसे लोकप्रिय और लाभदायक फसलों में है. आम का उत्पादन बेहतर करने के लिये उचित बागवानी और देखभाल की जरूरत होती है. इसी महीने में आम की तुड़ाई की जानी है. किसानों को आम की तुड़ाई के बाद उचित भंडारण और पैकेजिंग करना चाहिये. ऐसा नहीं करने पर आम खराब हो जायेगा. इसके अलावा पेड़ों की देखभाल सही तरीके से हो, इसके लिये रोग और कीटों से बचाव के लिये छिड़काव भी जरूरी है. आम की कटाई तभी करें जब फल पूरी तरह से पक चुके हों. आमतौर पर अप्रैल से जून के बीच कटाई होती है. आम को ठंडी और हवादार जगह पर रखें ताकि लंबे समय तक उसमे ताजगी बना रहे. फलों को सड़ने से बचाने के लिए उचित पैकेजिंग का उपयोग करें. आम के फलों का उचित ढंग से ग्रेडिंग करें और अच्छी पैकेजिंग करें. फलों को ताजा बनाये रखने के लिए ठंडी जगह पर संग्रहित करें.

इस बार की फसल के बाद अगले साल के लिये भूमि का चयन और तैयारी जरूरी है. आम के बाग के लिये बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है. बागों में अचछे जल निकासी की व्यवस्था होनी चाहिये. -बाग की तैयारी के समय मिट्टी की गहरी जुताई करें और दो-तीन बार हल्की जुताईकरें. इसके बाद सिंर्चा प्रबंधन पर ध्यान देना चाहिये. आम के पेड़ों को शुरुआती वर्षों में नियमित रूप से सिंचाई की आवश्यकता होती है.ड्रिप सिंचाई प्रणाली का उपयोग करना चाहिये, जिससे पानी की बर्बादी कम हो. फूल और फल बनने के समय सिंचाई का विशेष ध्यान रखें. प्रति वर्ष पेड़ की उम्र के अनुसार गोबर की खाद, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश की मात्रा दें. बोरॉन, जिंक और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव भी करें. पेड़ों की नियमित रूप से छंटाई करें ताकि उनमें वायु और सूर्य का समुचित प्रवाह हो सके. आम के बाग की देखभाल और प्रबंधन को महीनेवार तरीके से विभाजित करना पेड़ों के अच्छे विकास और फलों की गुणवत्ता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है.

### बाग की देखभाल और प्रबंधन का महीनेवार विवरण

शुरुआती वर्षों में पौधों की शाखाओं को सही आका रदेने के लिए प्रूनिंग करें. फूल आने के बाद अनावश्यक शाखाओं को हटाएं ताकि फल अच्छा आकार ले सके. इसके अलावा कटाई-छंटाई और बाग की सफाई और रखरखाव भी जरूरी है. नियमित रूप से बाग की सफाई और खर पतवारों को हटाये. तने के आसपास की मिट्टी को सालमें एक बार गुड़ाई करके ढीला करें और मुलचिंग करें, ताकि नमी बनी रहे. आम के बाग की देखभाल में धैर्य और सतत निरीक्षण की आवश्यकता होती है. सही तकनीक और समय पर ध्यान देने से आप अपने बाग में बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकते हैं.

### महीने वार इस तरह करें देखभाल

**जुलाई**

- पेड़ों के चारों ओर खरपतवार की सफाई करें.
- आवश्यकता अनुसार जैविक खाद डालें और पेड़ों के पास जल निकासी का प्रबंध करें.

**अगस्त**

- पेड़ों को जैविक खाद दें, जैसे गोबर की खाद और नीम खली
- रोगों के बचाव के लिए फफूंदनाशक का छिड़काव करें.
- नई शाखाओं के विकास को प्रोत्साहित करने के लिये हल्की छंटाई करें

**सितंबर**

- पेड़ों के चारों ओर जमीन की जुताई करें और मल्चिंग करें ताकि नमी बनी रहे
- बारिश के बाद पेड़ों को अधिक पानी न दें
- रोग और कीटों की निगरानी करें और समय पर नियंत्रण करें

**अक्टूबर**

- पेड़ों में उर्वरकों का उपयोग करें, जैसे नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश
- पेड़ों की सफाई करें और उन पर जैविक कीटनाशकों का छिड़काव करें
- कलम लगाने के लिए यह अच्छा समय होताहै

**नवंबर**

- पेड़ों की नियमित सिंचाई करें
- रोग नियंत्रण के लिये कॉपर ऑक्सीक्लोराइड और कीटनाशकों का छिड़काव करें
- कलम लगाने का कार्य भी किया जासकता है

**दिसंबर**

- पेड़ों की छंटाई करें और पुरानी या सूखी शाखाओं को हटा दें
- नये पौधों के लिए गड्ढे तैयार करें और उर्वरक डालें
- कीट और रोगों के नियंत्रण के लिये फफूंदनाशक और कीटनाशकों का छिड़काव करें

**जनवरी**

- पेड़ों की हल्की छंटाई करें, जिससे हवा और धूप का प्रवाह बेहतर हो सके
- पेड़ों में रोग नियंत्रण के लिए फफूंदनाशक (कॉपर ऑक्सीक्लोराइड) का छिड़काव करें
- नयी कलम या ग्राफ्टेड पौधों की रोपाई की जा सकती है

**फरवरी**

- पेड़ों में फूल निकलने की शुरुआत होती है. फूलों की देखभाल के लिये पेड़ों पर सूक्ष्म पोषक तत्वों (जिंक, बोरॉन) का छिड़काव करें.
- पानी की आवश्यकता के अनुसार हल्की सिंचाई करें

**मार्च**

- आम के बाग में फूलों की संख्या बढ़ाने के लिए नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश का छिड़काव करें
- कीटनियंत्रण के लिये नीम का तेल या अन्य जैविक कीटनाशकों का छिड़काव करें
- सिंचाई बंद कर दें ताकि फलों के सेट होने में समस्या नहीं हो

**अप्रैल**

- फल बनना शुरू होता है, इसलिए पानी की कमी को पूरा करने के लिये सिंचाई की जाये
- फल मक्खी और अन्य कीटों से बचाने के लिए फलों के आसपास सुरक्षा जाल लगाएं

### सूक्ष्म पोषकतत्वों का छिड़काव जारी रखें

**मार्च**

- फलों का विकास तेजी से होता है. पोटाश और सूक्ष्म पोषकतत्वों का छिड़काव करें ताकि फलों का आकार और गुणवत्ता बेहतर हो.
- सिंचाई करते रहें और फलों को सूर्य की सीधी किरणों से बचाएं
- समय-समय पर कीटनाशकों का छिड़काव करें

प्रभात खबर
Saturday, June 7, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68433d71983fa98bd62a7fd6

पूर्वानुमान • अधिकतम तापमान 36-39 डिग्री व न्यूनतम तापमान 25-29 डिग्री के बीच रहने का अनुमान

# 11 तक बादल छाए रहने के आसार, तापमान में होगी वृद्धि

भास्कर 7/6/25 पेज 15

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में 11 जून तक आसमान में हल्के बादल छाए रहने की संभावना है। 7 जून के सुबह तक उत्तर पश्चिम बिहार के कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा होने की सम्भावना है। इसके बाद मौसम के शुष्क बने रहने की संभावना जताई गई है। अगले तीन दिनों में तापमान में 2-4 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है। अधिकतम तापमान 36-39 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 25-29 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। पूर्वानुमानित अवधि के दौरान औसतन 18 से 20 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से पुरवा हवा चलने की संभावना है जबकि बेगूसराय जिले में पछिया हवा चल सकती है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 25 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है। मध्यम अवधि वाले धान की किस्मों जैसे संतोष, सीता, सरोज, राजश्री, प्रभात, राजेन्द्र सुवासनी, राजेन्द्र कस्तुरी, राजेन्द्र भगवती, कामिनी और सुगंधा को इस समय बीजस्थली में बोया जाना उपयुक्त है। एक हेक्टेयर क्षेत्र में रोपाई के लिए लगभग 800 से 1000 वर्ग मीटर में नर्सरी तैयार करें। क्यारी की चौड़ाई 1.25 से 1.5 मीटर रखें तथा लंबाई सुविधा अनुसार निर्धारित करें। बीजों को गिराने से पूर्व बविस्टिन 2.0 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित अवश्य करें।

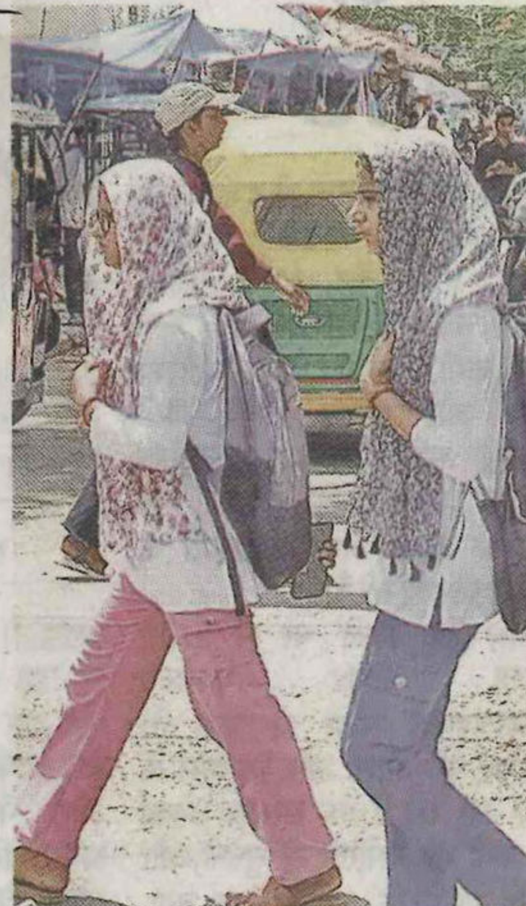

धूप से बचाव कर जाती छात्राएं।

## धान का बिचड़ा के लिए 10 जून तक लगाएं नर्सरी

जिन किसानों के पास सिंचाई की समुचित सुविधा उपलब्ध है और जो लंबी अवधि वाले धान की खेती करना चाहते हैं, वे राजश्री, राजेन्द्र मंसुरी, राजेन्द्र स्वेता, किशोरी, स्वर्णा, स्वर्णा सब-1, वीपीटी-5204 तथा सत्यम जैसी किस्मों की बुवाई 10 जून तक बीजस्थली में करें। जितने क्षेत्र में धान की रोपाई प्रस्तावित हो, उसका लगभग दसवां हिस्सा नर्सरी के लिए प्रयोग करें। बीजों को गिराने से पूर्व 1.5 ग्राम बविस्टिन प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार अवश्य करें। फलवाली सब्जियों जैसे भिंडी एवं बोरा में नत्रजन का उपरिवेशन करें। साथ ही कीट नियंत्रण हेतु मैलाथियान 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर फल तुड़ाई के बाद 7 से 10 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें। लत्तर वर्गीय सब्जियों में यदि चूर्णिल असिता रोग का प्रकोप दिखाई दे, तो केराथेन 1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी या 25 किलोग्राम सल्फर पाउडर प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव करें। लीची की तुड़ाई के पश्चात उसके बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ वृक्ष 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट या गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट आदि का इस्तेमाल करें।

*उत्तर बिहार के जिलों में 11 जून तक आसमान में हल्के बादल छाए रहने की संभावना है। - डॉ. ए. सत्तार, नोडल पदाधिकारी, मौसम विभाग, पूसा*

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 11 जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस दौरान उत्तर बिहार के जिलों में दो-तीन दिनों तक बगहा एवं इसके आसपास के इलाकों में वर्षा की संभावना है। विभाग के अनुसार जून के दूसरे सप्ताह में मानसून के सक्रिय होने की संभावना है। आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस दौरान कुछ जिलों में वर्षा हो सकती है इसके बाद आमतौर पर मौसम शुष्क रहने की संभावना है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 07 जून | 35.0 | 26.0 |
| 08 जून | 35.5 | 26.0 |
| | दरभंगा | |
| 07 जून | 35.5 | 26.0 |
| 08 जून | 35.5 | 26.5 |
| | पटना | |
| 07 जून | 37.0 | 28.0 |
| 08 जून | 37.0 | 28.0 |

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण 7/6/25 पेज 6

# उत्तर बिहार में हल्की बारिश की संभावना, तापमान में अभी बढ़ोतरी के आसार

संस, जागरण • पूसा : उत्तर बिहार में आने वाले दिनों में मौसम में बदलाव होने की संभावना हैं। डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम वैज्ञानिकों डा. ए सत्तार के अनुसार शनिवार की सुबह तक उत्तर पश्चिम बिहार के कुछ क्षेत्रों जिनमें मुजफ्फरपुर, सारण, पश्चिमी चंपारण और पूर्वी चंपारण में हल्की बारिश होने की संभावना है। इसके बाद मौसम शुष्क बने रहने की संभावना जताई गई है। मौसम वैज्ञानिक ने बताया कि आगामी चार दिनों के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार तीन दिनों में अधिकतम तापमान में 2 से 4 डिग्री सेल्सियस तक की बढ़ोतरी हो सकती है। इस दौरान अधिकतम तापमान 36 से 39 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 25 से 29 डिग्री

- मुजफ्फरपुर, सारण, पश्चिमी चंपारण और पूर्वी चंपारण में बारिश होने की जताई जा रही संभावना
- अगले तीन दिनों में अधिकतम तापमान में दो से चार डिग्री सेल्सियस तक की हो सकती वृद्धि

सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। इस अवधि के दौरान पुरवा हवा 18 से 20 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से चल सकती है, जबकि बेगूसराय जिले में पछिया हवा चलने की संभावना है। वहीं कृषि वैज्ञानिक डा. गुलाब ने किसानों से कहा है कि वे इस मौसम को देखते हुए मध्यम अवधि वाली धान की किस्मों की बुआई आरंभ कर सकते हैं। इनमें संतोष, सीता, सरोज, राजश्री, प्रभात, राजेंद्र सुवासनी, राजेंद्र कस्तुरी, राजेंद्र भगवती, कामिनी और सुगंधा जैसी किस्मों को बीजस्थली में बोया जाना उपयुक्त माना गया है। एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए लगभग 800 से 1000 वर्ग मीटर में नर्सरी की तैयारी करने को कहा है। नर्सरी की क्यारी की चौड़ाई 1.25 से 1.5 मीटर तथा लंबाई सुविधा अनुसार रखी जाए। बीजों को बोने से पहले बविस्टिन नामक फफूंदनाशक से 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करने की सिफारिश की गई है। कृषि वैज्ञानिक ने किसानों से अनुरोध किया है कि वे मौसम की स्थिति के अनुसार अपनी खेती की योजना बनाएं ताकि फसल का बेहतर उत्पादन सुनिश्चित किया जा सके।

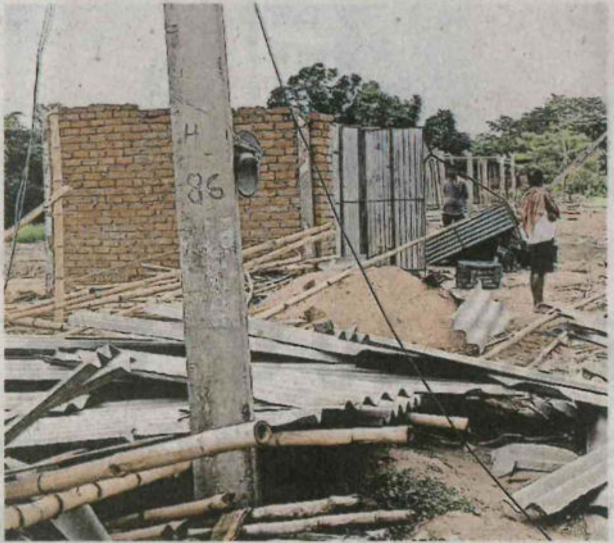


तेज उठी आंधी, तूफान और बारिश के बाद मकान के उड़े छप्पड़ • जागरण

## तेज उठी आंधी और तूफान से परसा के कई घर हुए क्षतिग्रस्त

संस, जागरण • शिवाजीनगर : परसा पंचायत के परसा गांव में शुक्रवार को आई तेज आंधी, तूफान और बारिश के कारण भारी नुकसान हुआ। वार्ड संख्या एक में कई घरों को नुकसान हुआ। प्राप्त जानकारी के अनुसार ब्रह्मानंद सागर, रामानंद सागर, ज्वाला प्रसाद सिंह, कपिल कुमार, नीरज कुमार, विनय कुमार, प्रशांत कुमार और अनिल कुमार के मकान, जो ईंट और एस्बेस्टस से बने थे, तूफान के प्रभाव से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। तेज हवा में सभी मकानों की छतें उड़ गईं, कई मकानों की दीवारें भी ढह गईं। इसके साथ ही घर के अंदर रखे सामान भी नष्ट हो गए।

घटना की जानकारी मिलते ही परसा पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि राम

Dainik Jagran 10-6-2025

# पूर्वानुमान: कुछ जिलों में हल्की बारिश के आसार

- मौसम शुष्क रहने की भी संभावना है
- अगले तीन दिनों में बढ़ सकता है तापमान

पूसा, निसं। उत्तर बिहार के जिलों में अगले चार दिनों तक आसमान में हल्के बादल रह सकते हैं। इस दौरान 7 जून की सुबह तक उत्तर पश्चिम बिहार के कुछ स्थानों (मुजफ्फरपुर, सारण, पूर्वी व पश्चिमी चम्पारण) में हल्की वर्षा होने का अनुमान है।

इसके बाद मौसम शुष्क रहने की संभावना मौसम विभाग ने जताई है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने शुक्रवार को 11 जून तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। इसके अनुसार इस अवधि में औसतन 18 से 20 किमी. प्रति घंटे की गति से पुरवा हवा चल सकती है। इस दौरान बेगूसराय जिले में पछुआ हवा चल सकती है। पूर्वानुमान की अवधि में सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 85 एवं दोपहर में 25 से 35 प्रतिशत रह सकता है। मौसम विभाग के अनुसार अगले तीन दिनों में तापमान में 2 से 4 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हो सकती है। इस दौरान अधिकतम तापमान 36 से 39 डिग्री एवं न्यूनतम 25 से 29 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने का अनुमान है।

Hindustan 07-06-2025

हिन्दुस्तान 9/6/25 पेज-2

# विवि ने धान की खेती के लिए जारी की गाइडलाइन

पूसा, निसं। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि की ओर से किसानों के लिए धान की खेती को लेकर समसामयिक सलाह जारी की गई है। विवि के वैज्ञानिकों ने कुछ ऐसा प्रभेद का विकास किया है। जो कम समय में तैयार होने के साथ अच्दी उपज भी देता है।

विवि के धान वैज्ञानिक डॉ.नीलांजय ने बताया कि समस्तीपुर और आस-पास के जिलों के लिए विवि से विकसित राजेंद्र भगवती, राजेन्द्र सरस्वती, राजेन्द्र नीलम और प्रभात किस्में सबसे उपयुक्त हैं। वैज्ञानिक के अनुसार राजेंद्र नीलम 110 दिन में तैयार होती है। इसमें 35 से 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की उपज संभव है। राजेंद्र नीलम का चूड़ा काफी प्रचलित है। राजेंद्र भगवती और राजेंद्र सरस्वती प्रभेद से तैयार चावल खाने में काफी स्वादिष्ट होने के साथ हल्का सुगंधित होता है। यह किस्म 110 से 115 दिन में पक कर तैयार होती है। बाजार में अच्छी मांग रहती।

कार्यक्रम | विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि, पूसा एवं इससे जुड़े कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के वैज्ञानिकों की टीम ने गांवों में भ्रमण किया

# खेतों में पहुंचकर वैज्ञानिक दे रहे कृषि की तकनीकी जानकारी

**पूसा, निज संवाददाता।** विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि, पूसा एवं इससे जुड़े कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के वैज्ञानिकों की संयुक्त टीम गांव गांव पहुंचकर किसानों को कृषि की बारिकियों से रूबरू कराने में शुक्रवार को भी जुटी रही। इस दौरान केवीके प्रमुख डॉ. आरके तिवारी के नेतृत्व में वैज्ञानिकों की टीम पूसा के गांव में भ्रमण किया। इस क्रम में किसानों को कृषि की नवीनतम तकनीक, प्रभेद समेत वर्तमान समय की जरूरतों पर विस्तार से चर्चा की। वैज्ञानिकों ने बताया कि धान की उच्च उत्पादन क्षमता वाली प्रजाति, धान की सीधी बुआई में खरपतवार की समस्या, मक्का में लगने वाला उकठा, मूंग में पीला मोजेक वायरस, मूंग की तुड़ाई में लागत की कमी किये जाने, पपीता का जड़ एवं पाद विगलन, परवल में लगने वाला जड़ गांठ सूत्रकृमि, परवल का फल बेधक कीट, आम का उल्टा सूखा रोग, आम का लाल पट्टी कीट, लीची फल फटना, फसलों को नीलगाय से नुकसान आदि समस्याओं का निदान किसानों से साझा किया गया।

शुक्रवार को किसान के खेत में फसलों की जानकारी देते केवीके वैज्ञानिक।

## जन कृषि कल्याण किसान चौपाल का हुआ आयोजन

**खानपुर, निज संवाददाता।** प्रखंड में जन कृषि कल्याण चौपाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रखंड के मसीना, पुरुषोत्तमपुर अन्नू, अमसौर, भोरेजयराम पुस्तकालय भवन व बछौली में शनिवार को आयोजित किसान चौपाल का उद्घाटन जिला पार्षद प्रियंका कुमारी ने किया।

प्रखंड उद्यान अधिकारी सह एटीएम सुशील कुमार कुशवाहा ने खरीफ संचालित ढैंचा, मक्का, अरहर, धान बीज वितरण एवं ईकेवाईसी, फार्मर रजिस्ट्रेशन, मृदा जांच, पौधा संरक्षण, उद्यान बागवानी, आत्मा योजना आदि की जानकारी किसानों को दी। मौके पर खानपुर प्रखंड बीटीएम सूरज कुमार सहनी, शशि भूषण कुमार, कृषि समन्वयक रविंद्र कुमार, किसान सलाहकार अवनीश कुमार दीक्षित, पवन कुमार राय, रवि कुमार रवि, मुखिया पति ललित सहनी आदि मौजूद थे।

# समस्तीपुर सहित अधिकांश जिलों में आसमान में हल्के बादलों के बीच मौसम रहेगा शुष्क, बढ़ेगा तापमान

**समस्तीपुर।** अगामी 11 जून तक अधिकांश जिलों में आसमान में हल्के बादलों संग सूरज की लुका छिपी का खेल चल सकता है। कुछ जिलों में बारिश की संभावना है। इस अवधि में बढे तापमान और पूरवा हवा के कारण उमस भरी गर्मी से परेशानी बढ सकती है। जिले के पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के ग्रामीण .षि मौसम सेवा, एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा अगामी 11 जून, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमानित अवधि के दौरान उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल छाए रहने की संभावना है। 7 जून के सुबह तक उत्तर पश्चिम बिहार के कुछ स्थानों यथा मुजफ्फरपुर, सारण, पश्चिमी तथा पूर्वी चम्पारण जिलों में हल्की वर्षा होने की सम्भावना है। इसके बाद मौसम के शुष्क बने रहने की संभावना जताई गई है।

Rashtriya Sahara 07-06-2025

# औषधीय मशरूम में कैंसररोधी तत्व मौजूद, उठाएं लाभ : डा दयाराम

**प्रतिनिधि,पूसा**

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित एडवांस सेंटर फॉर मशरूम रिसर्च से सेवानिवृत वैज्ञानिक सह मशरूम विशेषज्ञ डॉ दयाराम ने बताया कि औषधीय मशरूम में कैंसररोधी तत्व पाये जाते हैं. कई अध्ययनों से पता चलता है कि कुछ प्रकार के मशरूम में कैंसर विरोधी गुण होते हैं, जो कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने और कैंसर की वृद्धि को रोकने में मदद कर सकते हैं. कुछ मशरूम जिनमें कैंसररोधी तत्व पाये जाते हैं. इसमें मुख्य रूप से रेशी मशरूम में बीटा-ग्लूकन नामक एक यौगिक होता है, जो कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने में मदद करता है. सीटाके मशरूम में लेंटिनान नामक एक यौगिक होता है, जो कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने में मदद करता है. मैतेक मशरूम में बीटा-ग्लूकन और अन्य यौगिक होते हैं जो कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने में मदद करते हैं. यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि जबकि औषधीय मशरूम में कैंसररोधी तत्व हो सकते हैं, वे कैंसर के इलाज के लिए एकमात्र समाधान नहीं हैं. कैंसर के इलाज के लिए हमेशा एक योग्य चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए. औषधीय मशरूम की खेती के लिए बनाए गए फार्म की एक सामान्य बनावट ऐसी हो सकती है जहां मशरूम को एक विशेष प्रकार के कंपोस्ट में उगाया जा रहा है, जिसे किसी बंद कमरे या ग्रीनहाउस में नियंत्रित वातावरण में रखा गया है. मशरूम को उगाने के लिए विशेष प्रकार का कंपोस्ट तैयार किया जाता है, जिसमें भूसा, गेहूं का चापड़, यूरिया और जिप्सम शामिल होते हैं. मशरूम की खेती के लिए नियंत्रित तापमान और नमी की आवश्यकता होती है, इसलिए इसे ग्रीनहाउस या बंद कमरे में उगाया जाता है.

प्रभात खबर
Sunday, June 8, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68448dc1333d1a61ad2101a5

# कम समय में धान की उपज के प्रभेद चयन की जरूरत : डा निलांजय

नर्सरी तैयार करते किसान.

**प्रतिनिधि, पूसा**

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा की तरफ से किसानों के लिए धान की खेती को लेकर सलाह जारी किया गया है. विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने कुछ ऐसे प्रभेद का विकास किया है जो कम समय में तैयार हो जाता है. उपज भी अच्छी होती है. विश्वविद्यालय के धान वैज्ञानिक निलांजय ने बताया कि समस्तीपुर और आसपास के जिलों के लिए विश्वविद्यालय द्वारा विकसित राजेंद्र भगवती, राजेन्द्र सरस्वती, राजेन्द्र नीलम और प्रभात किस्में सबसे उपयुक्त हैं. राजेंद्र नीलम किस्म 110 दिन में तैयार होती है. इसमें 35 से 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की उपज संभव है. राजेंद्र नीलम का चूरा काफी प्रचलित है. राजेंद्र भगवती और राजेंद्र सरस्वती प्रभेद से तैयार चावल खाने में काफी स्वादिष्ट लगता है और हल्का सुगंधित होता है. यह किस्म 110 से 115 दिन में पक कर तैयार होती है. दोनों प्रभेद कम पानी और कम लागत में बेहतर उत्पादन देते हैं. डॉ निलांजय के मुताबिक यह सभी किस्में कम पानी और कम खर्चे में अच्छी उपज देने वाली सक्षम किस्म है. खास बात यह है कि इन्हें सीधी बुवाई के साथ-साथ ट्रांसप्लांट करके भी लगाया जा सकता है. बुवाई का सही समय वैज्ञानिक के अनुसार यदि किसान भाई रोपने के लिए नर्सरी बनाना चाहते हैं तो उपरोक्त किस्म का 10 जून से 25 जून के बीच बिचड़ा गिरा सकते हैं. इसके 22 से 25 दिन बाद बिचडा को उखाड़ कर खेत में रोप सकते हैं. वहीं यदि कोई किसान सीधी बुवाई करना चाहते हैं तो 20 जून तक कर सकते हैं. कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान भाई गुणवत्तापूर्ण चावल के लिए विश्वविद्यालय की किस्म राजेंद्र कस्तूरी राजेंद्र, सुभाषिनी, राजेंद्र श्वेता सुगंध आदि लगा सकते हैं.

प्रभात खबर
Sunday, June 8, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68448dc1333d1a61ad21019f

भास्कर 8/6/25 पेज 17

कृषि : पूसा विवि की ओर से विकसित राजेंद्र भगवती, राजेन्द्र सरस्वती, राजेन्द्र नीलम व प्रभात जैसी धान की किस्में काफी उपयुक्त

# कम समय व पानी वाले प्रभेदों का करें चयन, लागत होगी कम

भास्कर न्यूज|पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा की तरफ से किसानों के लिए धान की खेती को लेकर महत्वपूर्ण सलाह जारी किए गए है। विगत कुछ वर्षों में विश्वविद्यालय के धान से जुड़े वैज्ञानिकों ने कुछ ऐसे प्रभेद को विकसित किया है जो कम समय में तैयार हो जाता है और उपज भी अच्छी देती है। विश्वविद्यालय के धान वैज्ञानिक डॉ. नीलांजय ने बताया कि समस्तीपुर और आस पास के जिलों के लिए विश्वविद्यालय द्वारा विकसित राजेंद्र भगवती, राजेन्द्र सरस्वती, राजेंद्र नीलम और प्रभात जैसी धान की किस्में सबसे उपयुक्त किस्में हैं। राजेंद्र नीलम धान की किस्म 110 दिन में पककर तैयार होती है। इसकी औसत उपज 35 से 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। राजेंद्र नीलम एवं राजेंद्र भगवती का चूड़ा काफी प्रचलित है। जबकि राजेंद्र भगवती और राजेंद्र सरस्वती किस्म से तैयार चावल खाने में काफी स्वादिष्ट होता हैं। धान कि ये सभी किस्में लगभग 110 से 115 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इन सभी धान के किस्मों की मांग भी बाजार में अच्छी रहती है। किसान धान के इन किस्मों को लगाकर कम समय, कम पानी और कम लागत में बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। डॉ. नीलांजय के मुताबिक ये सभी किस्में कम पानी और कम खर्चे में अच्छी उपज देने में सक्षम है। खास बात यह है कि इस किस्म को सीधी बुआई के साथ-साथ ट्रांसप्लांट रोपनी के तहत भी लगाया जा सकता है।

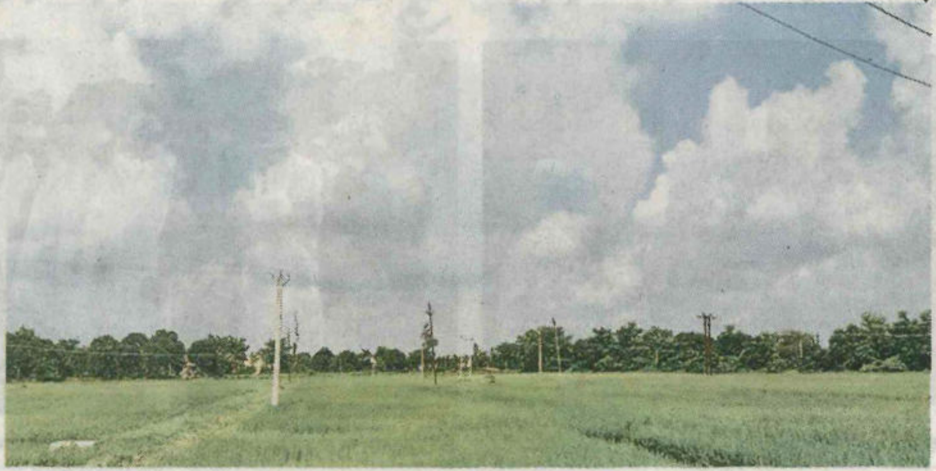

पूसा विवि प्रक्षेत्र में गत वर्ष लगाई गई धान की किस्म सुभाषिनी, नीलम व स्वेता।

## 10 से 25 जून तक बुआई का सही समय

धान वैज्ञानिक के अनुसार यदि किसान भाई रोपनी के लिए नर्सरी लगाना चाहते हैं तो उपरोक्त किस्मों के बीज का बिचरा 10 जून से 25 जून के बीच गिरा सकते हैं। इसके बाद 22 से 25 दिन बाद बिचड़ा को उखाड़कर खेत में रोपाई कर सकते हैं। यदि कोई किसान सीधी बुआई करना चाहता है तो वह 20 जून तक कर सकता है। उपरोक्त वर्णित किस्में सीधी बुआई के लिए भी उपयुक्त हैं। वर्तमान में अगले चार-पांच दिनों तक वर्षा होने की बहुत ही कम संभावना है। हालांकि मानसून के समय से आने की संभावना है और जून माह में मानसून सामान्य रहेगा। धान वैज्ञानिक ने बताया की लंबी अवधि वाले धान की किस्में जैसे राजश्री, राजेंद्र मसूरी 1, स्वर्णा, बीपीटी 5204 का बिचड़ा गिराने के लिए यह समय उपयुक्त है। वैसे किसान जिनके खेतों के पास सिंचाई की सुविधा हो वे तत्काल लंबी अवधि वाले धान के किस्मों का बिचड़ा गिरा सकते हैं। डॉ. नीलांजय ने बताया कि किसान भाई गुणवत्तापूर्ण चावल के लिए विश्वविद्यालय की किस्म राजेंद्र कस्तूरी, राजेंद्र सुभाषिनी, राजेंद्र श्वेता, सुगंधा आदि धान के किस्मों को लगा सकते हैं। ये किस्में मध्यम अवधि की किस्में है। इन किस्म को आजमाना निश्चित रूप से किसानों के लिए फायदे का सौदा साबित होगा।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 11 जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस दौरान उत्तर बिहार के जिलों में दो-तीन दिनों तक बगहा एवं इसके आसपास के इलाकों में वर्षा की संभावना है। विभाग के अनुसार जून के दूसरे सप्ताह में मानसून के सक्रिय होने की संभावना है। आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस दौरान कुछ जिलों में वर्षा हो सकती है इसके बाद आमतौर पर मौसम शुष्क रहने की संभावना है।

Dainik Jagran 08-6-2025

भास्कर 9/6/25 पेज 16

कृषि • उपचारित व गुणवत्ता वाले बीजों की बुवाई कर किसान अच्छे अंकुरण के साथ बेहतर पैदावार ले सकते हैं

# बुवाई पूर्व बीज के अंकुरण प्रतिशत की जांच जरूरी

भास्कर न्यूज़ | पूसा

फसल उत्पादन के दौरान फसलों को नुकसान से बचाने के लिए किसानों को विभिन्न फसलों की बुवाई से पूर्व संबंधित बीज के अंकुरण प्रतिशत को जानना अति आवश्यक होता हैं। अच्छे उत्पादन के लिए जहां बीज का शुद्ध होना आवश्यक होता है। वहीं बीज का अंकुरण प्रतिशत भी मानक स्तर से कम नहीं होना चाहिए। उपचारित व उच्च गुणवत्ता वाले बीजों की बुआई कर किसान अच्छे अंकुरण के साथ-साथ फसलों से बेहतर पैदावार भी प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, प्रोफेसर एवं प्रमुख फल रोग विशेषज्ञ डॉ. एस.के. सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि बीज के अंकुरण प्रक्रिया के दौरान धीरे धीरे बीज से पौधों का निकलना शुरू हो जाता है। यह प्रक्रिया मुख्य रूप से तब होता है जब बीज को आवश्यक पदार्थ और वातावरण दोनों मिलता है। उन्होंने बताया

पेपर विधि से की जा रही अंकुरण प्रतिशत की जांच ।

कि एक अनुमान के मुताबिक देश में हर साल कम से कम 20 से 25 प्रतिशत किसान नए और हाइब्रिड तरह के बीजों की खरीदारी कर विभिन्न फसलों की बुआई करते हैं। जबकि 75 से 80 प्रतिशत किसान ऐसे है जो घर में रखे बीजों का ही प्रयोग बुआई के लिए करते है। उन्होंने बताया कि किसानों को शंकर बीज से उत्पन्न दानों का प्रयोग कभी भी बीजों के लिए नही करना चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि किसानों को बुआई से पूर्व यह पता चल जाएं की उनके बीज का अंकुरण प्रतिशत क्या है तो वे उसी के अनुसार बीज की मात्रा निर्धारित कर सकते है।

## किसान पेपर विधि से ऐसे करें बीज का अंकुरण परीक्षण, मिलेगा अधिक लाभ

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि पेपर से बीज अंकुरण परीक्षण की प्रक्रिया एक प्रभावी और सरल विधि है। इस तकनीक में चार परत वाले एक पेपर को 3 से 4 बार मोड़ने के बाद बिना छंटाई किए एक अनुम ानित गिनती के साथ बीजों को पेपर पर पंक्त बिद्ध कर रख दिया जाता है। पेपर पर बीज रखने के बाद पेपर के दोनों कोनों को धागे की मदद से बंद कर दिया जाता है तथा पेपर को पानी से भींगा दिया जाता है। इसके बाद भींगे पेपर को एक पॉल थीन बैग में रखकर घर के अंदर लटका दिया जाता हैं। 4 से 5 दिनों बाद पेपर को खोलकर अंकुरों की संख्या की गणना की जाती हैं और बीज के अंकुरण का प्रतिशत निकाल लिया जाता हैं। हालांकि उन्होंने बताया कि इस विधि का उपयोग धान के लिए नहीं किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि इस तकनीक के अलावे किसान एक अन्य तकनीक का इस्तेमाल भी कर सकते है। इस तकनीक में बीज की संख्या को गिनकर गमले में बुआई कर दिया जाता है। 4 से 5 दिन बाद बीजों से निकलने वाले अंकुर को गिनकर किसान इसका प्रतिशत निकाल सकते है।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 11 जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस दौरान उत्तर बिहार के जिलों में दो-तीन दिनों तक बगहा एवं इसके आसपास के इलाकों में वर्षा की संभावना है। विभाग के अनुसार जून के दूसरे सप्ताह में मानसून के सक्रिय होने की संभावना है। आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस दौरान कुछ जिलों में वर्षा हो सकती है इसके बाद आमतौर पर मौसम शुष्क रहने की संभावना है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 09 जून | 39.0 | 29.0 |
| 10 जून | 39.5 | 29.0 |
| दरभंगा | | |
| 09 जून | 39.5 | 29.0 |
| 10 जून | 39.5 | 29.5 |
| पटना | | |
| 09 जून | 40.5 | 30.0 |
| 10 जून | 40.5 | 30.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 10-6-2025

राष्ट्रीय सहारा -9,06,2025 P-5

# वैज्ञानिकों ने किसानों को नवीनतम तकनीकों से खेती के तरीके सिखाये

**सहारा न्यूज ब्यूरो**

**पीपराकोठी।**

विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत स्थानीय कृषि विज्ञान केंद्र, पंडित दीनदयाल उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय एवं महात्मा गाँधी समेकित कृषि अनुसंधान संस्थान के किसानो को बिज उपचार, धान की उच्च उत्पादकता क्षमता वाली प्रजाति, निचली जमीन मे लगने वाले धान के किसमो, मक्का की सीधी बुआई में खरपतवार समस्या, मक्का में लगने वाला तना छेदक, पीला मोजेक वायरस, पपीता की जड़ एवं पात विघटन, परवल की खेती एंव इसमें लगने

किसानों को जानकारी देते कृषि वैज्ञानिक।

वैज्ञानिकों की संयुक्त टीम गांव-गांव पहुंचकर किसानों को कृषि की बारीकियों से रूबरू कराने में जुटी है। यह कार्यक्रम कृषि विज्ञान केंद्र के वरीय वैज्ञानिक एंव प्रधान डॉ. अरविन्द कुमार सिंह के नेतृत्व में किया गया।जिसमे वैज्ञानिकों की दो टीम मधुबन एंव केसिरया प्रखण्ड के छह गांवो सवांगिया, नारगिया माधोपुर, गढ़वा, बथना, सरेया बहदुरहा डुमरीया एवं सेमुआपुर मे भ्रमण किया। इस कार्यक्रम में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों से खेती करना, फसलों संबंधी समस्याएं एवं उनके विस्तार संबंधित कई जानकारियां दी गई। कार्यक्रम के दौरान डॉ. रामबाबु शर्मा, सहायक प्रधानाध्यापक पंडित दीनदयाल उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय के द्वारा वाला जड़ गाठ सूक्ष्मजीव, आम में फल छेदक कीट, आम का लाल मक्खी रोग कि जानकारी दी गई साथ ही अन्य वैज्ञानिकों के द्वारा पशुपालन संबंधी तकनीकें, नवीनतम कृषि तकनीकों, प्राकृतिक,खेती, जल संरक्षण एंव आत्मनिर्भर कृषि मॉडल के प्रति जागरूक किया गया। इस कार्यक्रम मे डॉ. राम निवास सिंह, सविता कुमारी, डॉ. गायत्री कुमारी पाढ़ी, डॉ. पंच किशोर भारती, गौरव कुमार, अभिनव कुमार एवं सबंधित प्रखण्डों के प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक, कृषि समन्वयक, किसान सलाहकार ने सहभागिता दे कर किया। इस कार्यक्रम में लगभग 950 किसानों, स्थानीय जनप्रतिनिधि, जिला पार्षद, मधुवन प्रखण्ड किरण कुशवाह और ग्रामीण महिलाएँ बड़ी संख्या में उपस्थित रहीं।

# विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत जागरूकता कार्यक्रम

शिवहर (एसएनबी)। जिला कृषि विज्ञान केंद्र के प्रधान कृषि समन्वयक डॉक्टर अनुराधा रंजन के निर्देश के आलोक में शिवहर जिले में किसानों को जागरूक करनें को लेकर दो टीम के तहत अभियान चलाकर किसानों को जागरूक किया जा रहा है।प्रथम टीम में फुलकाहा ,नयागांव पूर्वी और पहाड़पुर में विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत जागरूक कार्यक्रम को सफल आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में किसानों ने भाग लिया। डॉक्टर विश्वजीत वैज्ञानिक आरपीसीयू पूसा ने धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण, सांबा धान एवं मोटा घास के प्रभावी नियंत्रण पर चर्चा की तथा उन्होंने बताया की रोपाई के तीन दिन के भीतर पेडमैथिलियन 33ः 1 लीटर प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करने से सांबा घास का उगना रोका जा सकता है।मोठा घास को रोकने के लिए रोपाई के 20 से 25 दिन बाद भी दवा का छिड़काव कर उसे पर नियंत्रण पाया जा सकता है। टीम -दो में हरियाणवी प्रखंड के रेवासी, खोर्ठा, महादेव में डॉक्टर सौरव शंकर पटेल ने किसानों के धान की सीधी बुवाई करने, मक्का की मशीन से बुवाई करने के बारे में जानकारी दी।विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत वैज्ञानिकों द्वारा मोहसिन विज्ञान की जानकारी दी गई। मिट्टी जांच के बारे में विशेष जानकारी दी गई ,मधुमक्खी पालन,मशरूम उत्पादन आधुनिक तरीके से करने के लिए किसानों को जागरूक किया गया।

राष्ट्रीय सहारा 9.06.2025 P-8

# रिपोर्टिंग पोर्टल पर बिहार का प्रदर्शन देश भर में रहा सर्वश्रेष्ठ : कुलपति

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने विकसित संकल्प अभियान में योगदान ले रहे विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों, कृषि पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों की सराहना की है. उन्होंने कहा कि पिछले दस दिनों से अधिक से वैज्ञानिक और कृषि पदाधिकारी लगातार किसानों के पास जा रहे हैं. गांव स्तर पर विकसित कृषि संकल्प अभियान में जनप्रतिनिधियों का भी सराहनीय योगदान मिल रहा है. उन्होंने कहा कि भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री रामनाथ ठाकुर ने इस अभियान की शुरुआत पूसा में हरी झंडी दिखाकर की थी. इसके बाद केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान व राज्य सरकार के मंत्री, सांसदों एवं विधायकों ने भी विश्वविद्यालय के विकसित कृषि संकल्प अभियान में भाग लिया. किसानों के साथ सीधा संवाद में शामिल हुए हैं. कुलपति ने कहा कि रिपोर्टिंग पोर्टल पर भी बिहार का प्रदर्शन देश भर में अभी तक सबसे उत्कृष्ट देखने को मिल रहा है. निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ने कहा कि विश्वविद्यालय के लगभग 175 से अधिक वैज्ञानिक और वस्तु विषय विशेषज्ञ इस अभियान के तहत प्रतिदिन तीन गांव जा रहे हैं. वहां हजारों किसानों से संवाद कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि ज्यादातर किसानों की समस्याओं का तत्काल निराकरण किया जा रहा है. कुछ समस्या ऐसी है जिस पर शोध की आवश्यकता है. उन समस्याओं को भारत सरकार के रिपोर्टिंग पोर्टल और विश्वविद्यालय स्तर पर सूचित किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि भारत सरकार के इस मेगा अभियान से कृषि को जीडीपी में इस छमाही में उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिल सकती है. नोडल पदाधिकारी डा रत्नेश कुमार झा ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक अभी तक 150 से ज्यादा प्रखंड के लगभग 500 गांव में 50 हजार किसानों से संपर्क कर चुके हैं.

किसानों के साथ संवाद करते वैज्ञानिक .

प्रभात खबर
Tuesday, June 10, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68472148b5be28a18a0bba60

दैनिक जागरण 10/6/25 पेज 5

# विज्ञानियों 500 गांव का किया दौरा, किसानों से जाना कृषि का हाल

संवाददाता सहयोगी, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डा. पीएस पांडेय ने विकसित संकल्प अभियान में योगदान दे रहे विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों, राज्य के कृषि पदाधिकारी एवं कर्मचारियों की सराहना की है। उन्होंने कहा कि पिछले 10 दिनों से अधिक से वैज्ञानिक और कृषि पदाधिकारी लगातार किसानों के पास जा रहे हैं। गांव स्तर पर विकसित कृषि संकल्प अभियान में जनप्रतिनिधियों का भी सराहनीय योगदान मिल रहा है। जनप्रतिनिधियों की साझेदारी से ही इतनी बड़ी संख्या में किसानों से संवाद करने में वैज्ञानिकों की टीम सफल हो रही है। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान तथा राज्य सरकार के मंत्रीगण, सांसदों एवं विधायकों ने

**विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने कहा- विकसित कृषि संकल्प अभियान में जनप्रतिनिधियों का मिल रहा सराहनीय योगदान**

भी विश्वविद्यालय के विकसित कृषि संकल्प अभियान में भाग लिया और किसानों के साथ संवाद में शामिल हुए हैं। रिपोर्टिंग पोर्टल पर भी बिहार का प्रदर्शन देश भर में अभी तक सबसे उत्कृष्ट देखने को मिल रहा है।

**किसानों की समस्याओं का तत्काल किया जा रहा निराकरण :** निदेशक प्रसार शिक्षा डा. मयंक राय ने कहा कि विश्वविद्यालय के लगभग 175 से अधिक वैज्ञानिक और वस्तु विषय विशेषज्ञ इस अभियान के तहत प्रतिदिन तीन गांव जा रहे हैं और वहां हजारों किसानों से संवाद कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि ज्यादातर किसानों की समस्याओं का तत्काल निराकरण किया जा रहा है। कुछ समस्या ऐसी है जिस पर शोध की आवश्यकता है। उन समस्याओं को भारत सरकार के रिपोर्टिंग पोर्टल और विश्वविद्यालय स्तर पर सूचित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार के इस मेगा अभियान से कृषि को जीडीपी में इस छमाही में उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिल सकती है।

**50 हजार किसानों से कर चुके संपर्क :** नोडल पदाधिकारी डा. रत्नेश झा ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक अभी तक 150 से अधिक प्रखंड के लगभग 500 गांव में 50 हजार किसानों से संपर्क कर चुके हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रतिदिन इस अभियान को लेकर

किसानों की समस्याओं को दूर करने के लिए जागरूक करते अधिकारी • जागरण

जानकारी हासिल करते हैं। उन्होंने कहा कि कुलपति के निर्देश पर सभी फीडबैक के डाटा को संग्रहित किया जा रहा है जिसका बाद में अध्ययन किया जाएगा। उन विषयों पर अनुसंधान परियोजना विकसित की जाएगी जहां अनुसंधान किया जाना अपेक्षित है।

~~MRP - 6199~~
Effective Price - ₹2

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 11 जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस दौरान उत्तर बिहार के जिलों में दो-तीन दिनों तक बगहा एवं इसके आसपास के इलाकों में वर्षा की संभावना है। विभाग के अनुसार जून के दूसरे सप्ताह में मानसून के सक्रिय होने की संभावना है।

हिन्दुस्तान 10/6/25 पेज 7

# कृषि तकनीक के बारे में किसानों ने ली जानकारी

सोमवार को किसानों को जानकारी देते कृषि वैज्ञानिक।

**पूसा, निज संवाददाता।** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने विकसित संकल्प अभियान में योगदान दे रहे वैज्ञानिकों, राज्यों के कृषि प्रसार पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों की सराहना की है।

उन्होंने कहा कि पिछले 10 दिनों से वैज्ञानिक और कृषि पदाधिकारी लगातार किसानों के पास जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि गांव स्तर पर विकसित कृषि संकल्प अभियान में जनप्रतिनिधियों का भी सराहनीय योगदान मिल रहा है। जनप्रतिनिधियों की साझेदारी से ही इतनी बड़ी संख्या में किसानों से संवाद करने में वैज्ञानिकों की टीम सफल हो रही है।

उन्होंने कहा कि इतने बड़ी संख्या में सरकार के प्रतिनिधियों का इस समारोह में शामिल होना विवि के लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि रिपोर्टिंग पोर्टल पर भी बिहार का प्रदर्शन देश भर में अभी तक सबसे उत्कृष्ट देखने को मिल रहा है।

निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ने कहा कि विवि के करीब 175 से अधिक वैज्ञानिक और वस्तु विषय विशेषज्ञ इस अभियान का हिस्सा बन किसानों को लाभान्वित बनाने में जुटे हैं। नोडल पदाधिकारी डॉ. रत्नेश झा ने कहा कि विवि के वैज्ञानिक अब तक 150 से अधिक प्रखंड के लगभग 500 गांव में 50 हजार किसानों से संपर्क कर चुके हैं। इसकी मोनिटरिंग विवि स्वयं कर रहा है।

# केले के बागों के प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत : डॉ. सिंह

**समस्तीपुर कार्यालय।** पिछले वर्ष जून-जुलाई के महीने में राज्य के हजारों किसानों ने उत्तक संवर्धन तकनीक से अपने खेतों में केले के पौधों को लगाया था। उन सभी किसानों का केला का पौधा इस समय 10 से 11 महीने का हो गया है। किसानों को अब ऐसे सभी केले के बागों के प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ.एसके सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से केले की खेती में बिहार 9वें नंबर तथा उत्पादन एवं उत्पादकता के दृष्टिकोण से 7वें नंबर पर आता है। उन्होंने बताया कि बिहार के अंदर केला के क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने की दिशा में असीम संभावनाएं मौजूद है। किसान केले की खेती में पौधों की अच्छी प्रजाति का चयन, विकास के विभिन्न अवस्थाओं के दौरान केले के बागों में किए जाने वाले वैज्ञानिक प्रबंधन आदि महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देकर कम लागत में केले की खेती से अच्छी उपज और आय दोनों प्राप्त कर सकते है। उन्होंने बताया कि पिछले साल लगाएं गए केले के बागों में अभी किसान हल्की जुताई-गुड़ाई करने के बाद प्रति केले के पौधे 200 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश एवं 100 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट देकर पौधों पर मिट्टी चढ़ा दें। उन्होंने बताया कि अभी केले के पौधों में फूल के आने का समय है इसलिए बागों में उर्वरक देना अत्यंत जरूरी है। किसान इसके अलावे केले के पौधों से सूखे एवं रोगग्रस्त पत्तियों को तेज चाकू से समय-समय पर काटते भी रहें। ऐसा करने से जहां पौधों में विभिन्न रोगों के लगने की संभावना काफी कम हो जाती है। वहीं बाग में अगर रोग लग भी जाएं तो रोग का फैलाव काफी कम होता है। इससे बाग में हवा एवं प्रकाश भी नीचे तक आसानी से पहुंच पाता है। उन्होंने बताया कि केले से अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए किसान एक केले के पेड़ पर 13-15 स्वस्थ पत्तियां ही रखें। वर्तमान मौसम में बागों में आवश्यकतानुसार हल्की- हल्की सिंचाई करना भी काफी बेहतर रहेगा। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि वर्तमान समय में केले के बागों में आभासी तना ञ(स्यूडोस्टेम) विविल कीट का प्रकोप भी काफी होता है। इस कीट के प्रबंधन के लिए किसान रोगग्रस्त केले के पौधे पर 100 मिलीलीटर बेवेरिया बेसियाना नामक दवाई का 3 एमएल हिस्सा प्रति लीटर पानी के साथ या क्लोरपाइरीफोस नामक दवाई का 2.5 एमएल हिस्सा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर बागों में छिड़काव करें।

Rashtriya Sahara 10-6-2025

# विकसित कृषि संकल्प अभियान में वैज्ञानिकों की भूमिका सराहनीय : कुलपति

**समस्तीपुर कार्यालय/पूसा (एसएनबी)।** डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि वि वविद्यालय पूसा के कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने विकसित संकल्प अभियान में योगदान दे रहे वि वविद्यालय के वैज्ञानिकों, राज्यों के कृषि पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों की सराहना की है। उन्होंने कहा कि पिछले दस दिनों से वैज्ञानिक और कृषि पदाधिकारी लगातार किसानों के पास जा रहे है। उन्होंने कहा कि गांव स्तर पर विकसित कृषि संकल्प अभियान में जनप्रतिनिधियों का भी सराहनीय योगदान मिल रहा है। जनप्रतिनिधियों की साझेदारी से ही इतनी बड़ी संख्या में किसानों से संवाद करने में वैज्ञानिकों की टीम सफल हो रही है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री रामनाथ ठाकुर ने इस अभियान की शुरुआत पूसा में हरी झंडी दिखाकर की थी। इसके बाद केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान तथा राज्य सरकार के मंत्रीगण, सांसदों एवं विधायकों ने भी विश्वविद्यालय के विकसित कृषि संकल्प अभियान में भाग लिया और किसानों के साथ संवाद में शामिल हुए है। इतनी बड़ी संख्या में सरकार के प्रतिनिधियों का शामिल होना वि वविद्यालय के लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि रिपोर्टिंग पोर्टल पर भी बिहार का प्रदर्शन देश भर में अभी तक सबसे उत्कृष्ट देखने को मिल रहा है। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ने कहा कि वि वविद्यालय के लगभग 175 से अधिक वैज्ञानिक और वस्तु विषय विशेषज्ञ इस अभियान के तहत प्रतिदिन तीन गांव जा रहे है और वहां हजारों किसानों से संवाद कर रहे है। उन्होंने कहा कि ज्यादातर किसानों की समस्याओं का तत्काल निराकरण किया जा रहा है। कुछ समस्या ऐसी है जिस पर शोध की आवश्यकता है। उन समस्याओं को भारत सरकार के रिपोर्टिंग पोर्टल और वि वविद्यालय स्तर पर सूचित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार के इस मेगा अभियान से कृषि को जीडीपी में इस छमाही में उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिल सकती है। नोडल पदाधिकारी डॉ रत्नेश झा ने कहा कि वि वविद्यालय के वैज्ञानिक अभी तक 150 से ज्यादा प्रखंड के लगभग 500 गांव में 50 हजार किसानों से संपर्क कर चुके है। उन्होंने कहा कि वि वविद्यालय के कुलपति प्रतिदिन इस अभियान को लेकर जानकारी हासिल करते है। उन्होंने कहा कि कुलपति के निर्देश पर सभी फीडबैक के डाटा को संग्रहित किया जा रहा है जिसका बाद में अध्ययन किया जाएगा और उन विषयों पर अनुसंधान परियोजना विकसित की जायेगी जहां अनुसंधान किया जाना जरूरी है।

किसानों के बीच जानकारी देते कृषि वैज्ञानिक

Rashtriya Sahara 10-06-2025

दैनिक भास्कर - 11/6/25 पेज 12

कृषि • स्वास्थ्य का सुरक्षा कवच, कटहल में एक बार निवेश कर लंबे समय तक कर सकते हैं आमदनी

# कटहल की खेती से बढ़ेगी किसानों की आय डायबिटीज को कंट्रोल करने में भी है कारगर

भास्कर न्यूज | पूसा

कटहल एक उष्णकटिबंधीय फल है जिसे भारत के अधिकांश राज्यों में उगाया जाता है। यह फल अपनी अनूठी बनावट, स्वाद, और पोषण गुणों के साथ-साथ औषधीय विशेषताओं के कारण तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। विशेष रूप से मधुमेह (डायबिटीज) जैसे गैर-संक्रामक रोगों की बढ़ती समस्या के बीच कटहल डायबिटिक रोगियों के लिए एक आशाजनक विकल्प बनकर उभरा है। बिहार के किसान आने वाले मानसून में कटहल की बागवानी जरूर लगाएं। कटहल की बागवानी किसानों को आर्थिक और पोषण दोनों रूप से फायदा पहुंचाएगी। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, प्रमुख फल रोग विशेषज्ञ एवं अखिल भारतीय फल अनुसंधान परियोजना के पूर्व प्रधान अन्वेषक डॉ. संजय कुमार सिंह ने

नर्सरी में कटहल।

दी है। उन्होंने कहा कि आज के दौर में देश की करीब 11 प्रतिशत जनसंख्या डायबिटिक और 15 प्रतिशत प्री-डायबिटिक है। वैज्ञानिक अध्ययनों से प्रमाणित हुआ है कि कटहल में ऐसे यौगिक पाए जाते हैं जो ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। यही कारण है कि कटहल आधारित उत्पादों की मांग बाजारों में तीव्र गति से बढ़ रही है। ऐसे में आगामी मानसून में कटहल का पौधरोपण किसानों के लिए आर्थिक और पोषण दोनों दृष्टिकोण से लाभकारी होगा। कटहल मुख्य रूप से 25 डिग्री सेल्सियस से 35 डिग्री सेल्सिट्स तापमान पर और 1500 से 2500 मिलीमीटर वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में पनपता है। यह तटीय क्षेत्रों, मैदानी भागों और हल्की ढलान वाली पहाड़ियों में भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। इसे तटस्थ या हल्की अम्लीय (pH 6.0–7.5) तथा अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है। भारत में केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में कटहल की खेती प्रमुखता से की जा रही है। इन सभी राज्यों में से बिहार एक उभरता हुआ प्रमुख उत्पादक राज्य है जहां कृषकों को आधुनिक तकनीक से कटहल की खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

## कटहल किसानों की आय बढ़ाने का एक सशक्त माध्यम बन सकता है

कटहल का पेड़ 3 से 4 वर्षों में फल देना प्रारंभ कर देता है। एक परिपक्व पेड़ से 50 से 250 फल प्रति वर्ष तक प्राप्त किये जा सकते हैं। एक फल का वजन 5 से 30 किलोग्राम या इससे अधिक हो सकता है। कटहल का उत्पादन किसानों की आर्थिक समृद्धि में काफी सहायक हो सकता है। विशेषतः यदि किसान कटहल आधारित प्रसंस्करण या मूल्यवर्धन उत्पादों में निवेश करें। वैज्ञानिक ने बताया की कटहल का उपयोग हरे व पके दोनों रूप में होता है। हरा कटहल सब्जी के रूप में लोकप्रिय है जबकि पका हुआ फल सीधे खाया जाता है और मिठाइयों, जैम व आइसक्रीम में उपयोग होता है। इसके बीज भी उबालकर या भूनकर खाए जाते हैं। इसका बीज प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत हैं।

## कटहल में लगने वाले रोग और कीट प्रबंधन की जानकारी महत्वपूर्ण

कटहल की पहली किस्म खजवा हैं। यह किस्म जल्दी पकने वाला और ताजे फल के लिए उपयुक्त हैं। दूसरी किस्म स्वर्ण मनोहर हैं। यह छोटे आकार के वृक्ष में बड़े और अधिक फलों वाली लगभग 300 से 550 किलोग्राम उपज प्रति वृक्ष देती हैं। तीसरी किस्म स्वर्ण पूर्ति हैं। सब्जी के उपयोग के लिए यह किस्म काफी उपयुक्त हैं। छोटे आकार के फल 3 से 4 किलोग्राम के होते हैं। यह लंबी अवधि तक उपयोग योग्य रह सकता हैं। किसान इन सभी किस्मों की बागवानी लगाकर बेहतर गुणवत्ता और अधिक उपज प्राप्त कर सकते हैं। किसान कटहल के पौधों को लगाने से पहले खेत में 1 गुने 1 गुने 1 मीटर आकार का गड्ढा खोद लें। इस गड्ढों को 20 से 30 किलोग्राम गोबर की खाद, करंज खली और एनपीके खाद के मिश्रण से भर दें।

जागरण - 11-06-25 P - 05

# हल्के बादल से मौसम शुष्क रहने का अनुमान

**भीषण गर्मी और लू के थपेड़ों से जिले वासियों का जनजीवन था अस्त-व्यस्त, इस बीच आसमान में दिखे हल्के बादल, चिलचिलाती धूप से लोगों को मिली राहत**

**जागरण संवाददाता, समस्तीपुर :** गर्मी के तेवर में आने वाले दिनों में कमी होने की संभावना है। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम वैज्ञानिक डा. ए सत्तार ने बताया कि उत्तर बिहार के जिलों में दिन में आसमान में हल्के बादल तथा आमतौर पर मौसम शुष्क रहने की संभावना है। हालांकि, अगले दो दिनों में गरज वाले बांदल बनने के साथ-साथ कही-कही हल्की बारिश होने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 39 से 40 डिग्री सेल्सियस रह सकता है। जबकि, न्यूनतम तापमान 25 से 26 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है। इस दौरान 20 से 25 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से पूर्वा हवा चलेगी। जिले में मंगलवार को सुबह से सूरज ने तेवर दिखाए तो शहरवासी बेहाल हो उठे। दोपहर में आसमान से आग बरसी तो तेज धूप में त्वचा झुलस गई। जलन का अहसास हुआ। दिन में लू के थपेड़े चुभे तो रात में भी गरम हवा ने चैन की सांस नहीं लेने दी। शहर में मंगलवार को सुबह से तेज धूप निकली। दिन चढ़ने के साथ सूरज के तेवर भी तीखे होते चले गए। सुबह नौ बजे से ही धूप में बाहर निकलने पर पसीना छूट रहा था। गर्मी से शहरवासियों के साथ ही पशु-पक्षी भी व्याकुल नजर आए। गर्मी में परेशान होने से बचने को शहरवासियों ने घर में रहना ही उचित समझा। जरूरी काम होने पर ही वह घर से बाहर निकले। शाम ढ़लने के बाद भी राहत नहीं मिली। मौसम विभाग ने मंगलवार को अधिकतम तापमान 39.2 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 26.6 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया।

दलसिंहसराय शहर में सड़क ब्रेकर के लिए स्पॉट...

हिन्दुस्तान 11/6/25 पेज 7

# तापमान 40 तक रहने की संभावना, हो सकती है वर्षा

- विभाग ने 15 जून तक पूर्वानूमान जारी किया
- पुरवा हवा 20 से 25 किमी प्रति घंटा चलेगी

पूसा, निज संवाददाता। उत्तर बिहार के जिलों में अगले चार दिनों तक हल्के बादल रह सकते हैं। इस दौरान आमतौर पर मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विभाग के अनुसार अगले दो दिनों में गरज के साथ कहीं कही हल्की वर्षा हो सकती है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने मंगलवार को 15 जून तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है।

जिसके अनुसार इस दौरान औसतन 20 से 25 किमी प्रति घंटा की गति से पुरवा हवा चलने का अनुमान है। पूर्वानुमान की अवधि में सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 एवं दोपहर में 35 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 38 से 40 डिग्री एवं न्यूनतम 25 से 26 डिग्री सेल्सियस के आस पास रह सकता है। इस दौरान दिन एवं रात के समय ऊच्च आद्रता एवं तापमान के कारण अहसजता का स्तर अधिक रहने का अनुमान है।

# सतायेगी प्रचंड गर्मी व उमस, अगले दो दिनों में कहीं कहीं गरज के साथ हल्की बारिश के आसार बरकरार

**समस्तीपुर।** तापमान 40 डिग्री तक जाने से आने वाले दिनो में प्रचंड गर्मी व उमस जन जीवन को बुरी तरह प्रभावित करेगा। हलांकि इस अवधि में उत्तर बिहार में कहीं कहीं गरज वाले बादलों के बनने और हल्की बारिश की संभावना बनी रहेगी। इस संबंध में जिले के पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के ग्रामीण .षि मौसम सेवा, एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी अगामी 15 जून, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में ज्यादातर दिनों में आसमान में हलके बादल तथा आमतौर पर मौसम के शुष्क रहने की सम्भावना है। हलाकि, अगले दो दिनों में गरज बाले बादलों के बनने के साथ कही कही हल्की वर्षा हो सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 38 से 40 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 25 से 26 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 20 से 25 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने का अनुमान है जिससे उमस की स्थिति बनी रह सकती है। इस क्षेत्र में दिन एवं रात के समय उच्च आर्द्रता एवं तापमान के कारण असहजता का स्तर अधिक रहने का अनुमान है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 35 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Rasshtriya Sahara 11-06-2025

भास्कर 12/6/25 पेज 16

कृषि • दलसिंहसराय में कृषि जन कल्याण चौपाल एवं विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम आयोजित

# मिट्टी जांच के आधार पर ही अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का इस्तेमाल करें, इससे उर्वराशक्ति बनी रहेगी : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज | दलसिंहसराय

प्रखंड के पांड़ पंचायत स्थित पांडव स्थान एवं बसढिया पंचायत स्थित पंचायत भवन परिसर में बुधवार को कृषि जन कल्याण चौपाल एवं विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम का आयोजन संयुक्त रूप से किया गया। कार्यक्रम में डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र लादा के वैज्ञानिक,विभागीय पदाधिकारी एवं कर्मी सहित पंचायतों के जनप्रतिनिधि एवं कृषकों ने भाग लिया। इस अवसर परकृषि वैज्ञानिक विक्रम भारती ने खरीफ फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने फसलों में मिट्टी जाँच के आधार पर अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों के इस्तेमाल की सलाह दी।कृषि वैज्ञानिक सविता कुमारी मोटे अनाज वाली फसलों के उत्पादन तकनीक एवं इसके

कार्यक्रम में जानकारी देते कृषि वैज्ञानिक।

पोषक महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने स्वस्थ जीवन के लिए मोटे अनाज एवं उससे बने उत्पाद को दैनिक आहार में उपयोग की सलाह दी।मत्स्य वैज्ञानिक अनिरुद्ध कुमार वैज्ञानिक तरीके से मछली पालन व्यवसाय के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कृषि विज्ञान केंद्र लादा के वैज्ञानिक जोगेंद्र सोरेन कृषि में उपयोगी विभिन्न यंत्रों के बारे में बताया तथा फसलों के उत्पादन लागत को कम करने के लिए उन यंत्रों के उपयोग की भी सलाह दी। प्रखंड तकनीकी प्रबंधक शांता कुमार चौधरी विभागीय जन कल्याणकारी योजनाओं सहित खरीफ फसलों के कीट एवं रोग व्याधि तथा इसके उपचार के बारे में बताया। उन्होंने किसानों को कृषि में तकनीकी दक्षता हासिल करने के लिए आत्मा से जुड़कर कृषि विषयों में प्रशिक्षण लेने की सलाह दी। जो विभाग द्वारा पूर्णतः निःशुल्क है। कार्यक्रम को रामानंद महतो, प्रमोद कुमार आदि प्रगतिशील कृषकों ने भी संबोधित किया। इस मौके पर विभाग के कृषि कॉर्डिनेटर, सहायक तकनीकी प्रबंधक, किसान सलाहकार आदि उपस्थित थे।

भास्कर 12/6/25 पेज 17

**कार्यक्रम : कृषक वैज्ञानिक गोष्ठी आयोजित कर किसानों को फसलों के उन्नत प्रभेद, नई सिंचाई तकनीक, भूमि समतलीकरण आदि के फायदे बताए**

# विकसित कृषि संकल्प अभियान में नई तकनीकों की दी जानकारी

भास्कर न्यूज़ | पूसा

भारत सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान के 14वें दिन केवीके बिरौली द्वारा गठित वैज्ञानिकों की दो टीमों ने 6 पंचायत के विभिन्न गांव का भ्रमण कर किसानों को कृषि के नए नए तकनीकों के बारे में जानकारी दी। वैज्ञानिकों की पहली टीम का नेतृत्व केवीके की इंजीनियर विनीता कश्यप ने किया। कृषि विशेषज्ञ विनीता ने कल्याणपुर के खरसंद, पूर्वी सिमरिया, भिंडी एवं पुरुषोत्तमपुर पंचायत में कृषक वैज्ञानिक गोष्ठी आयोजित कर किसानों को फसलों के उन्नत प्रभेद, नई सिंचाई तकनीक, भूमि समतलीकरण आदि के फायदों से रूबरू कराया। पहले टीम में

गोष्ठी में किसानों को जानकारी देते वैज्ञानिक।

विनीता कश्यप के अलावे कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वैज्ञानिक डॉ. सुमित कुमार सिंह, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के डॉ. महेश कुमार, डॉ. अब्बास अहमद एवं भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान पुसा के डॉ. सतीश नायक ने किसानों को कृषि से संबंधित विभिन्न विषयों में जानकारी दी। वैज्ञानिकों के दूसरे टीम का नेतृत्व केवीके बिरौली के वैज्ञानिक डॉ. धीरू कुमार तिवारी ने किया। इसके अलावे केवीके बिरौली की कृषि विशेषज्ञ भारती उपाध्याय, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के एग्रीकल्चर इंजीनियर दिनेश रजक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान पूसा के डॉ. तमोगना आदि ने पटोरी के जोरपुरा दरबार एवं बहादुरपुर पटोरी पंचायत में कृषक वैज्ञानिक गोष्ठी कर किसानों को कृषि से संबंधित नई नई तकनीकों एवं अन्य तरह की जानकारी दी। किसानों की समस्याओं का समाधान भी किया।

## गर्मी में गहरी जुताई करने के साथ-साथ फसल चक्र अपनाने का सुझाव दिया

वैज्ञानिकों ने परवल में नीमाटोड की समस्या से बचाव के लिए गर्मी में गहरी जुताई करने के साथ-साथ उस खेत में फसल चक्र अपनाने का सुझाव दिया। वैज्ञानिकों ने फल मक्खी के समाधान के लिए फ्रूट फ्लाई ट्रैप को परवल के खेतों में लगाने का सुझाव दिया। इन सबके अलावे वैज्ञानिकों ने विभिन्न फसलों में खरपतवार नियंत्रण एवं पूसा विवि व भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद जैसे संस्थानों द्वारा विकसित धान, मक्का, मोटे अनाज एवं अन्य फसलों के प्रजातियों के बारे में भी बताया। वैज्ञानिकों ने किसानों को फलदार पौधों में फलों की तुड़ाई के बाद उसका प्रबंधन कैसे किया जाए इसकी जानकारी भी किसानों को दी।

## फल और तना छेदक कीट की समस्या का बताया गया समाधान, किसान दिखे खुश

इसके बाद वैज्ञानिकों ने फीडबैक कार्यक्रम के तहत किसानों से कृषि में होने वाले विभिन्न समस्याओं की जानकारी भी ली तथा समस्या का निदान भी किसानों को बताया। गोष्ठी में किसानों ने मुख्य रूप से बैगन में लगने वाले फल और तना छेदक कीट की समस्या बताई। इसके समाधान के लिए वैज्ञानिकों ने किसानों को फेरोमैन ट्रैप को एक एकड़ बैंगन के खेत में लगभग 12 से 14 की संख्या में लगाने का सुझाव दिया। बैंगन की फसल में इस बीमारी की अधिक समस्या देखने पर उसमें लेमडासाइहैलोथ्रिन केमिकल का एक एमएल मात्रा प्रति 3 लीटर पानी के साथ घोलकर स्प्रे करने का सुझाव दिया। कुछ किसानों ने परवल में नीमाटोड एवं फ्रूट फ्लाई कीट की समस्या को बताया।

भास्कर 12/6/25 पेज 18

कृषि • राजमा की खेती से कम लागत में ज्यादा मुनाफा, खरीफ सीजन के लिए महत्वपूर्ण दलहनी फसल

# इस माह के अंतिम सप्ताह से लेकर जुलाई प्रथम सप्ताह तक करें राजमा की बुआई

भास्कर न्यूज़ | पूसा

राजमा उत्तर भारत की खरीफ सीजन की एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। इसके बीजों में प्रोटीन, फाइबर, आयरन और आवश्यक खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं जो इसे ग्रामीण और शहरी दोनों वर्गों के लिए एक लोकप्रिय खाद्य सामग्री बनाते हैं। राजमा की खेती न केवल पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं बल्कि मिट्टी की उर्वरता में सुधार लाकर सतत कृषि की दिशा में योगदान भी देती है। बिहार के किसान जून के अंतिम सप्ताह से लेकर जुलाई के प्रथम सप्ताह तक राजमा की बुआई कर कम लागत में अधिक उत्पादन और लाभ दोनों प्राप्त कर सकते हैं। ये बातें डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक एवं प्रमुख फल रोग विशेषज्ञ डॉ. संजय कुमार सिंह ने कही। उन्होंने कहा की राजमा को किडनी के बींस नाम से भी जाना जाता है। राजमा की अच्छी खेती के लिए अच्छी जल निकास वाली दोमट मिट्टी जिसकी पीएच 6.0 से 7.5 के बीच हो सर्वोत्तम मानी जाती है। राजमा की बुआई से पूर्व किसान खेत की गहरी जुताई और समतलीकरण कराएं।

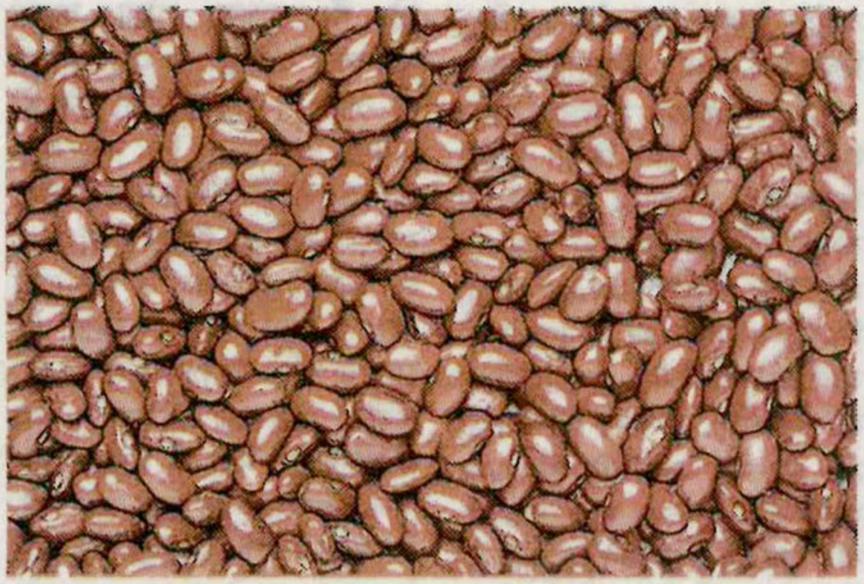

राजमा का बीज।

इससे मिट्टी में वायु संचार और जल धारण क्षमता बेहतर होता है। किसान बुआई से पूर्व मृदा परीक्षण करवाकर पोषक तत्वों की उपलब्धता का मूल्यांकन करके जरूरत के अनुसार ही खेतों में उर्वरक का प्रयोग करें। राजमा की बुआई के लिए बीज की दर 75 से 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखी जाती है। इसके अलावे बुआई के दौरान बीज की गहराई 4 से 6 सेमी रखनी चाहिए। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि राजमा को अंकुरण और फली निर्माण के समय पर्याप्त नमी की आवश्यकता होती है। वर्षा की असमानता की स्थिति में सिंचाई आवश्यक हो जाती है। विशेष रूप से फूल आने और फली भरने की अवस्था पर सिंचाई देने से उपज में स्पष्ट वृद्धि होती है। जलभराव से बचना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि इससे जड़ सड़न जैसे रोग बढ़ सकते हैं।

**पोषक तत्व प्रबंधन उपज की गुणवत्ता और मात्रा के लिए जरूरी :** राजमा की अच्छी उपज के लिए बुआई से पूर्व पोषक तत्व प्रबंधन उपज की गुणवत्ता और मात्रा के लिए अत्यंत ही जरूरी हैं। राजमा की बुआई से पूर्व खेतों में 20 से 25 किग्रा नाइट्रोजन, 60 से 75 किग्रा फास्फोरस और 40 से 50 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर देना चाहिए। फूल आने की अवस्था में टॉप ड्रेसिंग के रूप में अतिरिक्त 20 किग्रा नाइट्रोजन देना लाभकारी रहता है। राजमा से अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए किसान राजमा की फसल में खरपतवार का प्रबंधन समय समय पर जरूर करें। राजमा की फसल में कई प्रकार के कीटों के लगने की संभावना बनी रहती हैं। पॉड बोरर कीट के नियंत्रण हेतु किसान फेरोमोन ट्रैप, स्पिनोसैड या नीम के तेल का प्रयोग करें। एफिड्स और व्हाइटफ्लाई कीट से निजात पाने के लिए किसान इमिडाक्लोप्रिड या जैविक उत्पादों जैसे नीम आधारित कीटनाशकों का छिड़काव करें। रूट रॉट रोग से राजमा के पौधों को बचाने के लिए किसान बुआई से पूर्व बीज का उपचार और खेत में उचित जल निकासी की व्यवस्था करें। एंथ्रेक्नोज रोग से बचाव के लिए मैन्कोजेब या क्लोरोथालोनिल का छिड़काव करें। रस्ट रोग से बचाव के लिए ट्राइडेमॉर्फ जैसे कवकनाशी का प्रयोग करें। बैक्टीरियल ब्लाइट रोग से बचाव करने के लिए तांबे आधारित जीवाणुनाशी और रोगमुक्त बीज का प्रयोग करें।

## उन्नत किस्मों व बीज उपचार से उच्च उत्पादकता संभव

बिहार एवं उत्तर भारत के लिए उपयुक्त उच्च उत्पादकता वाली किस्में जैसे पीडीआर-14, उदय, उत्कर्ष, और चंपारण राजमा काफी लोकप्रिय हैं। इन किस्मों की बुआई कर किसान राजमा से अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावे बुआई से पूर्व राजमा के बीजों को राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करने पर नाइट्रोजन स्थिरीकरण में मदद मिलता है।

## राजमा की कटाई और उसके बाद का प्रबंधन

राजमा की फलियां जब पीली हो जाएं और बीज खड़कने लगें तब फसल कटाई के लिए तैयार होती है। आमतौर पर राजमा को तैयार होने में 90 से 120 दिन लगता है। कटाई के पश्चात थ्रेसिंग को सावधानी से करें। राजमा के बीजों को 10 से 12 प्रतिशत नमी स्तर पर सुखा लें। भंडारण के लिए एयरटाइट डिब्बों का उपयोग करें और उन्हें ठंडी व सूखी जगह पर रखें।

(11 जून) आवश्यक...

दैनिक जागरण 12/6/25

## आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 11 जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस दौरान उत्तर बिहार के जिलों में दो-तीन दिनों तक बगहा एवं इसके आसपास के इलाकों में वर्षा की संभावना है।

## ॥ प्रणाम ॥

### गुरुवार, अषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा विसं. 2082

- **बैठक** : ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग की
  स्थान : समाहरणालय
  समय : 10 बजे से
- **शिविर** : भगिनी निवेदिता विकास के मुद्दे पर
  स्थान : महिला महाविद्यालय
  समय : 10 बजे से

दैनिक जागरण 12/6/25 पेज 4

# मिट्टी जांच के आधार पर अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का इस्तेमाल करें किसान

संवाद सहयोगी, जागरण. दलसिंहसराय : प्रखंड के पाड़ पंचायत स्थित पांडव स्थान एवं बसढ़िया पंचायत स्थित पंचायत भवन परिसर में बुधवार को कृषि जन कल्याण चौपाल एवं विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम का आयोजन संयुक्त रूप से किया गया। कार्यक्रम में डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के विज्ञानी, कृषि विज्ञान केंद्र लादा के विज्ञानी,विभागीय पदाधिकारी एवं कर्मी सहित पंचायतों के जनप्रतिनिधि एवं कृषकों ने भाग लिया। इस अवसर पर कृषि विज्ञानी विक्रम भारती ने खरीफ फसलों की विज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने फसलों में मिट्टी जांच के आधार पर अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों के इस्तेमाल की सलाह दी। कृषि विज्ञानी सविता कुमारी मोटे अनाज वाली फसलों के उत्पादन तकनीक एवं इसके पोषक महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने स्वस्थ जीवन के लिए मोटे अनाज एवं उससे बने उत्पाद को दैनिक आहार में उपयोग की सलाह दी।

किसान चौपाल में उपस्थित किसान और कृषि वैज्ञानिक • जागरण

मत्स्य वैज्ञानिक अनिरुद्ध कुमार वैज्ञानिक तरीके से मछली पालन व्यवसाय के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कृषि विज्ञान केंद्र लादा के विज्ञानी जोगेंद्र सोरेन कृषि में उपयोगी विभिन्न यंत्रों के बारे में बताया तथा फसलों के उत्पादन लागत को कम करने के लिए उन यंत्रों के उपयोग की भी सलाह दी। प्रखंड तकनीकी प्रबंधक शांता कुमार चौधरी विभागीय जन कल्याणकारी योजनाओं सहित खरीफ फसलों के कीट एवं रोग व्याधि तथा इसके उपचार के बारे में बताया। उन्होंने किसानों को कृषि में तकनीकी दक्षता हासिल करने के लिए आत्मा से जुड़कर कृषि विषयों में प्रशिक्षण लेने की सलाह दी। जो विभाग द्वारा पूर्णतः निःशुल्क है। कार्यक्रम को रामानंद महतो, प्रमोद कुमार आदि प्रगतिशील कृषकों ने भी संबोधित किया।

# केविके की दो टीम ने छह पंचायतों का किया भ्रमण

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के द्वारा वैज्ञानिकों की दो टीम ने कल्याणपुर एवं पटोरी प्रखंड के 6 पंचायत का दौरा कर किसानों को विश्वविद्यालय के द्वारा विकसित तकनीक की जानकारी दी एवं किसानों के द्वारा कृषि कार्य में आ रहे समस्याओं का निपटारा भी किया। विज्ञानियों की टीम ने कल्याणपुर प्रखंड के सिमरिया भिंडी, पुरुषोत्तमपुर खरसंड एवं पटोरी प्रखंड के जोरपुरा बहादुरपुर पंचायत का दौरा किया। किसानों ने मुख्य रूप से बैगन के फल और तना छेदक की समस्या एवं खरपतवार की समस्या के बारे में बताया। विज्ञानियों ने बैगन की फसल में तना छिड़क की समस्या के संबंध में बताया। संबंधित कीटनाशक दवा की जानकारी दी। वहीं धान के विभिन्न प्रजातियों के बारे में विस्तार पूर्वक बताया और

कल्याणपुर एवं पटोरी प्रखंड में किसान गोष्ठी करते वैज्ञानिक। • जागरण

कहा कि इसके लिए खेत का समतलीकरण आवश्यक है। वैज्ञानिकों ने किसानों से यह भी कहा कि फलदार पौधों में फलों की चौड़ाई के बाद उसका प्रबंधन अवश्य करें। परवल में निमेटोड की समस्या से बचाव के लिए गर्मी में गहरी जुताई के साथ उस खेत में फसल चक्र अपनाने का सुझाव दिया। विज्ञानियों में सुमित कुमार सिंह, डा. अब्बास अहमद, डा. .महेश कुमार, डा. तमोगाना, इंजीनियर दिनेश रजक, डा. सतीश नायक सहित अन्य विज्ञानी शामिल रहे।

मिनट का मौन धारण कर श्रद्धांजलि दी।

हिन्दुस्तान 17/6/25 पेज 6

# महंगाई भत्ता मिलने पर जताई प्रसन्नता

पूसा। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के पेंशनरो की मासिक बैठक पेंशनर भवन परिसर में हुई। अध्यक्षता अध्यक्ष डॉ.शंभू शरण ठाकुर ने की। बैठक में लंबित पहचान पत्र, पीपीओ एवं महंगाई भत्ता को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। इस दौरान इसी महीने से महंगाई भत्ता की राशि मिलने पर प्रसंन्ता व्यक्त की गई। बैठक में रामउदगार महतो, रामलगन राय, गोपालजी, उतेश्वर ठाकुर, अखिलेश कुमार समेत अन्य सदस्य मौजूद थे।

# कृषि यांत्रिकीकरण पर दिया जोर

पूसा,निज संवाददाता। विकसित कृषि संकल्प अभियान के 14वें दिन मंगलवार को कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली की दो टीमों ने छह पंचायतो का भ्रमण किया। इस दौरान टीम लीडर्र इं.विनीत कश्यप व डॉ.धीरू कुमार तिवारी के नेतृत्व में वैज्ञानिको की टीम ने कल्याणपुर प्रखंड के खरसंड, पूर्वी सिमरिया भिंडी, पुरुषोत्मपुर, पटोरी के जोरपुरा दरबार, बहादुरपुर पटोरी समेत अन्य पंचायतों में पहुंच किसानों को कार्यक्रम का उद्देश्य, कृषि की नई तकनीक, प्रभेद, कृषि यांत्रीकरण के उपयोग, समूह बनाकर कार्य करने से फायदे, बैगन में फल और तना छेदक की समस्या का निदान, धान,मक्का, मोटे अनाज एवं अन्य फसलों की प्रजातियां की जानकारी देते हुए खेतों के समतलीकरण की महत्ता एवं फलों की तुड़ाई के बाद उसके प्रबंधन, खेत में फसल चक्र अपनाने आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की। टीम में डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि से डॉ.दिनेश रजक,. डॉ.महेश कुमार, डॉ.अब्बास अहमद, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय स्टेशन पूसा के डॉ.सतीश नायक, डॉ.तमोगना, केवीके से सुमित कुमार सिंह आदि ने हिस्सा लिया।

बुधवार को खरसंड पंचायत में किसानों को जानकारी देत वैज्ञानिक।

प्रभात खबर 12/6/25 पेज 4

# कृषि वैज्ञानिकों की टीम ने किया भ्रमण

प्रतिनिधि, पूसा

विकसित कृषि संकल्प अभियान के 14वें दिन कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के दो टीमों के द्वारा 6 पंचायत का भ्रमण कर किसानों को जानकारी उपलब्ध कराई गई. टीम वन जिसको इंजीनियर बिनीता कश्यप लीड कर रही थी. इन्होंने कल्याणपुर के खरसंड पूर्वी सिमरिया भिंडी एवं पुरुषोत्तमपुर पंचायत में यह कार्यक्रम आयोजित किया. इसमें कृषि विज्ञान केंद्र से सुमित कुमार सिंह डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा से डॉ महेश कुमार, डॉ अब्बास अहमद एवं भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के पूसा क्षेत्र से डॉ सतीश नायक मौजूद रहे. टीम दो जिसको धीरू कुमार तिवारी एवं भारती उपाध्याय कृषि विज्ञान केंद्र व डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय विश्वविद्यालय पूसा से डा दिनेश रजक व भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान पूसा से डॉ तमोगना ने पटोरी के जोरपुरा दरबार एवं बहादुरपुर पटोरी पंचायत में कार्यक्रम किया. वैज्ञानिकों के द्वारा नई-नई तकनीक के बारे में किसानों को बताया गया. फीडबैक कार्यक्रम के अंतर्गत किसानों से कृषि में होने वाले विभिन्न समस्याओं की जानकारी लेने का प्रयास हुआ. किसानों ने मुख्य रूप से बैगन में फल और तना छेदक की समस्या बताई. इसके समाधान के लिए फिरेमोन ट्रैप को एक एकड़ के खेत में लगभग 12 से 14 की संख्या में लगाने का सुझाव दिया गया. अधिक समस्या देखने पर उसमें लेमडासाइहैलोथ्रिन केमिकल का एक एम 3 लीटर पानी में स्प्रे करने का सुझाव दिया गया. साथ ही साथ परवल में नीमाटोड की समस्या तथा फ्रूट फ्लाई किट से किसानों ने अपनी समस्या के बारे में सभी को बताया. जिसके समुचित समाधान की जानकारी वैज्ञानिकों के द्वारा उपलब्ध कराई गई. इसके साथ ही किसानों ने विभिन्न फसलों में विभिन्न प्रकार के खरपतवार की समस्या की जानकारी वैज्ञानिकों को उपलब्ध कराई. वैज्ञानिकों के द्वारा पूसा विश्वविद्यालय तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थाओं द्वारा विकसित धान-मक्का के अलावा मोटे अनाज एवं अन्य फसलों की प्रजातियां की जानकारी व खेत के समतलीकरण की महत्ता पर प्रकाश डाला गया. फलदार पौधों में फलों की तुड़ाई के बाद उसका प्रबंधन कैसें किया जाये इसकी भी जानकारी उपलब्ध कराई गई. फलमक्खी के समाधान के लिए फ्रूट फ्लाई ट्रैप को परवल में लगाने का सुझाव दिया गया.

कृषि तकनीक से अवगत होते किसान .

~~दैनिक जागरण~~ 12/6/25 पेज 2 प्रभात खबर

## कृषि जन कल्याण चौपाल और विकसित कृषि संकल्प का आयोजन

# किसानों को दी गयी मिट्टी की जांच व खाद की सही मात्रा की जानकारी

चौपाल में उपस्थित किसान व अन्य.

**आयोजन**

प्रतिनिधि, दलसिंहसराय

प्रखंड के पांड पंचायत स्थित पांडव स्थान एवं बसढिया पंचायत ,स्थित पंचायत भवन परिसर में बुधवार को कृषि जन कल्याण चौपाल एवं विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम का आयोजन संयुक्त रूप से किया गया. कार्यक्रम में कृषि विश्वविद्यालय पूसा व कृषि विज्ञान केंद्र लादा के वैज्ञानिक, विभागीय पदाधिकारी एवं कर्मी सहित पंचायतों के जनप्रतिनिधि एवं प्रगतिशील कृषकों ने भाग लिया. कृषि वैज्ञानिक विक्रम भारती ने खरीफ फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से जानकारी दी. उन्होंने फसलों में मिट्टी जांच के आधार पर अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों के इस्तेमाल की सलाह दी. कृषि वैज्ञानिक सविता कुमारी मोटे अनाज वाली फसलों के उत्पादन तकनीक एवं इसके पोषक महत्व के बारे में जानकारी दी. मत्स्य वैज्ञानिक अनिरुद्ध कुमार, जोगेंद्र सोरेन, प्रखंड तकनीकी प्रबंधक शांता कुमार चौधरी ने विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी. कार्यक्रम को रामानंद महतो, प्रमोद कुमार आदि प्रगतिशील कृषकों ने भी संबोधित किया. इस मौके पर विभाग के कृषि कॉर्डिनेटर, सहायक तकनीकी प्रबंधक, किसान सलाहकार थे.

## किसानों का तजुर्बा व वैज्ञानिकों की तकनीक सर्वोत्तम कृषि आधार : वीसी

**पूसा** . विकसित कृषि संकल्प अभियान के अंतर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र बक्सर में आयोजित कार्यक्रम को कुलपति डा पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने अपने संबोधन में बखूबी कृषि को वैज्ञानिकी तकनीक के बदौलत एक नगदी व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए किसानों से आग्रह किया . किसानों का तजुर्बा एवं वैज्ञानिकों की तकनीक सर्वोत्तम कृषि का आधार बताया . विकसित कृषि संकल्प अभियान बिहार के किसानों के लिए वरदान साबित हो रहा है . विकसित कृषि संकल्प अभियान 2025 का मुख्य लक्ष्य किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों से जोड़ना है . इस अभियान के जरिए किसानों को फसल की गुणवत्ता बढ़ाने और मिट्टी की सेहत सुधारने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है . कुलपति ने कहा कि किसानों के उन्नत होने से ही राष्ट्र विकसित होगा . इस दौरान कृषि विभाग के अधिकारियों ने किसानों को नये बीज और जैविक खाद के बारे में जानकारी दी . फसल विविधिकरण, वर्मी कम्पोस्ट और कृषि यंत्रों के इस्तेमाल की भी जानकारी साझा की गई . कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों के सवालों का जवाब देकर उनकी शंका दूर किया . मंत्री ने किसानों से सरकारी योजनाओं का लाभ लेने और आय दोगुनी करने की अपील की . मौके पर निदेशक आईसीएआर अटारी पटना डॉ अंजनी कुमार, निदेशक आईसीएआर-आरसीईआरडॉ अनूप दास एवं निदेशक, आईसीएआर-एनआरसीएलडॉ विकास दास ने कृषि नवाचारों को अपनाने के लिए प्रेरित किया .

मौसम पूर्वानुमान • 16-17 जून को कई जिलों में गरज के साथ हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है

# अगले दो दिनों तक ज्यादातर जिलों में हीट वेव की स्थिति बनी रहने की सम्भावना, उसके बाद काले बादल छाएंगे

भास्कर 15/6/25 पेज 17

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

अगले दो दिनों तक ज्यादातर जिलों में हीट वेव की स्थिति बनी रहने की सम्भावना है। उसके बाद उत्तर बिहार में आसमान में गरज वाले बादल बन सकते हैं, तथा तेज हवा के साथ हल्की वर्षा की सम्भावना है। 16 और 17 जून को अनेक स्थानों पर हलकी से मध्यम वर्षा हो सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 35-38 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 26-30 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 35 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है। इस बीच पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 20 से 25 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने का अनुमान है। मध्यम अवधि के धान के किस्मों को बीज स्थली में गिराएं। संतोष, सीता, सरोज, राजश्री, प्रभात, राजेन्द्र सुवासनी, राजेन्द्र कस्तुरी, राजेन्द्र भगवती, कामिनी, सुगंधा किस्में अनुशंसित है। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में रोपाई के लिए 800-1000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में बीज गिरावें। नर्सरी में क्यारी की चौराई 1.25-1.5 मीटर तथा लम्बाई सुविधा अनसार रखें।

धूप से बचाव के लिए ढक कर ले जाती मां

## किसानों के लिए वैज्ञानिक ने दिए सुझाव

वर्षा की सम्भावना को देखते हुए किसान धान का बीज नर्सरी में प्राथमिकता से गिरावें। मध्यम अवधि के लिए संतोष, सीता, सरोज, राजश्री, प्रभात, राजेन्द्र सुवासनी, राजेन्द्र कस्तुरी, राजेन्द्र भगवती, कामिनी, सुगंधा किस्में अनुशंसित है। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में रोपाई हेतु 800-1000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में बीज गिरावें। नर्सरी में क्यारी की चौड़ाई 1.25-1.5 मीटर तथा लम्बाई सुविधानुसार रखें। बीज को बिविस्टीन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से मिलाकर बीजोपचार करें। 10 से 12 दिनों के बिचड़े वाली नर्सरी से खर-पतवार निकालें। उंचास जमीन में धान की सीधी बुवाई के लिए राजेंद्र नीलम्, वंदना, राजेंद्र भगवती किस्म अनुशंसित है। जो किसान अब तक हल्दी एवं अदरक की बुआई नहीं किये हैं, वे अतिशीघ्र बुआई सम्पन्न करें। हल्दी की राजेन्द्र सोनिया, राजेन्द्र सोनाली किस्में तथा अदरक की मरान एवं नदिया किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित है।

*अगले दो दिनों तक ज्यादातर जिलों में हीट वेव की स्थिति बनी रहने की सम्भावना है। उसके बाद उत्तर बिहार में आसमान में गरज़ वाले बादल बन सकते हैं।* **- डॉ. ए. सत्तार, नोडल पदाधिकारी, मौसम विभाग, पूसा**

**कार्यक्रम** • कुलपति ने हाल ही में संपन्न हुए विकसित कृषि संकल्प अभियान की समीक्षा की

# सभी वैज्ञानिकों, कृषि विज्ञान केंद्रों के प्रधान तथा सभी विषय वस्तु विशेषज्ञों से कार्यक्रम में फीडबैक प्राप्त की

भास्कर न्यूज | पूसा

समीक्षा बैठक को संबोधित करते कुलपति।

समीक्षा बैठक में मौजूद वैज्ञानिक व अन्य।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में गुरुवार को संपन्न हुए विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम के दूसरे दिन एक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने इस पूरे अभियान की समीक्षा की। बैठक में कुलपति ने इस अभियान में लगें सभी वैज्ञानिकों, कृषि विज्ञान केंद्रों के प्रधान तथा सभी विषय वस्तु विशेषज्ञों से फीडबैक प्राप्त किया। बैठक के दौरान कुलपति ने सभी वैज्ञानिकों के कार्यों की तारीफ की और कहा कि यह एक मेगा अभियान था जिसमें देश भर के वैज्ञानिक, कृषि पदाधिकारी और किसान एक साथ पंद्रह दिनों तक एक दूसरे के साथ अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि बिहार का प्रदर्शन देश भर में सर्वश्रेष्ठ रहा है और इसकी सराहना दिल्ली के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी की है। उन्होंने कहा कि इस अभियान के दौरान बहुत सारे डाटा इकट्ठा किये गए है जिसका विश्लेषण किया जायेगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं विषय वस्तु विशेषज्ञों ने लगभग डेढ़ लाख से अधिक किसानों के साथ संवाद किया है।

## तकनीकी समस्याओं के बारे में भी वैज्ञानिकों से जाना

कुलपति ने अभियान के दौरान निकलकर सामने आने वाले कुछ तकनीकी समस्याओं के बारे में भी वैज्ञानिकों से विस्तार से जाना और सभी वैज्ञानिकों से कहा कि वे सचेत रहे ताकि आगे से इस तरह की कोई समस्या न आये। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. मयंक राय ने कहा कि किसानों की तरफ से कई फीडबैक विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ हैं जिन्हें सभी संबंधित विभागों को भेजा जाएगा।

भास्कर 14/6/25 पेज 17

# आईआईआरएफ की रैंकिंग में केंद्रीय कृषि विवि पूसा ने प्राप्त की 10वीं रैंक

## जल्द ही विवि देश ही नहीं विदेशों में भी अपनी पहचान स्थापित करेगा

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा ने आईआईआरएफ की रैंकिंग में फिर से एक बार महत्वपूर्ण रैंक हासिल किया है। देश भर के केंद्रीय विश्वविद्यालयों में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा को दसवां स्थान प्राप्त हुआ है। रैंकिंग में पहला स्थान जेएनयू, दूसरा स्थान दिल्ली विश्वविद्यालय तथा तीसरा रैंक बीएचयू बनारस ने हासिल किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने रैंकिंग पर खुशी जताते हुए विश्वविद्यालय के सभी वैज्ञानिकों तकनीकी कर्मचारियों,

कृषि विवि पूसा।

प्रशासनिक कर्मचारियों और संविदा कर्मियों को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि विवि के लिए यह एक गौरव की बात है कि सभी केंद्रीय विवि में दसवीं जबकि देश भर के कृषि विवि में नौवीं रैंक पूसा विवि ने प्राप्त किया है। उन्होंने कहा कि यह सब लोगों के सम्मिलित प्रयास का ही परिणाम है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को मिलकर इसी तरह तेज प्रगति करना चाहिए ताकि विश्वविद्यालय देश ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अच्छा रैंक हासिल कर सके। कुलसचिव डॉ. मृत्युंजय कुमार ने देश के विभिन्न केंद्रीय विवि में पूसा विवि को मिले दसवीं रैंक पर सभी कर्मचारियों को बधाई दी और कहा कि विश्वविद्यालय में कुलपति के नेतृत्व में पिछले दो वर्षों में अनुसंधान, शिक्षा और प्रसार के क्षेत्र में तीव्र प्रगति हो रही है। उन्होंने कहा कि प्रगति की इस रफ्तार से जल्द ही विवि देश ही नहीं विदेशों में भी अपनी पहचान स्थापित कर सकेगा।

भास्कर 15/6/25 पेज 18

खेती-किसानी • मौजूदा समय जामुन की बागबानी करने के लिए उपयुक्त : कृषि वैज्ञानिक

# एक हेक्टेयर में जामुन लगा कर किसान 20 लाख तक का सालाना आय कर सकते हैं

भास्कर न्यूज | पूसा

अपने अंदर तमाम तरह के औषधीय गुणों को समेटे जामुन के फल का सेवन मानव के स्वास्थ्य और शरीर दोनों के लिए अत्यंत लाभकारी हैं। मौजूदा समय जामुन की बागबानी लगाने का समय हैं। बिहार के किसान जामुन की बागबानी लगाकर बेहतर उत्पादन और मुनाफा दोनों प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, प्रोफेसर एवं प्रमुख फल रोग विशेषज्ञ डॉ. एस.के. सिंह ने दी। उन्होंने कहा कि जामुन में औषधीय गुणों की भरमार होने के कारण आज प्रायः लोग जामुन को पसंद करते हैं। जामुन के फल का उपयोग जैम, जेली, शरबत आदि बनाने में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि जामुन के नए बागों को लगाने के लिए जून, जुलाई और अगस्त का महीना सर्वोत्तम माना जाता है। इन दिनों बाजार में भी जामुन के

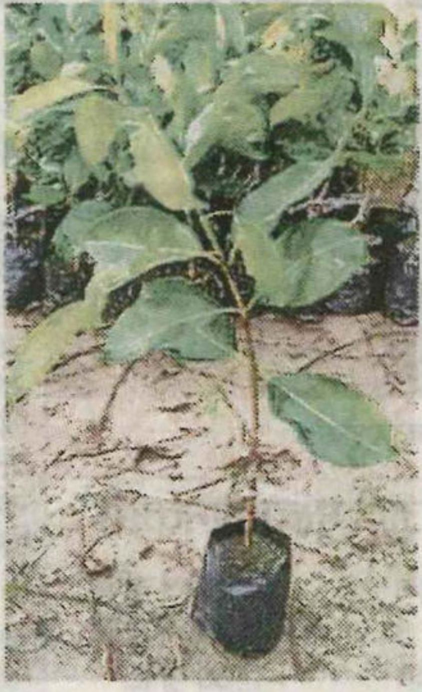

नर्सरी में लगाएं गए जामुन के पौधें।

फल अच्छे कीमत पर बिक रहे हैं जिसके कारण किसान अब इसकी खेती के प्रति जागरूक हो रहे है और इसके बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना चाह रहे है। उन्होंने बताया कि जामुन की बागबानी लगाकर किसान एक हेक्टेयर से तकरीबन 20 लाख रुपये तक का मुनाफा कमा सकते हैं। उन्होंने बताया कि जामुन के वृक्ष को उष्ण कटिबंधीय जलवायु वाले प्रदेशों में आसानी से उगाया जा सकता है। जामुन का पूर्ण विकसित पेड़ लगभग 20 से 25 फीट या उससे भी अधिक लंबा होता है। इसकी खेती के लिए जल निकास वाली दोमट मिट्टी खासकर काफी उपयुक्त मानी जाती है। भारत में इसे ठंडे प्रदेशों को छोड़कर कहीं पर भी लगाया जा सकता है। जामुन के पेड़ पर सर्दी, गर्मी और बरसात का ऐसे कोई खास असर देखने को नहीं मिलता हैं। लेकिन जाड़े में पड़ने वाला पाला और गर्मियों में अत्यधिक तेज धूप इसको नुकसान पहुंचा सकते है। उन्होंने बताया कि जामुन के फलों को पकने में वर्षा का खास योगदान होता है लेकिन ठीक इसके विपरीत अगर बारिश फूल बनने के दौरान हो जाएं तो यह जामुन को नुकसान पहुंचा सकती है।

## इन किस्मों की बागवानी किसानों के लिए लाभकारी

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि देश के विभिन्न कृषि संस्थानों के द्वारा हाल के वर्षों में जामुन के कई उन्नत किस्मों को विकसित किया हैं। किसान काथा, भादो, राजा, गोमा, प्रियंका आदि जैसे जामुन के किस्मों की बागबानी लगाकर बेहतर उत्पादन और मुनाफा दोनों प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया की सेंट्रल फॉर सब ट्रॉपिकल हॉर्टिकल्चर संस्थान लखनऊ के द्वारा विकसित किया गया जामुन का किस्म सीआईएसएच जे 45 एवं सीआईएसएच जे 37 काफी उम्दा किस्म हैं। इस किस्म के जामुन के फलों के अंदर बीज नहीं होते हैं। उन्होंने बताया कि उपरोक्त प्रजातियों के अलावे नरेंद्र 6, कोंकण भादोली, बादाम, जत्थी, राजेन्द्र 1 आदि जामुन के कई और किस्में हैं जिन्हें किसान अलग अलग प्रदेशों में उगाकर अच्छी पैदावार ले सकते हैं।

## जामुन के फल में गुणों का होता है भंडार

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि जामुन के फल में गुणों का भंडार है। इसमें कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम, फास्फोरस के अलावे विटामिन और फाइबर जैसे कई महत्वपूर्ण पोषक तत्व पाएं जाते हैं। जामुन में एंटी ऑक्सीडेंट्स भी भरपूर मात्रा में पाएं जाते हैं। इसके सेवन से जहां शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है। वही जामुन का सिरका बनाकर बराबर मात्रा में पानी मिलाकर लेने से न सिर्फ भूख बढ़ती है बल्कि कब्ज की समस्या भी दूर हो जाती है। उन्होंने बताया कि मधुमेह के उपचार में भी जामुन काफी लाभकारी हैं। इन सबके अलावे जामुन एनिमिया के उपचार, मसूड़ों और लीवर को फायदा पहुंचाने, पथरी और गठिया के उपचार, त्वचा की रंगत बढ़ाने आदि में भी काफी मददगार होता है।

दैनिक जागरण 14/6/25 पेज 4

# विकसित कृषि संकल्प अभियान में बिहार सर्वश्रेष्ठ

## डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति ने की केविके के प्रधान व विशेषज्ञों के साथ समीक्षा बैठक

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डा. पीएस पांडेय ने विकसित कृषि संकल्प अभियान की समीक्षा बैठक की। विज्ञानियों और कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रधान तथा सभी विषय वस्तु विशेषज्ञों के साथ अलग अलग समीक्षा बैठक की। कुलपति ने सभी विज्ञानियों के कार्यों की तारीफ की और कहा कि यह एक मेगा अभियान था जिसमें देश भर के विज्ञानी, कृषि पदाधिकारी और किसान एक साथ पंद्रह दिनों तक एक दूसरे के साथ अपने विचारों को साझा किया। बिहार का प्रदर्शन देश भर में सर्वश्रेष्ठ रहा। आज इसकी सराहना दिल्ली के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी की। उन्होंने कहा कि इस अभियान के दौरान बहुत सारे डाटा इकट्ठा कर लिया गया है जिसका विश्लेषण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के विज्ञानियों एवं विषय वस्तु विशेषज्ञों ने लगभग डेढ़ लाख से अधिक लोगों के साथ संवाद किया। डा. पांडेय ने कार्यक्रम के दौरान आये कुछ तकनीकी समस्याओं के बारे में भी विस्तार से चर्चा की और सभी वैज्ञानिकों से मिलकर सचेत रहने को कहा ताकि आगे इस तरह की कोई समस्या न आए। निदेशक प्रसार शिक्षा डा. मयंक राय ने कहा कि किसानों की तरफ से कई फीडबैक विश्वविद्यालय को प्राप्त हुए हैं जिन्हें सभी संबंधित विभागों को भेजा जाएगा। कुलसचिव डा. मृत्युंजय कुमार ने अभियान के दौरान जनप्रतिनिधियों के सहयोग की सराहना की और कहा कि विश्वविद्यालय में को हमेशा जनप्रतिनिधियों का सहयोग मिलता रहता है। विकसित कृषि संकल्प अभियान के नोडल पदाधिकारी डा रत्नेश झा ने कार्यक्रम के दौरान पंद्रह दिनों की गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी और धन्यवाद ज्ञापन किया।

संबोधित करते कुलपति • जागरण

बैठक में शामिल विज्ञानी व पदधारक • जागरण

- दिल्ली के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी की विश्वविद्यालय के शानदार प्रदर्शन की सराहना : कुलपति
- विश्वविद्यालय के विज्ञानियों व विषय विशेषज्ञों ने लगभग डेढ़ लाख लोगों के साथ किया संवाद

# आइआइआरएफ रैंकिंग में विश्वविद्यालय को 10वां स्थान

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा ने आईआईआरएफ (भारतीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क) में देश भर के केंद्रीय विश्वविद्यालयों में दसवां स्थान प्राप्त हुआ है। रैंकिंग में पहला स्थान जेएनयू, दूसरा स्थान दिल्ली विश्वविद्यालय, तथा तीसरा रैंक बीएचयू बनारस ने हासिल किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति डा. पीएस पांडेय ने रैंकिंग पर खुशी जताते हुए विश्वविद्यालय के सभी वैज्ञानिकों तकनीकी कर्मचारियों, प्रशासनिक कर्मचारियों और संविदा कर्मियों को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के लिए यह एक गौरव की बात है कि सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों में दसवीं जबकि देश भर के कृषि विश्वविद्यालयों में नौवां रैंक पर विश्वविद्यालय ने प्राप्त किया है। उन्होंने कहा कि यह सब लोगों के सम्मिलित प्रयास का ही परिणाम है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षको , वैज्ञानिकों और कर्मचारियो को मिलकर इसी तरह प्रगति करना चाहिए ताकि विश्वविद्यालय देश ही नहीं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अच्छा रैंक हासिल कर सके। कुलसचिव डा. मृत्युंजय कुमार ने देश में के विश्वविद्यालय में दसवीं रैंक हासिल करने पर सभी कर्मचारियों को बधाई दी उन्होंने कहां कि प्रगति की इस रफ्तार से जल्द ही विश्वविद्यालय देश ही नहीं विदेशों में भी अपनी पहचान स्थापित कर सकेगा। विश्वविद्यालय की रैंकिंग को लेकर निदेशक शिक्षा डा. उमाकांत बेहरा, निदेशक अनुसंधान डा. एके सिंह, निदेशक प्रसार डा. मयंक राय समेत विभिन्न वैज्ञानिकों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने भी कुलपति समेत एक दूसरे को बधाई दी और कहा कि इस तरह की रैंकिंग आने से काम करने वाले शिक्षकों, वैज्ञानिकों और कर्मचारियों का उत्साहवर्धन होता है। 2024 में इसकी रैंकिंग 29 थी। एक साल बाद इसने 19 पायदान छलांग लगाते हुए दसवां स्थान प्राप्त किया।

विश्वविद्यालय परिसर • जागरण

दैनिक जागरण 14/6/25 पेज 5

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 19 जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस दौरान उत्तर बिहार के अधिकतर जिलों में हीटवेव की स्थिति बनी रहने की आशंका है। उसके बाद आसमान में बादल बन सकते हैं तथा तेज हवा के साथ हल्की वर्षा भी हो सकती है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान अधिकतम तापमान 35-38 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 26-30 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 14 जून | 38.8 | 27.5 |
| 15 जून | 38.8 | 27.5 |
| | दरभंगा | |
| 14 जून | 39.0 | 27.5 |
| 15 जून | 38.5 | 27.0 |
| | पटना | |
| 14 जून | 39.5 | 29.0 |
| 15 जून | 39.5 | 29.0 |

डिग्री सेल्सियस में

# अगले दो दिनों तक हीट वेव जारी रहने की संभावना

हिन्दुस्तान 14/6/25 पेज 4

- 16 के बाद मानसून प्रवेश करने की संभावना
- 19 जून तक पूर्वानुमान विभाग ने किया जारी

पूसा, निज संवाददाता। उत्तर बिहार के अधिकतर जिलों में अगले दो दिनों तक हीट वेव की स्थिति बनी रहने की संभावना है। उसके बाद तेज हवा के साथ हल्की वर्षा हो सकती है। इस क्रम में 16-17 जून को अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है।

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम वैज्ञानिक ने शुक्रवार को 19 जून तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। जिसके अनुसार पूर्वानुमान की अवधि में 20 से 25 किमी. प्रति घंटा की गति से पुरवा हवा चल सकती है। इस दौरान सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 90 एवं दोपहर में 35 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है। पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 35 से 38 डिग्री एवं न्यूनतम 26 से 30 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। मानसून के संबंध में विवि के मौसम वैज्ञानिक डॉ.ए.सत्तार ने बताया कि वर्तमान में वह बंगाल के उतरी क्षेत्र में रूका है।

अगले 3-4 दिनों में मानसून प्रवेश कर जाने की संभावना है। उन्होंने बताया कि 16 जून के बाद बिहार में मानसून के आने की संभावना बन रही है।

प्रभात खबर 14/6/25 पेज 4

# विकसित कृषि संकल्प अभियान एक मेगा अभियान : कुलपति

आयोजन

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने विकसित कृषि संकल्प अभियान की समीक्षा की. इसमें वैज्ञानिकों, कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रधानों व विषय वस्तु विशेषज्ञों के साथ समीक्षा की गयी. फीडबैक प्राप्त किया गया. कुलपति डॉ पांडेय ने बैठक के दौरान वैज्ञानिकों के कार्यों की तारीफ की. कहा कि यह एक मेगा अभियान था. जिसमें देश भर के वैज्ञानिक, कृषि पदाधिकारी और किसान एक साथ पंद्रह दिनों तक एक-दूसरे के साथ अपने विचार साझा किये. उन्होंने कहा कि बिहार का प्रदर्शन देश भर में सर्वश्रेष्ठ रहा है.

इसकी सराहना दिल्ली के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी की है. इस अभियान के दौरान बहुत सारे डाटा इकट्ठा कर लिये गये हैं. जिसका विश्लेषण किया जायेगा. विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं विषय वस्तु विशेषज्ञों ने लगभग डेढ़ लाख से अधिक लोगों के साथ संवाद किया है. डॉ पांडेय ने कार्यक्रम के दौरान आये कुछ तकनीकी समस्याओं के बारे में भी विस्तार से चर्चा की. वैज्ञानिकों से मिलकर सचेत रहने को कहा. ताकि आगे इस तरह की कोई समस्या न आये. निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ने कहा कि किसानों की तरफ से कई फीडबैक विश्वविद्यालय को प्राप्त हुए हैं. जिन्हें सभी संबंधित विभागों को भेजा जायेगा. कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार ने अभियान के दौरान जनप्रतिनिधियों के सहयोग की सराहना की. विकसित कृषि संकल्प अभियान के नोडल पदाधिकारी डा रत्नेश कुमार झा ने गतिविधियों की जानकारी दी.

संबोधित करते कुलपति डा पीएस पांडेय.

**आरपीसीयू पूसा देशभर में मिला दसवां रैंकः पूसा.** डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा ने आईआईआरएफ रैंकिंग में महत्वपूर्ण रैंक हासिल किया है. देशभर के केंद्रीय विश्वविद्यालयों में डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय को दसवां स्थान प्राप्त हुआ है. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि यह एक गौरव का पल है. उन्होंने कहा कि यह सम्मिलित प्रयास का परिणाम है. कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार ने देश में के विश्वविद्यालय में दसवीं रैंक हासिल करने पर कहा कि विश्वविद्यालय में कुलपति के नेतृत्व में पिछले दो वर्षों में अनुसंधान, शिक्षा और प्रसार के क्षेत्र में तीव्र प्रगति हो रही है. उन्होंने कहा कि प्रगति की इस रफ्तार से जल्द ही विश्वविद्यालय देश ही नहीं विदेशों में भी अपनी पहचान स्थापित कर सकेगा. निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, निदेशक प्रसार डॉ मयंक राय आदि ने कहा कि इस तरह की रैंकिंग आने से काम करने वाले शिक्षकों, वैज्ञानिकों और कर्मचारियों का उत्साहवर्धन होता है.

# आई आई आरएफ के रैंकिंग में डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीयकृषि विश्वविद्यालय को मिला दसवां स्थान

**समस्तीपुर।** डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीयकृषि विश्वविद्यालय पूसा ने आई आईआरएफ रैंकिंग में फिर से एक बार महत्वपूर्ण रैक को हासिल किया है। देश भर के केंद्रीय विश्वविद्यालयों में डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीयकृषि विश्वविद्यालय को दसवां स्थान मिला है। इस रैंकिंग में पहला स्थान जेएनयू, दूसरा स्थान दिल्ली विश्वविद्यालय, तथा तीसरा रैक बीएचयू बनारस ने हासिल किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने रैंकिंग पर खुशी जताते हुए विश्वविद्यालय के सभी वैज्ञानिकों तकनीकी कर्मचारियों, प्रशासनिक कर्मचारियों एवं संविदा कर्मियों को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के लिए यह एक गौरव की बात है कि सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों में दसवीं जबकि देश भर केकृषि विश्वविद्यालयों में नौवीं रैक पर विश्वविद्यालय ने स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने कहा कि यह सब लोगों के सम्मिलित प्रयास का परिणाम है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षको , वैज्ञानिकों और कर्मचारियो को मिलकर इसी तरह से तेज प्रगति करना चाहिए ताकि विश्वविद्यालय देश ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अच्छा रैक हासिल कर सके। कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार ने देश में के विश्वविद्यालय में दसवीं रैक हासिल करने पर सभी कर्मचारियों को बधाई दी और कहा कि विश्वविद्यालय में कुलपति के नेतृत्व में पिछले दो वर्षो में अनुसंधान शिक्षा और प्रसार के क्षेत्र में तीव्र प्रगति हुई है ।उन्होंने कहा कि प्रगति की इस गति से जल्द ही विश्वविद्यालय देश ही नहीं विदेशों में भी अपनी पहचान स्थापित कर सकेगा। विश्वविद्यालय की रैंकिंग को लेकर निदेशक शिक्षा डॉ उमाकांत बेहरा , निदेशक अनुसंधान डॉ ए के सिंह , निदेशक प्रसार डॉ मयंक राय समेत विभिन्न वैज्ञानिकों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने भी कुलपति समेत एक दूसरे को बधाई दी और कहा कि इस तरह की रैंकिंग आने से काम करने वाले शिक्षकों, वैज्ञानिकों और कर्मचारियों का उत्साहवर्धन होता है।

Rashtriya Sahara 14-06-2025

दैनिक जागरण- 15.06.2025

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 19 जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस दौरान उत्तर बिहार के अधिकतर जिलों में हीटवेव की स्थिति बनी रहने की आशंका है। उसके बाद आसमान में बादल बन सकते हैं तथा तेज हवा के साथ हल्की वर्षा भी हो सकती है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान अधिकतम तापमान 35-38 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 26-30 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 15 जून | 39.0 | 28.0 |
| 16 जून | 39.0 | 28.5 |
| | दरभंगा | |
| 15 जून | 39.0 | 28.5 |
| 16 जून | 39.5 | 28.5 |
| | पटना | |
| 15 जून | 40.0 | 29.0 |
| 16 जून | 40.0 | 29.0 |

डिग्री सेल्सियस में

छापेमारी की जा रही है। परिजनों के बिंदुओं पर तहकीकात कर रही है।

हिन्दुस्तान 15/6/25 पेज नं

# मौसम का सबसे गर्म दिन रहा शनिवार, 41 पर पारा

## मौसम का मिजाज

**05** डिग्री सामान्य से अधिक हुआ अधिकतम तापमान

- गर्मी से दोपहर में पसर जा रहा है सन्नाटा

**पूसा, निज संवाददाता।** गर्मी अपने चरम पर है, झुलसा देने वाली तेज पुरवा हवा लोगों को सता रही है। चापाकल के हलक सुख रहे हैं। समरसेबल पंप भी अब हांफने लगा है। बिजली आपूर्ति करने वाले ट्रांसफॉर्मर भी गर्म हो ठंडक की मांग करने लगे है।

मानसून भी अपने निर्धारित तारीख से आगे की ओर टल रहा है। यह हालात लगातार बढ़ रही है। ऐसे में लोगों का घर से निकलना अब मुश्किल हो रहा हैं। मिली जानकारी के अनुसार शनिवार को दिन का तापमान 41 डिग्री सेल्सियस रहा। जो सामान्य से 5.2 डिग्री अधिक है। न्यूनतम तापमान भी अपने उच्चतम स्कोर के साथ 27.9 डिग्री पहुंच गया। मौसम विभाग के अनुसार यह सामान्य से करीब 1.6 डिग्री अधिक है। इस दौरान पुरवा हवा की गति करीब 11 किमी प्रति घंटा की गति से रही। सुबह 7 बजे सापेक्ष आद्रता 77 और दोपहर 2 बजे 53 प्रतिशत रहा। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम वैज्ञानिक डॉ ए सत्तार ने बताया कि आज दिन का तापमान इस सीजन का सबसे अधिक 41 डिग्री है। जबकि सिवान में 43 डिग्री तक तापमान है।

भास्कर 16/6/25 पेज 18

**कृषि** • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक ने दी खेती की जानकारी

# झील और तालाबों के अलावा अब खेतों में भी किसान कर पाएंगे मखाने की खेती

भास्कर न्यूज़ | पूसा

मौजूदा समय में मखाना की खेती किसानों के लिए काफी लाभकारी साबित हो रही है। बिहार में इस खेती की शुरुआत दरभंगा जिले से हुई थी। आज मखाने की खेती कर दरभंगा, मधुबनी, सहरसा, पूर्णिया, कटिहार, किशनगंज के अलावे पश्चिम बंगाल के मालदा जिले के हजारों किसान न सिर्फ बेहतर से बेहतर आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। बल्कि इन किसानों ने हजारों हेक्टेयर जलजमाव वाले अपने बेकार परे जमीन को भी उपजाऊ बनाने का काम किया है। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने बताया कि फिलहाल देश में लगभग 15 हजार हेक्टेयर के क्षेत्र में मखाने की खेती हो रही है। देश में हो रहे मखाना की कुल खेती में से लगभग 80 से 90 फीसदी उत्पादन जहां अकेले बिहार के किसानों पर निर्भर करता हैं। वहीं बिहार के खासकर मिथिलांचल में 70 फीसदी के हिस्से में मखाने का उत्पादन किया जा रहा हैं। उन्होंने बताया कि मिथिलांचल में प्रति वर्ष लगभग एक लाख बीस हजार टन मखाने के बीज का उत्पादन होता है। जिससे कुल 40 हजार टन मखाने का लावा प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि मखाने से बनाया जाने वाला लजीज व्यंजन जहां खाने में काफी स्वादिष्ट होता है। वहीं किसानों के लिए इसकी खेती कष्टकारी और श्रम साध्य होती है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2002 में दरभंगा के निकट बासुदेवपुर गांव में राष्ट्रीय मखाना शोध केंद्र का स्थापना किया गया था। इस केंद्र का प्रमुख उद्देश्य किसानों के द्वारा मखाने की खेती को वैज्ञानिक ढंग से कराया जाना हैं। दरभंगा में स्थित यह अनुसंधान केंद्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतरगत कार्य करता है।उन्होंने कहा कि मखाना के निर्यात से देश को प्रतिवर्ष 22 से 25 करोड़ की विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। मखाना से जुड़े व्यापारी मखाने को बिहार से दिल्ली, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में भेजते हैं।उन्होंने बताया कि भारत के अलावे मखाने की खेती चीन, जापान, कोरिया और रूस जैसे देशों में भी की जा रही है।

पानी पर तैरते मखाना के पौधे।

## सामान्य खेतों में ऐसे करें मखाने की खेती

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि मखाने की खेती ज्यादातर तालाबों या तालों में की जाती है। परंतु अब इसकी खेती पानी लगने वाले या अन्य तरह के खेतों में भी आसानी से की जा सकती हैं। जलजमाव या अन्य तरह के खेतों में इसकी खेती करने के लिए किसानों को खेत में 6 इंच से लेकर 9 इंच तक पानी जमा करके रखना होगा। किसान चाहें तो खेतों में पंपसेट के माध्यम से पानी लगाकर मखाने के बीज की रोपाई कर सकते हैं। खेतों में बीजारोपण से पहले खरपतवार निकालना जरूरी होता है। उन्होंने बताया कि अप्रैल माह में मखाना के पौधों में फूल आने लगते हैं। फूल पौधों पर 3 से 4 दिन तक टिके रहते हैं। और इसी बीच पौधों में बीज बनाने की प्रक्रिया चलती रहती हैं। एक से दो महीनों में बीज फलों में बदलने लगते हैं। अप्रैल से लेकर जून जुलाई माह आते आते मखाने के फल 24 से 48 घंटे तक पानी की सतह पर तैरने लगते हैं और फिर नीचे जा बैठते हैं।

## अच्छी सेहत के लिए जरूरी है मखाने का सेवन

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसानों द्वारा परंपरागत तकनीक से की जाने वाली मखाने की खेती में कृषि रसायनों का प्रयोग न के बराबर होता है। इस वजह से अक्सर लोग मखाने को आर्गेनिक भोजन के रूप में प्राप्त करना चाहते है। उन्होंने बताया कि मखाने में प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेट, नमी, वसा, खनिज, लवण, फॉस्फोरस, लौह पदार्थ आदि जैसे विभिन्न पौष्टिक गुण पर्याप्त मात्रा में पाएं जाते है। शोध-कर्ताओं के अनुसार मखाना खाने से जहां हार्टअटैक जैसी गंभीर बीमारियों से बचा जा सकता हैं। वहीं मखाने में भरपूर मात्रा में पाएं जाने वाले कैल्शियम से जोड़ों का दर्द भी ठीक हो जाता हैं।

## विभूतिपुर में छात्रा के निधन पर जताया शोक

भास्कर न्यूज़ | विभूतिपुर

थाना क्षेत्र के आलमपुर डीह वार्ड 13 निवासी पत्रकार राम कुमार महतो की करीब 20 वर्षीय पुत्री शोभा कुमारी का रविवार की अहले सुबह आकस्मिक निधन हो गया। वह बीए पार्ट टू की छात्रा थी। बताया जाता है कि शनिवार की देर संध्या अचानक तबीयत बिगड़ गई। इसके बाद परिजनों ने दलसिंहसराय के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। वहां इलाज के दौरान उसकी मृत्यु हो गई। उसे हर्ट की समस्या होना बताया जा रहा है। इसके बाद शोक की लहर दौड़ गई। शोक संतप्त परिवार को सांत्वना देने के लिए क्षेत्र के गणमान्य लोग उनके आवास पर पहुंचते रहे। साहित्यकार और शिक्षक नेता राजा राम महतो, पत्रकार विनय भूषण, अशोक कुमार महतो, विनय कुमार राय,पीएन झा, मनोरंजन प्रसाद मिश्र,राजेश कुमार, धर्मेन्द्र कुमार, किसान सलाहकार प्रेमचंद सिंह, शिक्षक पप्पू कुमार राम, शिक्षा सेवक संघ के प्रखंड अध्यक्ष राजाराम महतो, पूर्व मुखिया चंद्रदेव प्रसाद सिंह, और हरे राम सिंह , भाजपा नेता अरविंद कुमार कुशवाहा, रूपांजली कुमारी, कृष्णदेव प्रसाद सिंह,जन सुराज के श्याम किशोर कुशवाहा, शम्भू कुमार, मुखिया भोला शंकर, साहित्यकार चांद मुसाफिर, स्वयं प्रभा, राजीव गौतम, राघवेंद्र प्रसाद राघव, प्रियंका कुशवाहा भी थे।

**जनता की आवाज**

## बजरंगी चौक से कष्टहारा जाने वाली सड़क जर्जर

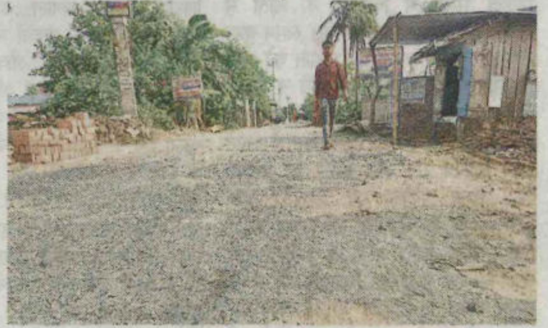

बजरंगी चौक-कष्टहारा संपर्क पथ ।

भास्कर न्यूज़ | विद्यापतिनगर

प्रखंड अंतर्गत एनएच 122बी पथ के बजरंगी चौक चौराहा से कष्टहारा जाने वाली सड़क करीब एक दशक से जर्जर स्थिति में है, जिस कारण सैकड़ों लोगों को प्रतिदिन आवागमन में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। बताया गया कि करीब एक दशक पूर्व सड़क का कालीकरण कराया गया था, लेकिन बीते पांच साल से भी अधिक समय से सड़क पूरी तरह जर्जर बनी हुई है, लेकिन इसकी मरम्मती नहीं कराई गई है, जिससे स्थानीय लोग सहित आम राहगीरों में आक्रोश व्याप्त है। विदित हो कि यह सड़क चिनगिया बांध को एनएच 122 पथ से जोड़ती है, जिस रास्ते वाजिदपुर एवं साहिट पंचायत के आलम आसपास के लोग परेशान हैं।

**मेरा सवाल**

बदहाल सड़क पर चलना मुश्किल, नहीं दे रहे ध्यान

**चुप्पी तोड़ो**

दियारा जाने के लिए लोग करते हैं इस पथ का प्रयोग

भास्कर 16/6/25 पेज 15

रखें ध्यान • आम उत्पादक व व्यापारी फलों को पकाने के लिए कर रहे खतरनाक रसायनों का उपयोग

# कार्बाइड से पकाए गए आम से बीमारियों का खतरा, वैज्ञानिक विधि सबसे सुरक्षित

भास्कर न्यूज | पूसा

आम को फलों का राजा कहा जाता है। लेकिन अधिक मुनाफा कमाने की होड़ में कुछ व्यापारी कच्चे आमों को औद्योगिक ग्रेड कैल्शियम कार्बाइड जैसे खतरनाक रसायनों से पकाने लगे हैं। यह प्रवृत्ति बेहद चिंताजनक है। कैल्शियम कार्बाइड में आर्सेनिक, सीसा और फॉस्फोरस जैसे जहरीले तत्व होते हैं। इससे लीवर, किडनी और तंत्रिका तंत्र पर बुरा असर पड़ता है। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार भारत सहित कई देशों में कैल्शियम कार्बाइड से फल पकाने पर कानूनी रोक है। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI) ने भी इस पर प्रतिबंध लगाया है। ऐसे में किसानों और व्यापारियों को वैज्ञानिक और सुरक्षित तकनीकों से फल पकाने की जानकारी होना जरूरी है। वैज्ञानिकों के अनुसार फल की तुड़ाई सही परिपक्व अवस्था में होनी चाहिए। अपरिपक्व फल स्वाद और पोषण में कमजोर होते हैं। पकाने के लिए सबसे सरल और सुरक्षित तरीका है प्राकृतिक एथिलीन विधि। इसमें पहले से पके आम, केला या पपीता को कच्चे फलों के साथ एयरटाइट कंटेनर में रखा जाता है। इससे निकलने वाली एथिलीन गैस फल को प्राकृतिक रूप से पकाती है। दूसरी तकनीक है भूसा विधि। इसमें कच्चे फलों को धान या गेहूं के भूसे में एक सप्ताह तक ढककर रखा जाता है। नमी और गर्मी से फल समान रूप से पकते हैं। तीसरी तकनीक ईथरल विधि है।

## कई देशों में फलों को पकाने के कैल्शियम कार्बाइड के प्रयोग पर प्रतिबंधित

बाजारों में बिक रहा आम।

### आम पकाने की सुरक्षित और वैज्ञानिक विधियां

एक और तकनीक है इथाइलिन वाष्प विधि। इसमें 10 एमएल ईथरल और 2 ग्राम सोडियम हाइड्रॉक्साइड को 5 लीटर पानी में मिलाकर खुले बर्तन में रखा जाता है। इसे बंद कमरे में फलों के पास रखा जाता है। कमरे का एक-तिहाई भाग खुला रहता है। 12 से 24 घंटे में फल पक जाते हैं। वहीं एक अन्य तकनीक है प्रमाणिक एथिलीन गैस स्प्रे विधि। इसमें 100 से 150 पीपीएम एथिलीन स्प्रे करने पर 48 घंटे में फल पक जाते हैं।

### बाजार से खरीदे गए आम के लिए जरूरी सावधानी

बाजार से खरीदे आम को खाने से पहले सावधानी जरूरी है। एक लीटर पानी में 10 से 15 एमएल सिरका डालकर आम को एक घंटे तक भिगोएं। फिर धोकर खाएं। नीम के पानी में भी एक घंटे तक भिगोकर धो सकते हैं। हल्के गर्म पानी में नमक मिलाकर आम को एक से डेढ़ घंटे तक भिगोने से भी कार्बाइड का असर कम होता है। सबसे अच्छा तरीका है कि कच्चा आम खरीदकर भूसे में रखकर पकाएं।

कहते हैं कृषि वैज्ञानिक व डॉक्टर

### वैज्ञानिक विधियों से पकाए गए फल की गुणवत्ता व स्वाद काफी बेहतर : वैज्ञानिक

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, प्रोफेसर एवं प्रमुख फल रोग विशेषज्ञ डॉ. एस.के. सिंह ने बताया कि वैज्ञानिक विधियों से पकाये गए फल में गुणवत्ता काफी बेहतर होती है। फल में स्वाद और पोषण बना रहता है जिससे उपभोक्ताओं में एक विश्वास उत्पन्न होता है। उन्होंने किसानों, बागवानों और फल व्यापारियों से अपील किया कि वे अवैध और हानिकारक रसायनों का त्याग करें तथा वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर ना केवल उपभोक्ता स्वास्थ्य की रक्षा करें बल्कि बाजार में अपने उत्पाद की साख भी बढ़ाएं।

### श्वसन तंत्र, पाचन तंत्र, नर्वस तंत्र को डैमेज करता है कार्बाइड से पका फल : डॉक्टर

वहीं समस्तीपुर के फिजिशिएन डॉक्टर ए के आदित्या ने बताया कि कैल्शियम कार्बाइड से पका हुआ आम शरीर के लिए काफी खतरनाक है। इस आम के खाने से शरीर के हर अंग को डैमेज करता है। श्वसन तंत्र, पाचन तंत्र, नर्वस तंत्र को डैमेज करता है। लीवर पर ज्यादा असर करता है। वहीं किडनी को भी डैमेज करता है। वहीं गर्भवती महिला ऐसे कार्बाइड से पके आम खाती हैं तो उन्हें भी काफी हानि पहुंचाता है। बच्चों को भी काफी हार्म पहुंचाता है।

दैनिक जागरण 16/6/25 पेज 5

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 19 जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस दौरान उत्तर बिहार के अधिकतर जिलों में हीटवेव की स्थिति बनी रहने की आशंका है। उसके बाद आसमान में बादल बन सकते हैं तथा तेज हवा के साथ हल्की वर्षा भी हो सकती है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान अधिकतम तापमान 35-38 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 26-30 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 16 जून | 42.0 | 30.0 |
| 17 जून | 42.0 | 29.5 |
| | दरभंगा | |
| 16 जून | 42.0 | 29.5 |
| 17 जून | 41.5 | 29.5 |
| | पटना | |
| 16 जून | 43.0 | 31.0 |
| 17 जून | 43.0 | 31.0 |

डिग्री सेल्सियस में

प्रभात खबर 16/6/25 पेज 4

# केंद्रीय कृषि विवि में एग्री जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन की शुरुआत

**प्रतिनिधि, पूसा**

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय देशभर में कृषि शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रसार के क्षेत्र में सर्वप्रथम एक मजबूत पहचान बना चुका है. एग्री जर्नलिज्म में नामांकन के लिए किसी भी विषय में स्नातक होना चाहिए. एग्री जर्नलिज्म के कोर्स के दौरान छह महीने की पढ़ाई और छह महीने की प्रैक्टिकल ट्रेनिंग कराई जाती है. कोर्स के बाद प्लेसमेंट भी कराया जाता है. एग्री जर्नलिज्म में नामांकन के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर ही परीक्षा ली जाती है. फिलहाल इन सभी कोर्स में नामांकन की प्रक्रिया चल रही है. जानकारी के अनुसार नामांकन के लिए अंतिम तिथि भी विस्तारित की जा रही है. स्थानीय लोगों के लिए विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने के लिए यह एक अच्छा विकल्प है. दिलचस्प बात तो यह है कि लोगों के मन में अक्सर यह सवाल रहता है आखिर इस विश्वविद्यालय में कौन-कौन से विषयों की पढ़ाई होती है. कुलपति डा पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न कोर्स और विषयों के बारे में प्रभात खबर से बातचीत की. बताया कि विश्वविद्यालय में पीजी डिप्लोमा में कृषि पत्रकारिता एवं आधुनिक कृषि से जुड़े अन्य कोर्स कराये जाते हैं. कृषि पत्रकारिता के बाद छात्रों को विश्वविद्यालय के स्टूडियो, विभिन्न चैनलों और अखबारों में नौकरी मिल सकती है. कोर्स के बाद विश्वविद्यालय द्वारा छात्रों को सिर्फ पारंपरिक कृषि की पढ़ाई ही नहीं कराई जाती, बल्कि उन्हें आधुनिक इंडस्ट्री से जुड़े कोर्स भी उपलब्ध कराये जा रहे हैं. विशेष तौर पर पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कार्यक्रमों के तहत कई ऐसे विषयों को शामिल किया गया है जो रोजगार के नजरिए से बहुत फायदेमंद हैं. इसमें एग्री बिजनेस, एग्री टूरिज्म, एग्री मैनेजमेंट, एग्री जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन को शामिल किया गया है. इन कोर्सों का मकसद छात्रों को कृषि उद्योग के अलग-अलग पहलुओं में प्रशिक्षित करना है. ताकि वे आगे चलकर कृषि क्षेत्र में नये प्रयोग और प्रबंधन की भूमिका निभा सकें.

**10 व्यावसायिक सर्टिफिकेट कोर्स की सुविधा:** कुलपति ने बताया कि 10 व्यावसायिक सर्टिफिकेट कोर्स की भी सुविधा संचालित किया गया है. इसके अलावा विश्वविद्यालय में 10 अलग-अलग सर्टिफिकेट कोर्स भी चलाये जा रहे हैं, जो थोड़े समय में छात्रों को व्यावसायिक हुनर सिखाते हैं. यह कोर्स फार्म मशीनरी, सीनियर सिटीजन केयर, नर्सरी मैनेजमेंट, प्लांट टिशू कल्चर, आर्टिफिशियल इन्सेमिनेशन, एग्रो ट्रांसफर इन टेक्नोलॉजी, शुगरकेन कल्टीवेशन, फिश कल्चर, शीप प्रोडक्शन, मशरूम कल्टीवेशन और फिश हैचरी आदि हैं. एग्री बीएससी, एग्री एमएससी, एग्री पीएचडी जैसे कोर्सों की भी पढ़ाई यहां होती है. कुलपति डा पांडेय ने बताया कि इन कोर्सों के जरिए छात्रों को स्वरोजगार स्टार्टअप की दिशा में भी प्रोत्साहन मिल रहा है.

भास्कर 17/6/25 पेज 16

कृषि वैज्ञानिक ने कहा • कोरोनाकाल के दौर से औषधीय पौधों व उससे जुड़े उत्पादों की डिमांड बाजार में बढ़ी है

# औषधीय पौधों की खेती किसानों के लिए काफी फायदेमंद इसमें लागत कम आती है और अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं

भास्कर न्यूज | पूसा

मानसूनी बारिश के शुरू होने से पहले से ही किसानों ने खेतीबाड़ी को लेकर तमाम तरह की तैयारियां शुरू कर दी हैं। ऐसे तो जून-जुलाई के महीने में बिहार के किसान खासकर बरसाती मकई, धान आदि जैसे खरीफ फसल यानी पारंपरिक फसलों की खेती तो करते ही है लेकिन किसान इन पारंपरिक फसलों से अलग हटकर कुछ नया करना चाहते हैं तो उनके पास औषधीय पौधों की खेती का विकल्प एक बढ़िया और बेहतर आय देने वाला विकल्प हैं। ये जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के पादप सुरक्षा विभाग के वैज्ञानिक सुमित कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि बिहार के किसान लेमनग्रास, एलोवेरा, तुलसी, अश्वगंधा, सर्पगंधा,भारतीय बेल, ब्राह्मी, बहेरा आदि जैसे औषधीय पौधों की खेती कर अन्य फसलों की तुलना में काफी अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में कृषि विवि पूसा और केवीके के अलावे भारत और राज्य सरकारें भी किसानों की आय को बढ़ाने तथा पारंपरिक फसलों की खेती से अलग हटकर उनसे कुछ नई तरह की खेती को करवाने के लिए उन्हें लगातार प्रोत्साहित कर रही है। उन्होंने कहा कि कोरोनाकाल के दौर से औषधीय पौधों व उससे जुड़े उत्पादों का डिमांड बाजारों में काफी बढ़ गया है। औषधीय पौधों का उत्पादन व उससे बने उत्पाद मांग के अनुरूप काफी कम है। ऐसे में औषधीय पौधों की खेती किसानों के लिए फायदेमंद साबित होगी।

लेमनग्रास के पौधे।

## लेमनग्रास की खेती का सबसे उपयुक्त समय फरवरी से लेकर जुलाई तक होता है

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि औषधीय गुणों से भरपूर लेमनग्रास की खेती का सबसे उपयुक्त समय फरवरी से जुलाई तक का होता है। किसान लेमनग्रास को एक बार लगाकर उससे चार से पांच साल तक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। एक एकड़ में इसकी खेती करने पर किसानों को लगभग 30 से 40 हजार रुपए का खर्च आता है। जबकि इससे एक से डेढ़ लाख रुपए तक की कमाई होती है। ब्राह्मी का पौधा पूरी तरह से औषधीय होता है। इसकी पत्तियां जहां कब्ज को दूर करने में मददगार होती हैं। वहीं इसके रस से गठिया का सफल इलाज होता है। ब्राह्मी में रक्तशुद्धी के गुण होते हैं तथा इससे दिमाग भी तेज होता हैं। इनसे बने दवाइयों का प्रयोग कैंसर, एनिमिया, दमा, किडनी और मिर्गी जैसे बीमारियों के इलाज में किया जाता है। इसकी खेती के लिए सबसे उपयुक्त समय बारिश का मौसम ही होता है। किसान अगर एक हेक्टेयर में ब्राह्मी की खेती करते है तो उन्हें 25 से 30 क्विंटल ब्राह्मी की सूखी पत्तियां प्राप्त होती हैं। किसान इन पत्तियों की कटाई तीन से चार बार कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि सामान्य फसलों की तुलना में औषधीय पौधे लागत से तीन से चार गुना अधिक मुनाफा देती है।

दैनिक जागरण - 17/06/2007

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 19 जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस दौरान उत्तर बिहार के अधिकतर जिलों में हीटवेव की स्थिति बनी रहने की आशंका है। उसके बाद आसमान में बादल बन सकते हैं तथा तेज हवा के साथ हल्की वर्षा भी हो सकती है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान अधिकतम तापमान 35-38 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 26-30 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 17 जून | 36.0 | 27.0 |
| 18 जून | 37.0 | 27.0 |
| | दरभंगा | |
| 17 जून | 37.0 | 27.0 |
| 18 जून | 37.0 | 28.0 |
| | पटना | |
| 17 जून | 38.8 | 29.0 |
| 18 जून | 38.8 | 29.0 |

डिग्री सेल्सियस में

## पोषक खाद्य एवं कटाई उपरांत गुणवत्ता वृद्धि विषय पर कार्यशाला

# पोषणयुक्त खाद्यान्न से बढ़ती है रोग प्रतिरोधी क्षमता : कुलपति

**आयोजन**

प्रतिनिधि, पूसा

समूह में कुलपति के साथ वैज्ञानिक .

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में पोषक खाद्य एवं कटाई उपरांत गुणवत्ता वृद्धि विषय पर तीन दिनी कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में बोलते हुए कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि पोषणयुक्त खाद्य आज देश और दुनिया में बहुत महत्वपूर्ण है. पोषणयुक्त खाद्य से लोगों के शरीर को आवश्यक न्यूट्रीशन, विटामिन, मिनरल्स आदि मिलते हैं. वे कम बीमार पड़ते हैं. बीमारी से लड़ने की क्षमता में भी वृद्धि होती है. उन्होंने कहा कि इस तीन दिवसीय कार्यशाला में पोषक खाद्य पदार्थ के शेल्फ लाइफ और गुणवत्ता में वृद्धि पर भी विस्तार से चर्चा की जायेगी. कालेज आफ बेसिक साइंस के डीन डॉ अमरेश चंद्रा ने कहा कि इस कार्यशाला में देश भर के छह विश्वविद्यालय समेत आइसीएआर के वैज्ञानिक और छात्र शामिल हो रहे हैं. उन्होंने कहा कि देश को 2047 तक विकसित बनाने में फंक्शनल फुड पर भी ध्यान देना होगा. उन्होंने कहा कि फंक्शनल फुड से बीमारी नहीं होती है. बीमारी से लड़ने की क्षमता में भी वृद्धि होती है. उन्होंने कहा कि कटाई के उपरांत कृषि उत्पादन विशेष रूप से फल और सब्जियों का लगभग बीस प्रतिशत तक नष्ट हो जाता है. जो बचता है उसके पोषक तत्व में भी कमी हो जाती है. उन्होंने कहा कि फसलों के शेल्फ लाइफ बढ़ाने और पोषक तत्व को बरकरार रखने के इंटरडिसिप्लीनरी चर्चा को ध्यान में रखकर इस कार्यशाला का आयोजन किया गया है. कम्युनिटी साइंस महाविद्यालय की डीन डॉ उषा सिंह ने पोषक खाद्य को लेकर विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न अनुसंधान की जानकारी दी. उन्होंने कहा कि पोषण युक्त खाद्य आने वाले समय की जरूरत है. इस पर अभी से कार्य करने की जरूरत है. कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय में पोषक खाद्य को लेकर अनुसंधान किये जा रहे हैं. इस कार्यशाला में विभिन्न विषयों के और विभिन्न संस्थानों के छात्रों और वैज्ञानिकों के साथ संवाद से उसमें और निखार आयेगा. धन्यवाद ज्ञापन डॉ केएल भूटिया ने किया. निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय, डॉ महेश कुमार, डॉ अंजनी कुमारी, डॉ कुमार राज्यवर्धन आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Friday, June 20, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6854619a6f4e21c8b464cb17

## लीची की बागवानी की देखरेख को लेकर वैज्ञानिकों ने दी सलाह

# बागों की कटाई-छंटाई और पोषक तत्व का करें प्रबंधन : डॉ धीरू कुमार

**सलाह**

**प्रतिनिधि, पूसा**

लीची के बागवान अगले वर्ष अच्छी उपज व गुणवत्तापूर्ण फलों को प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें अभी से ही बाग का प्रबंधन करना चाहिए. डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ धीरु कुमार तिवारी ने कहा कि वर्तमान समय में लीची फलों की तुड़ाई लगभग पूरी हो चुकी है. ऐसी स्थिति में लीची के बागवानों को बागों की कटाई-छंटाई व पोषक तत्व प्रबंधन करना प्रमुख है. इससे अगले वर्ष अच्छी फलन होती है. यदि पेड़ों की टहनियां बहुत घनी हो गई है या सूख गई है तो उसकी कटाई कर देनी चाहिए. टहनी को यदि फल तोड़ते समय नहीं तोड़ा गया तो उस टहनी की भी आधा या एक फुट छंटाई करनी चाहिए. इस प्रक्रिया को करने से सूर्य की रोशनी पेड़ के सभी भाग में पहुंचने लगती है. जिससे मंजर अधिक आते हैं. कीटों का भी नियंत्रण होता है. उन्होंने बताया कि यदि लीची का पौधा 10 साल या उससे अधिक पुराना है तो उसके लिए प्रति पेड़ 800 ग्राम नाइट्रोजन, 800 ग्राम फास्फोरस व 600 ग्राम पोटाश से पोषण किया जाना चाहिए. प्रति पेड़ 50 किलोग्राम गोबर खाद भी देना आवश्यक है. खाद को देने के लिए पेड़ के मुख्य तना से दो मीटर की दूरी पर रिंग बना लेनी चाहिए. उसमें खादों को डालकर मिट्टी में मिला दें. बाग की मिट्टी को फसल अवशेषों या अन्य किसी मल्चिंग सामग्री से ढकना चाहिए ताकि मिट्टी में नमी लम्बे समय तक बरकरार रहे. इससे फल फटने की समस्या में भी कमी होती है. मल्चिंग करने से मिट्टी में जीवांश पदार्थ की मात्रा भी बढ़ती है. खर-पतवार भी कम उगते हैं. यह प्रक्रिया किसान यदि अभी कर लेते हैं तो अगले सीजन में लीची की पैदावार अच्छी प्राप्त हो सकती है

बागों का प्रबंधन करते कर्मी .

प्रभात खबर
Friday, June 20, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6854619a6f4e21c8b464cb20

कृषि • डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में पोषक खाद्य व कटाई उपरांत गुणवत्ता वृद्धि पर कार्यशाला

# पोषण युक्त खाद्य पदार्थ का सेवन आज दुनिया के लिए सबसे महत्वपूर्ण : वीसी

दैनिक भास्कर - 20/06/25 P-21

भास्कर न्यूज | पूसा

पूसा में कार्यशाला में मौजूद कुलपति व अन्य।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में पोषक खाद्य एवं कटाई उपरांत गुणवत्ता वृद्धि विषय पर तीन दिनों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में बोलते हुए कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने कहा कि पोषण युक्त खाद्य पदार्थ का सेवन आज देश और दुनिया के लोगो के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण हैं। पोषण युक्त खाद्य से लोगों को शरीर के लिए सभी आवश्यक न्यूट्रीशन, विटामिन, मिनरल्स आदि मिलते हैं और पोषण युक्त खाद्य का सेवन करने वाले लोग कम बीमार पड़ते हैं। बीमारी से लड़ने की क्षमता में भी वृद्धि होती है। उन्होंने कहा कि इस तीन दिवसीय कार्यशाला में पोषक खाद्य पदार्थ के शेल्फ लाइफ और गुणवत्ता में वृद्धि पर भी विस्तार से चर्चा की जायेगी। उन्होंने कहा कि जामुन देश और बिहार में बहुतायत में उपलब्ध हैं। इसमें ढेर सारे औषधीय तत्व है। लेकिन इसका शेल्फ लाइफ काफी कम है। इस पर भी इस कार्यशाला में विचार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सेंसर बेस्ड तकनीक से ऐसे छोटे और सस्ते यंत्र भी विकसित किए जाने चाहिए जिससे कि पोषक खाद्य की गुणवत्ता को मापा जा सके। डॉ पांडेय ने कहा कि इस तीन दिवसीय कार्यशाला से निश्चित ही ऐसे संकेत उभर कर आयेंगे जिनके पालन से किसानों का फायदा सुनिश्चित हो सकेगा।

## फंक्शनल फूड पर भी ध्यान देना होगा

कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस के डीन डॉ अमरेश कुमार ने कहा कि इस कार्यशाला में देश भर के छह विश्वविद्यालय समेत आइसीएआर के वैज्ञानिक और छात्र शामिल हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश को 2047 तक विकसित बनाने में फंक्शनल फुड पर भी ध्यान देना होगा। उन्होंने कहा कि फंक्शनल फूड से बीमारी नहीं होती है और बीमारी से लड़ने की क्षमता में भी वृद्धि होती है। उन्होंने कहा कि कटाई के उपरांत कृषि उत्पादन विशेष रूप से फल और सब्जियों का लगभग बीस प्रतिशत तक नष्ट हो जाता है और जो बचता है उसके पोषक तत्व में भी कमी हो जाती है। उन्होंने कहा कि फसलों के शेल्फ लाइफ बढ़ाने और पोषक तत्व को बरकरार रखने के इंटरडिसिप्लीनरी चर्चा को ध्यान में रखकर इस कार्यशाला का आयोजन किया गया है। कम्युनिटी साइंस की डीन डॉ उषा सिंह ने पोषक खाद्य को लेकर विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न अनुसंधान की जानकारी दी।

## छात्रों और वैज्ञानिकों के साथ संवाद से शोध व कार्यों में और निखार आएगी

उन्होंने कहा कि पोषण युक्त खाद्य आने वाले समय की जरूरत है और इस पर अभी से कार्य करने की जरूरत है। कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय में पोषक खाद्य को लेकर अनुसंधान किये जा रहे हैं। इस कार्यशाला में विभिन्न विषयों के और विभिन्न संस्थानों के छात्रों और वैज्ञानिकों के साथ संवाद से उसमें और निखार आएगा। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन डॉ के एल भूटिया ने किया। कार्यक्रम के दौरान निदेशक अनुसंधान डॉ ए के सिंह , निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय, डॉ महेश कुमार, डॉ अंजनी कुमारी , डॉ कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

# पूसा विवि में कृषि पत्रकारिता में पीजी डिप्लोमा के लिए शुरू हुआ नामांकन

## डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में शुरू हुआ कोर्स

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में कृषि पत्रकारिता में पीजी डिप्लोमा के के लिए नामांकन शुरू हो गया है। इस कोर्स में नामांकन के लिए पंद्रह सीटें उपलब्ध हैं जिसमें से आरक्षण नीति के तहत लगभग सात सीट सामान्य वर्ग के लिए उपलब्ध हैं। कृषि पत्रकारिता में पीजी डिप्लोमा एक वर्ष का कोर्स है जिसमें विश्वविद्यालय में छह महीने तक क्लास और किसी बड़े चैनल या अखबार में छह महीने का इंटर्नशिप शामिल है। एग्री जर्नलिज्म में नामांकन के लिए किसी भी विषय में स्नातक होना चाहिए। कोर्स के बाद प्लेसमेंट भी कराया जाता है। कृषि पत्रकारिता से जुड़े पेशेवरों की भारत में अच्छी खासी जरूरत है लेकिन पेशेवर युवकों की कमी है। भारत सरकार ने कृषि को समर्पित किसान चैनल भी शुरू किया है जिसमें कृषि पत्रकारिता की पढ़ाई के बाद नौकरी मिल सकती है। इसके अतिरिक्त की कृषि विश्वविद्यालयों में कम्युनिटी रेडियो और टीवी स्टूडियो भी शुरू किये जा रहे हैं। जिसमे कृषि पत्रकारिता से जुड़े छात्रों को नौकरी मिल सकती है। इसके अतिरिक्त सभी समाचार पत्र, समाचार एजेंसी और टीवी चैनल कृषि बीट के लिए ऐसे छात्रों की तलाश करते हैं जिनके पास कृषि पत्रकारिता से संबंधित डिग्री और अनुभव हो। विश्वविद्यालय से कोर्स करने के उपरांत छात्र अपना यू ट्यूब चैनल शुरू करते भी अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं। कृषि को लेकर भारत सरकार ने किसान चैनल भी शुरू किया है।एग्री जर्नलिज्म में नामांकन के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर ही परीक्षा ली जाएगी।

फिलहाल कोर्स में नामांकन की प्रक्रिया चल रही है। जानकारी के अनुसार नामांकन के लिए अंतिम तिथि भी विस्तारित की जा रही है। स्थानीय लोगों के लिए विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने के लिए यह एक अच्छा विकल्प है।

दैनिक भास्कर - 20/06/2022 P-2

दैनिक जागरण 20/06/25 P-4

# बीमारी से दूर रहने को पोषण युक्त खाद्य हर व्यक्ति के लिए आवश्यक : कुलपति

**तीन दिवसीय कार्यशाला शुरू**

**डा. पीएस पांडेय ने कहा- पोषणयुक्त खाद्य आज देश और दुनिया में बहुत महत्वपूर्ण**

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में पोषक खाद्य एवं कटाई उपरांत गुणवत्ता वृद्धि विषयक तीन दिनी कार्यशाला का शुभारंभ गुरुवार को हुआ। उद्घाटन समारोह में बोलते हुए कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि पोषणयुक्त खाद्य आज देश और दुनिया में बहुत महत्वपूर्ण है। पोषण युक्त खाद्य से लोगों को शरीर के लिए सभी आवश्यक न्यूट्रीशन, विटामिन, मिनरल्स आदि मिलते हैं और वे कम बीमार पड़ते हैं। बीमारी से लडने की क्षमता में भी वृद्धि होती है। इस तीन दिवसीय कार्यशाला में पोषक खाद्य पदार्थ के शेल्फ लाइफ और गुणवत्ता में वृद्धि पर भी विस्तार से चर्चा होगी। उन्होंने कहा कि जामुन देश और बिहार में बहुतायत में उपलब्ध है। इसमें ढेर सारे औषधीय तत्व है। लेकिन इसका शेल्फ लाइफ काफी कम है। इस पर भी इस कार्यशाला में विचार किया जाएगा। कहा कि सेंसर बेस्ड तकनीक से ऐसे छोटे और सस्ते यंत्र भी विकसित किए जाने चाहिए जिससे कि पोषक खाद्य की गुणवत्ता को मापा जा सके। डा. पांडेय ने कहा कि इस तीन दिवसीय कार्यशाला से निश्चित ही ऐसे संकेत उभर कर आएंगे जिनके पालन से किसानों का फायदा सुनिश्चित हो सकेगा। कालेज आफ बेसिक साइंस के डीन डा. अमरेश कुमार ने कहा कि इस कार्यशाला में देश भर के छह विश्वविद्यालय समेत आइसीएआर के वैज्ञानिक और छात्र शामिल हो रहे हैं। कहा कि देश को 2047 तक विकसित बनाने में फंक्शनल फूड पर भी ध्यान

कार्यशाला में मौजूद वैज्ञानिक • जागरण

कार्यशाला को संबोधन करते कुलपति और मौजूद वैज्ञानिक • जागरण

देना होगा। कहा कि फंक्शनल फूड से बीमारी नहीं होती है और बीमारी से लडने की क्षमता में भी वृद्धि होती है। कहा कि कटाई के उपरांत कृषि उत्पादन विशेष रूप से फल और सब्जियों का लगभग बीस प्रतिशत तक नष्ट हो जाता है और जो बचता है उसके पोषक तत्व में भी कमी हो जाती है। कम्युनिटी साइंस की डीन डा. उषा सिंह ने पोषक खाद्य को लेकर विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न अनुसंधान की जानकारी दी। कहा कि पोषण युक्त खाद्य आने वाले समय की जरूरत है और इस पर अभी से कार्य करने की जरूरत है। कुलसचिव डा. मृत्युजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय में पोषक खाद्य को लेकर अनुसंधान किये जा रहे हैं।

इस कार्यशाला में विभिन्न विषयों के और विभिन्न संस्थानों के छात्रों और वैज्ञानिकों के साथ संवाद से उसमें और निखार आएगा। धन्यवाद ज्ञापन डा. केएल भूटिया ने किया। कार्यक्रम के दौरान निदेशक अनुसंधान डॉ ए के सिंह , निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ,डॉ महेश कुमार, डॉ अंजनी कुमारी , डॉ कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 22 जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि 17 जून को दक्षिण-पश्चिम मानसून बिहार में प्रवेश कर गया है। अगले 48 घंटे में बिहार में इसके विस्तार के लिए अनुकूल परिस्थितियां बन रही है, 72 घंटे के भीतर उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर बारिश हो सकती है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान 20 से 25 किमी की गति से पुरवा हवा भी चलेगी।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 20 जून | 34.0 | 26.0 |
| 21 जून | 35.0 | 26.0 |
| | दरभंगा | |
| 20 जून | 35.0 | 26.0 |
| 21 जून | 35.0 | 26.5 |
| | पटना | |
| 20 जून | 36.5 | 27.0 |
| 21 जून | 36.5 | 27.0 |

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण-20/06/15

कार्यक्रम | डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में पोषक खाद्य एवं कटाई उपरांत गुणवत्ता वृद्धि विषय पर तीन दिनी कार्यशाला में बोले वीसी

# खाद्य की गुणवत्ता को ले बनाएं सेंसर बेस्ड तकनीक

- खाद्य पदार्थ के सेल्फ लाईफ व गुणवत्ता वृद्धि पर बल दिया
- डीन ने पोषक खाद्य पर विवि में चले रहे कार्यों पर विस्तार से चर्चा की

**पूसा, निज संवाददाता।** डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि बदलते समय में पोषक खाद्य की गुणवत्ता को मापने के लिए सेंसर बेस्ड तकनीक आधारित छोटे व सस्ते यंत्रों का विकास जरूरी है। इससे उसका सेवन लोगों के लिए आसान और लाभदायी हो सकेगा। वे गुरुवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में वैज्ञानिकों को संबोधित कर रहे थे। मौका था पोषक खाद्य एवं कटाई उपरांत गुणवत्ता वृद्धि विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने कहा कि देश-दुनिया में पोषण युक्त खाद्य की मांग लगातार बढ़ रही है। यह शरीर को न्यूट्रीशन, विटामिन, मिनरल्स जैसे पौष्टिक आहार उपलब्ध कराने में अहम भूमिका निभाता है। जो बीमारी से

गुरुवार को डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के पंचतंत्र सभागार के निकट कुलपति, डीन,डायरेक्टर व वैज्ञानिक।

लड़ने की क्षमता बढ़ोतरी में सहायक है। उन्होंने कार्यशाला में पोषक खाद्य पदार्थ के सेल्फ लाईफ व गुणवत्ता वृद्धि पर विस्तार से चर्चा करने पर बल दिया। डीन( बेसिक साईंस ) डॉ.अमरेश चन्द्रा ने कहा कार्यशाला में छह विवि व आईसीएआर के वैज्ञानिक एवं छात्र शामिल हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि कटाई के बाद कृषि उत्पादन विशेष रूप से फल व सब्जी का 20 प्रतिशत तक नष्ट हो जाता हैं डीन डॉ.उषा सिंह ने पोषक खाद्य पर विवि में चले रहे कार्यो पर विस्तार से चर्चा की। कुलसचिव डॉ.मृत्युंजय कुमार ने कहा कि विवि में पोषक खाद्य को लेकर अनुसंधान किये जा रहे हैं। इस अवसर पर डीन डॉ.मयंक राय, डॉ.पीपी श्रीवास्तव, डीआर डॉ.एके सिह, निदेशक डॉ.उमाकांत बेहरा, डॉ.कुमारी अंजनी, डॉ.कुमार राज्यबर्द्धन आदि मौजूद थे।

Hindustan 20-06-2025

धान का बिचड़ा लगाने के लिए किसानों ने तेज की तैयारी, खेतों की जुताई शुरू

# बारिश के बाद गर्मी से मिली राहत खेत तैयार करने में जुटे किसान

**रोसड़ा, निज संवाददाता।** मानसून के दस्तक के बाद प्रखंड के किसान खेतों में धान का बिचड़ा गिराने में जुट गए हैं। बुधवार व गुरुवार को रुक-रुक कर हुई हल्की बारिश से खेतों में नमी आ गई है। जिससे किसान अपने खेतों की जुताई के साथ-साथ धान का बिचड़ा गिराने में लग गए हैं। यह बारिश किसानों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है।

बारिश की वजह से किसान विभिन्न किस्मों के धान का बिचड़ा गिराने में जुट गए हैं। उधर, अनुदानित दर पर मिलने वाले बिचड़े को लेकर किसानों की प्रखंड कृषि कार्यालय तथा दुकानों में भीड़ देखी जा रही है। बारिश होने से खेतों में नमी होने के साथ साथ तापमान में भी गिरावट आई है जिससे लोगों को गर्मी से राहत मिली है।

**लेट से आया मानसून :** मानसून लेट से आने की वजह से धान का बिचड़ा गिराने का समय काफी बीत चुका है, जिससे धान की फसल एक माह पीछे हो जायेगा। किसानों ने बताया की 25 जून तक धान का बिचड़ा गिराने का आदर्श समय माना जाता है, जिसे तैयार होने में भी 20 से 25 दिन लग जाते हैं। अभी भी मौसम साथ दिया तो धान की पैदावार अच्छी होगी। इसके अलावा किसान अरहर, मक्का समेत अन्य फसलों की बुआई में जुट गए हैं। वहीं इस बारिश से सब्जी उत्पादक किसान को भी काफी फायदा हुआ है। पुराने लत्तेदार फसल को भी इस बारिश से ऊर्जा मिली है और नई फसल को भी काफी लाभ हुआ है। पुराने फसल में फलन की कमी होने लगी थी। लेकिन बारिश का पानी मिलने से उसकी फलन क्षमता में वृद्धि हुई है। सब्जी के फलदार पौधे को भी ऊर्जा मिली है।

रोसड़ा के चंदचौर में खेत तैयार कर धान बिचड़ा डालते किसान।

- **खाद-बीज के लिए दुकानों पर उमड़े किसान**
- **रोसड़ा के दर्जनों किसानों ने लगायी नर्सरी**

किसान रामप्रकाश महतो, अनिल महतो, धर्मेन्द्र महतो, सईद अंसारी आदि ने बताया कि इस बारिश का लाभ सबको हुआ है। खेती करने वाले किसान, फल उत्पादक किसान, सब्जी उत्पादक किसान से लेकर आम व खास हर किसी को किसी न किसी रूप में लाभ हुआ है। बताया कि अगर दो से तीन दिन के अंतराल पर अच्छी बारिश हो जाए तो इसका लाभ और बढ़ जाएगा।

## बेहतर लीची उत्पादन के लिए अभी से बागों का करें समुचित प्रबंधन

**पूसा।** अगले वर्ष लीची की अच्छी उपज व गुणवत्तायुक्त फल की चाहत हो तो तो अभी से बागों का समुचित प्रबंधन जरूरी है। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ.धीरू कुमार तिवारी ने कहा कि लीची की तुड़ाई लगभग पूरी हो चुकी है। वर्तमान में बाग की कटाई-छंटाई व पोषक तत्व प्रबंधन की जरूरत है। कटाई-छंटाई के तहत घनी व सूखी टहनियों को हटाना सही होगा। इससे सूर्य की रौशनी पेड़ की सभी भागों में पहुंचने लगेगी। जिससे मंजर अधिक आने के साथ कीटों का नियंत्रण भी होगा। इसके बाद 10 वर्ष या उससे अधिक पुराने लीची के पेड़ों में प्रति पेड़ 800 ग्राम नाइट्रोजन, 800 ग्राम फास्फोरस एवं 600 ग्राम पोटाश से पेड़ का पोषण किया जाना चाहिए। साथ ही प्रति पेड़ 50 किग्रा गोबर खाद भी देना आवश्यक होता है। खाद देने के लिए पेड़ के मुख्य तना से दो मीटर की दूरी पर रिंग बनाकर उसमें खादों को डालकर मिट्टी में मिला देना चाहिए। बाग की मिट्टी को फसल अवशेषों या अन्य किसी मल्चिंग सामग्री से ढकना लाभदायक होगा।

Hindustan 20-6-2025

### बूंदाबांदी. जिले में दक्षिण-पश्चिम मानसून का असर दिखने लगा है, 6.9 मिमी हुई बारिश

# मानसून की पहली बारिश से मौसम हुआ सुहाना

**प्रतिनिधि, समस्तीपुर**

जिले में दक्षिण-पश्चिम मानसून का असर दिखने लगा है. गुरुवार की रात जिले के कई हिस्सों में हल्की से मध्यम बारिश हुई है. बारिश के बाद अचानक से मौसम में बदलाव आया है. कल तक लोग सूरज की तपिश और गर्म हवाओं के झोंके से परेशान थे. अधिकतम तापमान 41 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था. लेकिन गुरुवार की रात हुई बारिश के बाद तापमान में अचानक से गिरावट आयी है. शुक्रवार को भी पूरे दिन आकाश में बादल छाया रहा. रुक-रुककर बूंदाबांदी होती रही. मौसम पूरी तरह खुशनुमा बना रहा. हालांकि हल्की से मध्यम बारिश के बाद ही शहर की कई गलियों की सड़कों पर जलजमाव हो गया है. वहीं सड़कें किचकिच हो गयी है. आज का अधिकतम तापमान 32.0 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 2.4 डिग्री सेल्सियस कम रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 24.5 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 1.5 डिग्री सेल्सियस कम रहा. दूसरी ओर तेज धूप से कुम्हला रहे सब्जी सहित विभिन्न फसलों में जान आ गयी है. वहीं खेत की मिट्टी आने से किसानों को खेत की जुताई में सहूलियत हो रही है. किसान मानसून की आस में आकाश की ओर टकटकी लगाये हुये थे. जिले में मानसून की पहली बारिश औसतन 6.9 मिमी हुई है. जिले के हसनपुर प्रखंड में सबसे अधिक 13.6 मिमी बारिश हुई है. वहीं विद्यापतिनगर में 12.4 मिमी बारिश हुई है. पटोरी में 10.4, मोहिउद्दीननगर प्रखंड में 10.2 मिमी बारिश हुई है.वहीं जिले के सिंघिया और उजियापुर प्रखंड में तनिक भी बारिश नहीं हुई है.

बारिश से फसल में आयी रौनक.

आकाश में छाये बादल.

### किस प्रखंड में कितनी बारिश

| प्रखंड | बारिश (मिमी में) |
|---|---|
| विभूतिपुर | -4.2 |
| बिथान | -9.4 |
| दलसिंहसराय | -9.6 |
| हसनपुर | - 13.6 |
| कल्याणपुर | - 1.0 |
| खानपुर | - 6.2 |
| मोहनपुर | - 10.0 |
| मोहिउद्दीननगर | - 10.2 |
| मोरवा | - 6.4 |
| पटोरी | - 10.4 |
| पूसा | - 2.2 |
| रोसड़ा | - 4.4 |
| समस्तीपुर | - 7.4 |
| सरायरंजन | - 8.2 |
| शिवाजीनगर | - 6.2 |
| सिंघिया | - 00 |
| ताजपुर | - 9.8 |
| उजियारपुर | - 00 |
| विद्यापतिनगर | - 12.4 |
| वारिसनगर | - 8.2 |

### बारिश की संभावना को देखते हुये किसान खेत की मेड़ों को मजबूत करें

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि,पूसा के द्वारा किसानों को सलाह दी गयी है कि 21 से 25 जून की अवधि में वर्षा की अच्छी संभावना को देखते हुए अपनी खेतों में मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें. धान की बीजस्थली में जो बिचडे.10 से 15 दिनों के हो गये हो. खर-पतवार निकाल कर तथा प्रति एक हजार वर्ग मीटर बीजस्थली के लिए 5 किलो अमोनियम सल्फेट अथवा 2 किलो यूरिया का उपरिवेशन करें. किसान अच्छी वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपनी को प्राथमिकता दें. रोपाई पूर्व खेतों की तैयारी के समय कदवा के दौरान मध्यम एवं लंबी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का व्यवहार करें. धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करें.

### सक्रिय मानसून के कारण अच्छी बारिश के आसार

**समस्तीपुर.** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा के कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 21-25 जून 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. सक्रिय मानसून एवं कम दबाव के प्रभाव से पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के अधिकतर जिलों में अच्छी वर्षा होने की संभावना है. 22-24 जून के बीच अनेक स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है. कुछ स्थानों पर भारी वर्षा होने का भी संभावना है. इस अवधि के तापमान में 2-3 डिग्री सेल्सियस की गिरावट आ सकती है. दिन का तापमान 29-31 डिग्री सेल्सियस जबकि न्यूनतम तापमान 23-25 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 15 से 20 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने का अनुमान है.

प्रभात खबर
Saturday, June 21, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6855b3364470efd8542a6d75

# कृषि विवि के 35 छात्रों का हुआ कैंपस प्लेसमेंट

प्रतिनिधि, पूसा

डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा ने वर्ष 2025 में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को जीविका पटना में विगत माह एक साथ 35 छात्रों को कैंपस प्लेसमेंट कराने में सफलता हासिल की है. इसमें से 32 छात्रों को लाइवलीहुड स्पेशलिस्ट एवं 3 छात्रों का यंग प्रोफेशनल के पद पर चयन हुआ है.

प्लेसमेंट सेल के नियंत्री पदाधिकारी डा. रमण कुमार त्रिवेदी ने बताया कि चयनित होने वाले छात्रों में बी-टेक (कृषि अभि) से 7, बीएससी (कृषि) से 5, बीएफएससी (मत्स्यकी) से 4, एमएससी (कृषि) से 11, एमएफएससी (मत्स्यकी) से 3, एमबीए एग्री बिजनेश के1 एवं एमबीए (रुरल मैनेजमेंट) के 4 छात्र शामिल हैं. डा. त्रिवेदी ने बताया कि

अतिथि को सम्मानित करते डीएसडब्लू.

विश्वविद्यालय के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के छात्र जो वर्ष 2025 में पास हो रहे हैं, उनके लिए देश की विभिन्न सुप्रसिद्ध कंपनियों में कैंपस प्लेसमेंट के लिए आमंत्रण भेजा जा चुका है.

इनमें से कुछ कंपनियों की वर्तमान में चयन की प्रक्रिया अलग-अलग चरणों में चल रही है. जिसका फाइनल रिजल्ट आना अभी बाकी है. कुलपति डॉ पुण्यवत्त सुविमलेन्दु पाण्डेय ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए चयनित छात्रों को शुभकामना दी है. सह निदेशक छात्र कल्याण डा. सतीश कुमार सिंह ने हर्ष जताया है.

Saturday, June 21, 2025
Samstipur
प्रभात खबर
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6855b3364470efd8542a6d7b

भास्कर 21/6/25 पेज 22

उद्यानिकी विशेषज्ञ की सलाह • किसान लीची के घने व सूखे टहनियों की करें कटाई, प्रबंधन बेहद जरूरी

# अगले वर्ष लीची से अच्छे फल प्राप्त करने के लिए किसान मौजूदा समय में करें बाग का प्रबंधन, इससे गुणवत्तापूर्ण उत्पादन होगा

भास्कर न्यूज | पूसा

लीची के बागवान यदि अगले वर्ष लीची से अच्छी उपज एवं गुणवत्तापूर्ण फल का उत्पादन प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें अभी से ही कुछ बिंदुओं को ध्यान में रखकर लीची के बाग का प्रबंधन करना चाहिए। वर्तमान समय में लीची के फलों की तुड़ाई लगभग पूरी हो चुकी है। ऐसी स्थिति में लीची के बागवानों को जिन महत्वपूर्ण पहलुओं पर काम करने की आवश्यकता है उनमें से प्रमुख है बाग की कटाई छंटाई तथा लीची के पौधों में पोषक तत्व का प्रबंधन। ये बातें डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. धीरु कुमार तिवारी ने कही। उन्होंने कहा की लीची के फलों की तुड़ाई हो जाने के पश्चात लीची के पेड़ों में कटाई छंटाई करना नितांत आवश्यक होता है ताकि अगले वर्ष लीची के पौधों में अच्छा, अधिक और गुणवत्तापूर्ण फल लग सके। विशेषज्ञ के अनुसार लीची के पेड़ों की टहनियां अगर बहुत घनी व सूख गई हैं तो उनकी कटाई छंटाई किसानों को हर हाल में कर देनी चाहिए। लीची पेड़ की ऐसी टहनी जिस पर इस बार फल लगे थे और फल तोड़ते समय उस टहनी को नही तोड़ा गया था। वैसे सभी टहनी को भी आधा या एक फीट ऊपर से तोड़ते हुए उसकी छंटाई कर देनी चाहिए। उन्होंने बताया कि लीची का पेड़ यदि ऊपर से बहुत घना है तो ऊपर के सबसे बीच वाली एक टहनी को काटकर हटा देना चाहिए ताकि बीच का हिस्सा ऊपर से खुल जाएं। ऐसा करने से सूर्य की रोशनी पेड़ के लगभग सभी भाग में पहुंचने लगती है जिससे मंजर अधिक आते हैं और कीटों का भी नियंत्रण होता है।

लीची के बाग का प्रबंधन कराते विशेषज्ञ।

## लीची के पेड़ों में समुचित मात्रा में डालें उर्वरक, खरपतवार से भी बचाना जरूरी

विशेषज्ञ के अनुसार लीची में दूसरी प्रमुख बात पौधों के पोषण से संबंधित है। लीची का पौधा अगर 10 साल या उससे अधिक पुराना है तो उसके लिए किसानों को प्रति पेड़ 800 ग्राम नाइट्रोजन, 800 ग्राम फास्फोरस, 600 ग्राम पोटाश, जरूरत के अनुसार थाइमेट व 50 किलोग्राम गोबर की सड़ी हुई खाद पेड़ों में देना आवश्यक होता है। पेड़ों में खाद डालने के लिए पेड़ के मुख्य तना से दो मीटर की दूरी पर कुदाल से एक फीट गहरा एक गोलाकार रिंग मिट्टी खोदकर बना लेना चाहिए। इसके बाद सभी उर्वरक व गोबर को एक साथ मिलाकर इसी गोलाकार रिंग वाले गड्ढे में डालकर गड्ढे को मिट्टी से भर देना चाहिए। संभव हो तो लीची बाग की मिट्टी को फसल अवशेषों या किसी अन्य तरह की मल्चिंग सामग्री से ढक दें ताकि मिट्टी में नमी लंबे समय तक बरकरार रहे। ऐसा करने से अगले साल जहां फल फटने की समस्या में कमी आएगी। वही मल्चिंग करने से मिट्टी में जीवांश पदार्थ की मात्रा बढ़ती है और बाग में खरपतवार कम निकलते हैं।

भास्कर 21/6/25 पेज 11

# मिर्च की खेती को वैज्ञानिक ढंग से करके किसान प्राप्त कर सकते हैं अच्छा मुनाफा

**खेती-किसानी :** किसानों के बढ़ते रुझान से मिर्च की खेती और निर्यात के मामले में भारत विश्व में पहले स्थान पर, किसानों को मिर्च की खेती करने की दी गई सलाह

भास्कर न्यूज|पूसा

बिहार के किसान नकदी फसल के रूप में विख्यात मिर्च की खेती को जून-जुलाई महीने में वैज्ञानिक विधि से करके अत्यधिक उत्पादन और मुनाफा दोनों प्राप्त कर सकते हैं। मिर्च की खेती की ओर किसानों के बढ़ते रुझान से मिर्च की खेती और निर्यात के मामले में भारत विश्व में पहले स्थान पर हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह हेड डॉ. आरके तिवारी ने दी है। उन्होंने कहा कि जून का महीना समाप्ति पर है। जुलाई के अंत तक जो किसान बरसाती मिर्च की खेती करना चाहते है वे अविलंब मिर्च की नर्सरी लगा दें। उन्होंने बताया कि मिर्च फसल की अच्छी पैदावार और वृद्धि के लिए उष्णीय और उप-उष्णीय जलवायु तथा अच्छी जल निकास वाली जीवांश युक्त दोमट मिट्टी काफी उपयुक्त मानी जाती है। कृषि वैज्ञानिक ने कहा कि किसान मिर्च के बीजों की बुआई करने के लिए नर्सरी के क्यारियों को तैयार कर उसमें मिर्च के बीज को एक इंच की दूरी पर सीधे सीधे पंक्तियों में बुआई कर दें तथा उसे मिट्टी से ढक दें।

नर्सरी में ट्रे में लगाया गया मिर्च का पौधा।

## विवि के किसान कॉल सेंटर में कॉल कर प्रबंधन के बारे में जान सकते हैं

किसान नाइट्रोजन उर्वरक की आधी मात्रा रोपाई से पूर्व खेत की तैयारी में तथा आधी मात्रा दो बार क्रमशः रोपाई के 40 से 50 दिन बाद एवं 80 से 120 दिन बाद छिड़काव के रूप में करें। उन्होंने बताया कि किसान मिर्च में 10 से 15 दिन के अंतराल पर व आवश्यकता के अनुसार सिंचाई भी करते रहें। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि मीर्च की खेती में ज्यादातर थ्रिप्स, लाही, सफेद मक्खी, डायबैक रोग, उखड़ा रोग आदि जैसे कीटों का प्रकोप ज्यादातर देखने को मिलता है। किसान केवीके के वैज्ञानिकों और विवि के किसान कॉल सेंटर में कॉल करके इन कीटों के प्रबंधन के बारे में आसानी से जानकारी ले सकते हैं। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान मिर्च के प्रभेद पूसा ज्वाला, कल्याणपुर चमन, आंध्र ज्योति, भाग्य लक्ष्मी, जे 218, पंजाब लाल, पूसा सदाबहार आदि की खेती कर उच्च स्तरीय उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

## बीजों को थीरम या कैप्टान नामक दवाइयों से उपचारित करना जरूरी

बुआई करने के बाद किसान इन क्यारियों को खरपतवार या पुआल आदि से ढक दें तथा शाम या अहले सुबह उसे क्यारियों से हटा भी दें। उन्होंने बताया कि किसान बुआई से पूर्व बीजों को थीरम या कैप्टान नामक दवाइयों से उपचारित कर ले तथा उसके बाद ही बुआई करें। उन्होंने बताया कि एक हेक्टेयर मिर्च की खेती करने के लिए किसानों को 1 से 1.5 किलोग्राम मिर्च के बीज की बुआई करनी पड़ती है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान मिर्च लगाने से पूर्व खेतों की तैयारियों पर निश्चित रूप से विशेष ध्यान दें। किसान प्रति हेक्टेयर की दर से अपने खेतों में ढ़ाई से तीन क्विंटल गोबर या वर्मी कम्पोस्ट, सौ से एक सौ दस किलोग्राम नाइट्रोजन, पचास किलोग्राम फास्फोरस एवं साठ किलोग्राम पोटाश जैसे उर्वरक का इस्तेमाल करें।

भास्कर 21/6/25 पेज 19

मौसम • दिन का तापमान 29-31 डिग्री जबकि न्यूनतम तापमान 23-25 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा

# उत्तर बिहार के अधिकतर जिलों में अच्छी वर्षा होने की संभावना, तापमान में 2-3 डिग्री गिरावट आ सकती है

सिटी रिपोर्टर|समस्तीपुर

उत्तर बिहार के अधिकतर जिलों में अच्छी वर्षा होने की सम्भावना है। 22-24 जून के बीच अनेक स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है। कुछ स्थानों पर भारी वर्षा होने का भी सम्भावना है। इस अवधि के तापमान में 2-3 डिग्री सेल्सियस की गिरावट आ सकती है। दिन का तापमान 29-31 डिग्री सेल्सियस जबकि न्यूनतम तापमान 23-25 डिग्री सेल्सियस रहने की सम्भावना है। वहीं, सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है। दूसरी ओर पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 15 से 20 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने का अनुमान है। पूर्वानुमानित अवधि में वर्षा की अच्छी संभावना को देखते हुए किसान भाई अपने खेतों में मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। धान की बीजस्थली में जो बिचड़े 10 से 15 दिनो के हो गये हो, खर-पतवार निकाल कर तथा प्रति एक हजार वर्ग मीटर बीजस्थली के लिए 5 किलो अमोनियम सल्फेट अथवा 2 किलो यूरिया का उपरिवेशन करें। मौसम विभाग, पूसा के नोडल पदाधिकारी डॉ. ए. सत्तार ने बताया कि उत्तर बिहार के अधिकतर जिलों में अच्छी वर्षा होने की संभावना है। कुछ स्थानों पर भारी वर्षा होने का भी संभावना है।

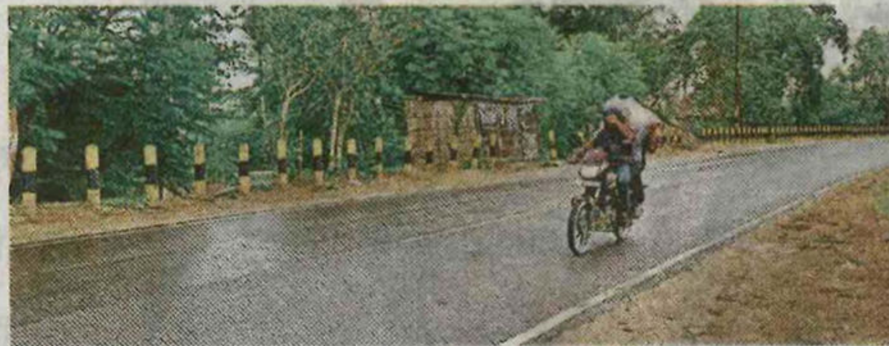

## किसान धान की रोपनी में प्राथमिकता दें

इस अवधि में अच्छी वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान धान की रोपनी में प्राथमिकता दें। वर्षा जल का उपयोग कर रोपनी के कार्य में प्राथमिकता दें। रोपाई पूर्व खेतों की तैयारी के समय कद्दा के दौरान मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोगग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का व्यवहार करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर छिडकाव करें।

## पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकाले

आम के पेड़ों की उम्र (10 वर्ष से अधिक) के अनुसार फलन समाप्त होने के बाद अनुशंसित उर्वरको जैसे 15-20 किलोग्राम सडी गोबर की खाद, 1.25 किलोग्राम नेत्रजन, 300-400 ग्राम फॉसफोरस, 1.0 किलोग्राम पोटाश, 50 ग्राम बोरेक्स तथा 15-20 ग्राम थाइमेट प्रति पेड प्रति वर्ष के अनुसार उपयोग करें। जिससे अगले वर्ष पेड़ फलन में आ सकें तथा उनका श्वास्थ अच्छा बना रहें। खरीफ प्याज की नर्सरी (बीजस्थली) गिरावें। एन0-53 एग्रीफाउण्ड डीक रेड, अकी कल्या[illegible], भीमा सुपर खरीफ [illegible] के लिए अनुशंसित किस्में है[illegible]

गई है। राहत सामग्री के लिए निविदा प्रमंडल और पीएचईडी ...

भास्कर 21/6/25 पेज 19

# कृषि विवि के 35 छात्रों का कैंपस

## सबसे अधिक 10 लाख रुपए सालाना पैकेज का ऑफर

भास्कर न्यूज | पूसा

डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा ने वर्ष 2025 में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को जीविका पटना में विगत माह एक साथ कुल 35 छात्रों को कैंपस प्लेसमेंट कराने में सफलता हासिल की है। कुल 35 छात्रों के हुए कैंपस प्लेसमेंट में से 32 छात्रों को लाईवलीहुड स्पेशलिस्ट एवं 3 छात्रों का यंग प्रोफेशनल के पद पर चयन हुआ है। छात्रों का कैंपस प्लेसमेंट विश्वविद्यालय के लिए काफी हर्ष की बात है। इस चयन से विश्वविद्यालय के सभी छात्रों में काफी हर्ष का माहौल है। प्लेसमेंट सेल के नियंत्री पदाधिकारी डा. रमण कुमार त्रिवेदी ने बताया कि विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों से कुल 35 छात्रों का चयन हुआ है। चयनित होने वाले छात्रों में बी-टेक (कृषि अभियंत्रण) से 7 छात्र, बीएससी (कृषि) से 5 छात्र, बीएफएससी (मत्स्यकी) से 4 छात्र, एमएससी (कृषि) से 11 छात्र, एमएफएससी (मत्स्यकी) से 3 छात्र, एमबीए एग्री बिजनेस) के 1 एवं एमबीए (रुरल मैनेजमेंट) के 4 छात्र शामिल हैं। नियंत्री पदाधिकारी ने बताया कि इस वर्ष हमारे छात्रों की सबसे अधिक 10 लाख रुपए प्रति वर्ष का पैकेज दिया गया है। डा. त्रिवेदी ने बताया कि विश्वविद्यालय के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के छात्र जो वर्ष 2025 में पास हो रहे हैं उनके लिए देश की विभिन्न सुप्रसिद्ध कंपनियों में कैंपस प्लेसमेंट के लिए आमंत्रण भेजा जा चुका है। इनमें से कुछ कंपनियों की वर्तमान में चयन की प्रक्रिया अलग-अलग चरणों में चल रही है जिसका फाइनल रिजल्ट आना अभी बाकी है। साथ ही कुछ अन्य कंपनियों ने भी कैंपस प्लेसमेंट के लिए उत्सुकता जाहिर की है उनका आना भी अलग-अलग तिथियों में निर्धारित होना है।

# फिर से बेहतर फसल के लिए लीची बागानों की करें देखभाल

**बाग की कटाई, छंटाई और पोषक तत्व प्रबंधन पर देना होगा विशेष ध्यान, फलों की तुड़ाई होने के बाद टहनियों की छंटाई जरूरी**

संस, जागरण • पूसा : लीची के बागवान यदि अगले वर्ष अच्छी उपज एवं गुणवत्तापूर्ण फलों को प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें अभी से ही बाग का प्रबंधन करना चाहिए। सबसे पहले बाग की कटाई छंटाई तथा पोषक तत्व प्रबंधन पर विशेष ध्यान देना होगा। फलों की तुड़ाई हो जाने के पश्चात कटाई छंटाई नितांत आवश्यक है। पेड़ों की घनी टहनियां की छंटाई कर देनी चाहिए। जिस टहनी में फल लगे थे उस टहनी की यदि फल तोड़ते समय नहीं तोड़ा गया तो उस टहनी की भी आधा या एक फीट छंटाई करनी चाहिए। पेड़ यदि ऊपर से बहुत घना है तो ऊपर की सबसे बीच वाली एक टहनी को काटकर हटा दिया जाना चाहिए ताकि बीच का हिस्सा ऊपर से खुल जाएं। इस प्रक्रिया को करने से सूर्य की रोशनी पेड़ के सभी भाग में पहुंचने लगती है। इससे मंजर अधिक आते हैं। कीटों का भी नियंत्रण होता है। कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के उद्यानिकी विशेषज्ञ डा. धीरू कुमार तिवारी ने कहा कि वर्तमान समय में लीची के फलों की तुड़ाइं लगभग पूरी हो चुकी है। ऐसी स्थिति में 10 साल या उससे अधिक पुराने पौधे को प्रति पेड़ 800 ग्राम नाइट्रोजन, 800 ग्राम फास्फोरस तथा 600 ग्राम पोटाश से उस पेड़ का पोषण किया जाना चाहिए। प्रति पेड़ 50 किलोग्राम गोबर खाद भी देना आवश्यक होता है। खाद को देने के लिए पेड़ के मुख्य तना से दो मीटर की दूरी पर रिंग बना लेनी चाहिए और उसमें उपर्युक्त खादों को डालकर मिट्टी में मिला देना चाहिए। बाग की मिट्टी को फसल अवशेषों या अन्य किसी मल्चिंग सामग्री से ढकना चाहिए ताकि मिट्टी में नमी लम्बे समय तक बरकरार रहे। इससे फल फटने की समस्या में भी कमी होती है।

Dainik Jagran 21-06-2025

# विश्वविद्यालय के 35 छात्रों को जीविका में किया गया चयनित

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट विभाग ने कुल 35 छात्रों को जीविका में चयनित कराया है। 32 छात्र लाइवलीहुड स्पेशलिस्ट एवं 03 छात्र यंग प्रोफेशनल के पद पर चयनित हुए हैं। प्लेसमेंट सेल के नियंत्री पदाधिकारी डा. रमण कुमार त्रिवेदी ने बताया कि विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों से कुल 35 छात्रों का चयन हुआ है।

चयनित होने वाले छात्रों में बी-टेक (कृषि अभि) से 07, बीएससी (कृषि) से 05, बीएफएससी (मत्स्यकी) से 04, एमएससी (कृषि) से 11, एमएफएससी (मत्स्यकी) से 03, एमबीए एग्री बिजनेस) के 01 एवं एमबीए (रुरल मैनेजमेंट) के 04 छात्र शामिल हैं। डा. त्रिवेदी ने बताया कि विश्वविद्यालय के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के छात्र जो वर्ष 2025 में पास हो रहे हैं, उनके लिए देश की विभिन्न सुप्रसिद्ध कंपनियों में कैंपस प्लेसमेंट के लिए आमंत्रण भेजा जा चुका है। इनमें से कुछ कंपनियों की वर्तमान में चयन की प्रक्रिया अलग-अलग चरणों में चल रही है, जिसका फाइनल रिजल्ट आना अभी बाकी है।

Dainik Jagran 21-06-2025

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 25 जून तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों में अच्छी वर्षा होने की संभावना है। दो दिनों के बीच कई स्थानों पर वर्षा होने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में तापमान में 2-3 डिग्री की गिरावट आ सकती है। अधिकतम तापमान 29 से 31 डिग्री जबकि न्यूनतम 23 से 25 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 21 जून | 32.0 | 24.5 |
| 22 जून | 33.0 | 24.5 |
| | दरभंगा | |
| 21 जून | 33.0 | 24.5 |
| 22 जून | 33.0 | 25.0 |
| | पटना | |
| 21 जून | 34.5 | 26.0 |
| 22 जून | 34.5 | 26.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 21-06-2025

# उत्तर बिहार में अगले 24 घंटे में वर्षा की संभावना

संस. जागरण • पूसा : उत्तर बिहार में मानसून की शुरुआत होते ही किसानों के चेहरे पर आशा की किरण दिखाई देने लगी है। हालांकि अब तक की वर्षा किसानों की आवश्यकता के अनुरूप नहीं रही है, लेकिन उम्मीद के सहारे किसानों ने धान के विचड़े गिराने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम वैज्ञानिक डा. ए. सत्तार ने बताया कि सक्रिय मानसून और कम दबाव क्षेत्र के प्रभाव से अगले चार दिनों में उत्तर बिहार में अच्छी वर्षा होने की संभावना है। 22 से 24 जून के बीच कई क्षेत्रों में मध्यम वर्षा जबकि कुछ स्थानों पर भारी वर्षा भी हो सकती है। इस दौरान अधिकतम तापमान 29 से 31 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 23 से 25 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। साथ ही 15 से 20 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने की संभावना है।कृषि विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों ने किसानों को मौसम के अनुरूप खेती के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं। उन्होंने किसानों से कहा है कि वे अपने खेतों की मेड़ों को मजबूत करें और 10 से 15 दिन पुराने धान के विचड़ों की खरपतवार सफाई कर उसमें उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति एक हजार वर्ग मीटर बीजस्थली के लिए 5 किलो अमोनियम सल्फेट या 2 किलो यूरिया का उपरिवेशन करने की सलाह दी गई है। वर्षा को ध्यान में रखते हुए किसानों को धान की रोपाई के लिए प्राथमिकता देने को कहा गया है। मध्यम और लंबी अवधि की किस्मों के लिए खेत की तैयारी के समय प्रति हेक्टेयर 30 किलो नाइट्रोजन, 60 किलो फास्फोरस, 30 किलो पोटाश और 25 किलो जिंक सल्फेट या 15 किलो चिलेटेड जिंक का प्रयोग करने की सलाह दी गई है। धान में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2 से 3 दिन बाद ब्यूटाक्लोर, प्रीटिलाक्लोर या पेन्डीमिथेलीन का छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करने का सुझाव है। इसके साथ ही खरीफ प्याज की नर्सरी तैयार करने की सलाह भी दी गई है। अनुशंसित किस्मों में एन-53, एग्रीफाउंड डार्क रेड, अर्का कल्याण और भीमा सुपर शामिल हैं। प्याज की पौधशाला को तेज धूप से बचाने के लिए 40 प्रतिशत छायादार नेट से ढंकने की बात कही गई है। मिर्च की खेती के लिए भी उन्नत और संकर किस्मों जैसे पंत मिर्च-3, पूसा ज्वाला, काशी अनमोल, अग्नि रेखा आदि का बीज गिराने का सुझाव दिया गया है।

## उत्तर विहार मानसून आने से अच्छी वर्षा की संभावना, किसानों में खुशी

संस. जागरण • पूसा : उत्तर बिहार में मानसून के आगमन के साथ ही वर्षा का प्रारंभ होते ही किसानों में खुशी देखी जा रही है। खरीफ फसलों के लिए आस जगी है। साथ ही धान का बिचड़ा गिराने का कार्य शुरू हो गया है। हालांकि, अभी तक हुई वर्षा किसानों के लिए प्राप्त नहीं है। लेकिन उम्मीद पर किसान धान का बिचड़ा गिराने का कार्य प्रारंभ कर दिया है। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम वैज्ञानिक डा. ए सत्तार ने बताया कि सक्रिय मानसून एवं कम दबाव के प्रभाव से पूर्वानुमानित अवधि अगले चार दिनों में उत्तर बिहार के अधिकतर जिलों में अच्छी वर्षा होने की संभावना है। 22-24 जून के बीच अनेक स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है, कुछ स्थानों पर भारी वर्षा होने का भी संभावना है। इस अवधि के तापमान में 2-3 डिग्री सेल्सियस की गिरावट आ सकती है। दिन का तापमान 29 से 31 डिग्री सेल्सियस जबकि न्यूनतम तापमान 23 से 25 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। मौसम विभाग का बताना है कि इस दौरान 15 से 20 किलो मीटर प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने की संभावना है।

**Dainik Jagran 21-06-2025**

# 22 से 24 के बीच बारिश की संभावना

**पूसा।** सक्रिय मानसून एवं कम दबाव के प्रभाव से उत्तर बिहार के अधिकतर जिलों में अगले चार दिनों में अच्छी वर्षा होने की संभावना है। इस दौरान 22-24 जून के बीच अनेक स्थानो पर मध्यम वर्षा हो सकती है। कुछ स्थानों पर भारी वर्षा होने का भी अनुमान विभाग ने जताया है। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने शुक्रवार को 25 जून तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है।

इसके अनुसार इस अवधि में औसतन 15 से 20 किमी. प्रति घंटे की गति से पुरवा हवा चलने का अनुमान है। पूर्वानुमान की अवधि में तापमान में गिरावट आ सकती है। दिन का तापमान 29 से 31 डिग्री एवं न्यूनतम 23 से 25 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

Hindustan_21-06-2025

# कृषि विवि के 35 छात्रों का हुआ प्लेसमेंट

**पूसा ।** डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के प्लेसमेंट सेल ने जीविका, पटना में 35 छात्रों का कैंपस प्लेसमेंट कराने में सफलता हासिल की है। इसमें 32 छात्रों को लाईवलीहुड स्पेशलिस्ट एवं 3 को यंग प्रोफेशनल के पद पर चयनित किया गया। चयनित छात्र वर्ष 2025 में उतीर्ण होने वाले हैं। चयन से छात्रों में हर्ष है। इस संदर्भ में प्लेसमेंट सेल के नियंत्री पदाधिकारी डॉ.रमण कुमार त्रिवेदी ने बताया कि चयनित छात्रों में बीटेक से 7, बीएससी से 5, मत्स्यकी महाविद्यालय से 4, एमएससी (कृषि) से 11, मत्स्यकी से 3, एमबीए एग्री बिजनेश के 1 एवं एमबीए रूरल मैनेजमेंट से 4 छात्र शामिल हैं। उन्होंने कहा कि चयनित छात्रों में सबसे अधिक 10 लाख प्रति वर्ष तक का पैकेज है। उन्होंने कहा कि कई कंपनियों की नियुक्ति प्रक्रिया पाईप लाईन में है। विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने छात्रो के चयन पर प्रसंन्नता व्यक्त की है।

Hindustan_21-06-2025

# डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के 35 छात्रों का हुआ कैंपस प्लेसमेंट

**समस्तीपुर/पूसा।** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, के प्लेसमेंट सेल, ने वर्ष 2025 में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को जीविका, पटना में विगत माह एक साथ कुल 35 छात्रों को कैपस प्लेसमेंट कराने में सफलता हासिल किया है। जिसमें से 32 छात्रों को लाईवलीहुड स्पेशलिस्ट एवं 03 छात्रों का यंग प्रोफेशनल के पद पर चयन हुआ है। इससे विश्वविद्यालय में काफी हर्ष का माहौल बना हुआ है। उक्त जानकारी देते हुए प्लेसमेंट सेल के नियंत्री पदाधिकारी डॉ. रमण कुमार त्रिवेदी ने बताया कि विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों से कुल 35 छात्रों का चयन हुआ है। चयनित होने वाले छात्रों में बी-टेक (कृषि अभि) से 07 छात्र, बी.एस.सी (कृषि) से 05 छात्र, बी.एफ.एस.सी (मत्स्यकी) से 04 छात्र, एम.एस.सी (कृषि) से 11 छात्र, एम.एफ.एस.सी (मत्स्यकी) से 03, एम.बी.ए. एग्री बिजनेस के 01 एवं एम.बी.ए. (रुरल मैनेजमेंट) के 04 छात्र शामिल है। साथ ही यह भी बताया कि इस वर्ष हमारे छात्रों की सबसे अधिक रु.10.0 लाख प्रति वर्ष का पैकेज दिया है। डॉ. त्रिवेदी ने बताया कि विश्वविद्यालय के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के छात्र जो वर्ष 2025 में पास हो रहे है, उनके लिए देश की विभिन्न सुप्रसिद्ध कंपनियों में कैपस प्लेसमेंट के लिए आमंत्रण भेजा जा चुका है। इनमें से कुछ कंपनियों की वर्तमान में चयन की प्रक्रिया अलग-अलग चरणों में चल रही हैं।

भास्कर 22/6/25 पेज 20

# योग से शारीरिक व मानसिक मजबूती मिलती है : कुलपति

## डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मना

भास्कर न्यूज | पूसा

योग करते कुलपति व अन्य।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर सामूहिक योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, शिक्षक, विद्यार्थी एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में बोलते हुए कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने कहा कि योग हमें निरोग रखता है। इससे शारीरिक और मानसिक मजबूती मिलती है जिससे हम लगातार ऊर्जावान होकर कार्य कर सकते हैं। उन्होंने कहा माननीय प्रधानमंत्री के प्रयास से योग दिवस अब पूरे संसार में मनाया जा रहा है। इससे लोगों को योग की ओर प्रवृत्त होने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में प्रतिदिन सुबह में योग का क्लास चलता है। उन्होंने कहा कि कुछ लोग तो इसमें प्रतिदिन आते हैं लेकिन कुछ लोग आलस्य वश इससे उदासीन हैं। उन्होंने सभी लोगों को प्रतिदिन योग करने के लिए प्रेरित किया। योग गुरु डॉ. जितेंद्र कुमार ने कहा कि अब एलोपैथी चिकित्सा में भी योग के महत्व को समझा जा रहा है और डा. लोगों से योग करने की अपील कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सभी लोगो को कम से कम आधा घंटा अपने स्वास्थ्य के लिए योग करना चाहिए। डॉ. जितेंद्र ने उपस्थित लोगों को कई तरह के योग और प्राणायाम कराएं। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का आयोजन छात्र कल्याण निदेशालय की ओर से किया गया था। मौके पर कुलसचिव डॉ. मृत्यंजय कुमार, सह निदेशक छात्र कल्याण डॉ. सतीश कुमार सिंह, डॉ. राजीव कुमार, निदेशक अनुसंधान डॉ. ए के सिंह, डीन पीजीसीए डॉ. मयंक राय, निदेशक शिक्षा उमाकांत बेहरा थे।

# योग से शारीरिक और मानसिक मजबूती मिलती : कुलपति

योग करते कुलपति एवं वैज्ञानिक। • जागरण

सस, जागरण, पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर सामूहिक योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विज्ञानी, शिक्षक, विद्यार्थी एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे। कुलपति डा. पी एस पांडेय ने कहा कि योग हमें निरोग रखता है। इससे शारीरिक और मानसिक मजबूती मिलती है। जिससे हम लगातार ऊर्जावान होकर कार्य कर सकते हैं। योग गुरु डा. जितेंद्र कुमार ने कहा कि अब एलोपैथी चिकित्सा में भी योग के महत्व को समझा जा रहा है। कुलसचिव डा. मृत्युंजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय ने भी योग की महत्ता को बताया।

Dainik Jagran 22-06-2025

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर जिलेभर में शनिवार को कार्यक्रमों का किया गया आयोजन, योग गुरुओं ने योगासन के तरीके सिखाए

# योग मानसिक शांति व सामाजिक सद्भाव का आधार

- सुबह 7 बजे से नौ बजे तक किया योगाभ्यास
- बच्चे, किशोर, युवा और बुजुर्ग भी हुए शामिल

## बोले एमएलसी

**समस्तीपुर, हिन्दुस्तान टीम।** एमएलसी डॉ. तरुण कुमार चौधरी ने कहा कि योग न केवल शारीरिक स्वास्थ्य, बल्कि मानसिक शांति और सामाजिक सद्भाव का भी आधार है। स्वस्थ जीवन के लिए सभी को योग अपनाने का आग्रह किया।

वे शनिवार को पटेल मैदान परिसर में भाजपा की ओर से लगाये गए योग शिविर में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। इस मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष समस्तीपुर उत्तरी नीलम सहनी और समस्तीपुर दक्षिणी के शशिधर झा, पूर्व जिलाध्यक्ष प्रो. विजय शर्मा, सत्येंद्र सिंह, जिप उपाध्यक्ष ठाकुर उदय शंकर, उमेश प्रसाद कुशवाहा, प्रभात कुमार ठाकुर, प्रदीप शाह शिवे, कैप्टन कमलेश सहनी, सुनील राय, पूर्व जिला महामंत्री सुनील गुप्ता, जिला उपाध्यक्ष मधुमाला, श्याम पासवान, पूर्व जिला उपाध्यक्ष मुकेश कुमार सिंह, सुरेंद्र झा, युवराज, रजनीश राय, सुबोध ठाकुर आदि इत्यादि शामिल थे।

इधर, व्यवहार न्यायालय परिसर में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश अखिलेश कुमार सिंह, मनोज कुमार, संजय अग्रवाल, सत्यप्रकाश शुक्ला, सरोज कुमारी ने योग किए।

उउमाविबेला पंचरुखी में प्रधानाध्यापक मुकेश कुमार के नेतृत्व में योग दिवस मनाया गया, जिसमें शिक्षक और छात्र छात्राओं ने योग शिक्षक विमल कुमार साह के दिशा निर्देश में योग किया।

पूसा कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को योग शिविर में योगाभ्यास करते वैज्ञानिक एवं छात्र। इस दौरान योग के विभिन्न आसन सिखाये गये।

## छात्र- छात्राओं को विभिन्न प्रकार के आसन और प्राणायाम सिखाया

राजकीयकृत प्लस टू उवि हरपुरसिंघिया जगतसिंहपुर के प्रांगण में भी योग दिवस मनाया गया, जिसका नेतृत्व अभाविप की ओर से प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य शालू कुमारी ने किया, छात्राओं को विभिन्न प्रकार के आसन एवं प्राणायाम सिखाए गए। कुमकुम रवि, आशी, ईरा प्रकाश, अदिति, अनुष्का, दीपम, रिशा, नूपुर, शांभवी, मुस्कान, निशा आदि उपस्थित थीं। रेल मंडल स्थित ललित कला केंद्र में योग गुरु के मार्गदर्शन में मंडल के अधिकारियों, कर्मचारियों, यूनियन व एसोसिएशन के प्रतिनिधियों ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर योगाभ्यास किया। इसमें डीआरएम विनय श्रीवास्तव ने भाग लिया। उधर, विधि महाविद्यालय परिसर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें प्रो. अजय झा, डा. संजय कुमार, अभिमन्यु कुमार, आशा सिन्हा, मंजू मिश्रा, संजीव कुमार सिन्हा, मनोज कुमार सिन्हा, अतुल सिन्हा ने योगाभ्यास किया।

## शरीर को स्वस्थ व ऊर्जावान बनाने में योग अहम, दिनचर्या में करें शामिल : वीसी

**पूसा।** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास करता है। वे शनिवार को विवि के पोर्टिको में आयोजित विश्व योग दिवस समारोह के मौके पर वैज्ञानिकों व छात्रों को संबोधित कर रहे थे। योग गरु डॉ. जितेन्द्र कुमार ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम आधे घंटे योग और प्राणायाम करने की जरूरत है। कुलसचिव डॉ. मृत्युंजय कुमार ने कहा कि योग शांति का मार्ग है। विवि के एनएसएस ईकाई व छात्र कल्याण निदेशालय के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित योग शिविर में प्रशिक्षक ने छात्रों और वैज्ञानिकों को योग व प्राणायाम के गुर सिखाये। स्वागत सह निदेशक छात्र कल्याण डॉ. सतीश कुमार सिंह एवं धन्यवाद डॉ. राजीव कुमार ने किया। डीन डॉ. मयंक राय, डीआर डॉ. अनिल कुमार सिंह, नियंत्रक डॉ. पीके झा, डीई डॉ. उमाकांत बेहरा, निदेशक डॉ. रामदत्त, डॉ. राकेशमणी शर्मा, डॉ. आरके झा आदि थे।

## योग करने से शरीर व मन रहता है तंदुरुस्त

**सरायरंजन।** विभिन्न स्थानों पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर योग शिविर का आयोजन किया गया। आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय सरायरंजन, गंगापुर स्कूल, लाटबसेपुरा स्कूल और भाजपा कार्यकर्ताओं ने योग शिविर लगाया। प्रधानाध्यापक रवींद्र कुमार ठाकुर ने कहा कि योग करने से शरीर व मन दोनों तंदुरुस्त रहता है इसलिए हर लोगों को हर रोज योग करना चाहिए।

पटेल मैदान में शनिवार को योग करते भाजपा कार्यकर्ता एवं अन्य।

## बच्चों को कराया गया योग

बालिका उच्च विद्यालय में भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मौके पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की दीदी कुंदन, डॉ. उमेश प्रसाद, डॉ. मधुकर निराला, सावित्री देवी, दिनेश महतो मौजूद थे।

**अंतरराष्ट्रीय योग दिवस.** जिले के शिक्षण संस्थानों के साथ अन्य संगठनों में कार्यक्रम आयोजित

# योग हमलोगों को रखता है निरोग : कुलपति

दीप जलाकर योग कार्यशाला का उद्घाटन करते कुलपति.

**प्रतिनिधि,पूसा**

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर सामूहिक योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इसमें वैज्ञानिक, शिक्षक, विद्यार्थी एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि योग हमें निरोग रखता है. इससे शारीरिक और मानसिक मजबूती मिलती है. जिससे हम लगातार ऊर्जावान होकर कार्य कर सकते हैं. उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के प्रयास से योग दिवस अब पूरे संसार में मनाया जा रहा है. इससे लोगों को योग की ओर प्रवृत्त होने की प्रेरणा मिलती है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में प्रतिदिन सुबह में योग का क्लास चलता है. उन्होंने कहा कि कुछ लोग तो इसमें प्रतिदिन आते हैं लेकिन कुछ लोग आलस्य वश इससे उदासीन हैं. उन्होंने सभी लोगों को प्रतिदिन योग करने के लिए प्रेरित किया. योग गुरु डॉ जितेंद्र कुमार ने कहा कि अब एलोपैथी चिकित्सा में भी योग के महत्व को समझा जा रहा है. लोगों को कम से कम आधा घंटा अपने स्वास्थ्य के लिए योग करना चाहिए. उपस्थित लोगों को कई तरह के योग और प्राणायाम कराये. कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार ने कहा कि सबको मिलकर योग करना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का आयोजन छात्र कल्याण निदेशालय की ओर से किया गया था. सह निदेशक छात्र कल्याण डॉ सतीश कुमार सिंह ने कार्यक्रम के दौरान लोगों का स्वागत किया. डॉ राजीव कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया. कार्यक्रम के दौरान निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, डीन पीजीसीए डॉ मयंक राय, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ शिवपूजन सिंह , डॉ महेश कुमार, ई. मनोज कुमार, डॉ कुमार राज्यवर्धन उपस्थित रहे.

**नित्य योगाभ्यास स्वस्थ जीवन का आधार हैः रोसड़ा.** नित्य योगाभ्यास स्वस्थ जीवन का आधार है जिसे अनिवार्यरूप से अपनाया जाना चाहिए. यह उद्गार सुंदरी देवी सरस्वती विद्या मंदिर सैनिक स्कूल बटहा में आयोजित 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह में बतौर मुख्य अतिथि योगगुरु धीरेंद्र कुमार धीरज ने व्यक्त किया. अध्यक्षीय उद्बोधन में विद्यालय के अध्यक्ष बिनोद कुमार ने योग को विश्व के लिए ऋषियों के द्वारा प्रदान की गई महत्वपूर्ण देन बताया. सचिव प्रदीप कुमार कुशवाहा और विभाग निरीक्षक कृष्ण कुमार प्रसाद ने योग दिवस की शुभकामनाएं देते हुए इसे आजीवन दिनचर्या का अभिन्न अंग बनाने की अपील की. समाजसेवी नीरज कुमार सिंह ने कहा कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य संतुलन में योग बहुत सहायक है. प्रधानाचार्य रामचंद्र मंडल ने सूर्य नमस्कार का अभ्यास मंत्र सहित कराया. मीडिया प्रभारी आचार्य विजयव्रत कंठ ने """"""आओ बच्चों करें योग हम, ताकि सदा निरोग रहें हम """"""शीर्षक काव्यपाठ कर योग करने को प्रेरित किया. शारीरिक संचालन इंस्ट्रक्टर ऋषिकेश ने कराया. शारीरिक प्रशिक्षक अशोक कुमार सिंह ने विभिन्न प्रकार के आसनों ताड़ासन, वीरभद्रासन, वज्रासन, भुजंगासन, मकरासन कपालभाति, अनुलोम विलोम, भ्रामरी,भस्त्रिका, उज्जायी जैसे प्राणायामों के अभ्यास के साथ उनसे होनेवाले शारीरिक लाभों से भी अवगत कराया. संचालन आचार्य पंकज कुमार पार्थ और श्वेता झा ने किया. भैया अनिकेत, ईशान, रामनिवास, बहन शुभी, सूची ने भी योग के महत्व से संबंधित अपने विचार प्रकट किये. अतिथि परिचय आचार्य घनश्याम मिश्र ने कराया. स्थापना मंत्र और शांतिमंत्र आचार्य रामशंकर झा ने प्रस्तुत किया. धन्यवाद ज्ञापन प्रधानाचार्य रामचंद्र मंडल ने किया.

रोसड़ा में योग दिवस पर उपस्थित अतिथि.

## सिटी सेंट्रल स्कूल की शाखाओं के बच्चों ने किया योगाभ्यास

**समस्तीपुर** .सिटी सेंट्रल स्कूल ग्रुप के मोहनपुर, भूईंधारा, नकटा, मूसापुर व जितवारिया शाखाओं में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया. इस अवसर पर, छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने योग के महत्व को समझा और विभिन्न योग आसनों का अभ्यास किया. कार्यक्रम की शुरुआत सिटी सेंट्रल स्कूल ग्रुप के चेयरमैन संजीव कुमार पाण्डेय के प्रेरणादायक भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने योग के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभों पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि योग एक प्राचीन भारतीय परंपरा है जो हमें स्वस्थ, शांत और केंद्रित रहने में मदद करती है. वरिष्ठ प्राचार्य चिरंजीत कुमार ठाकुर, मोहनपुर शाखा की प्राचार्य मुल्लाथारा कविता करुणाकरण, जितवारिया शाखा के प्राचार्य मनीष कुमार, भूईंधारा शाखा के प्राचार्य श्याम कुमार चौरसिया, मुसापुर शाखा की प्राचार्या सुप्रिया कुमारी, नकटा शाखा के प्राचार्य रूपांजली कुमारी, शिक्षक संदीप, शशांक, रामप्रवेश, कल्पना, शबनम, ऋतिक, आयुष, मनीष भारद्वाज, गुंजन, अर्जुन ठाकुर आदि ने अपने विचार व्यक्त किये. योग को दैनिक जीवन में शामिल करने के महत्व पर जोर दिया. छात्रों ने योग सत्र में उत्साहपूर्वक भाग लिया. इसमें विभिन्न आसन, प्राणायाम और ध्यान शामिल थे. कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को योग के प्रति जागरूक करना और उन्हें स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना था.

योग करते स्कूली बच्चे.

दलसिंहसराय में योग करतीं महिलाएं-पुरुष.

## स्वास्थ्य ठीक रखने व बीमारियों से मुक्ति के लिए योग जरूरी

**प्रतिनिधि,दलसिंहसराय**

स्थानीय रामपुर जलालपुर स्थित राम लखन महतो इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन परिसर में 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस उत्साह के साथ मनाया गया. शारीरिक शिक्षक मुकेश कुमार राय के संचालन में सभी ने इसमें हिस्सा लेकर योग के विभिन्न लाभप्रद आसनों का अभ्यास किया. इसे प्रतिदिन करने का प्रण लिया. सहायक प्राध्यापक डॉ. निर्मल कुमार चंचल ने योग की महत्ता बताते हुए कहा कि स्वास्थ्य ठीक रखने एवं बीमारियों से मुक्ति के लिए लोगों को समय निकाल कर योगा अवश्य करना चाहिए. सहायक प्राध्यापक सत्यम ने कहा योग करने वाले लोग निरोग रहते हैं. मौके पर डीएलएड विभागाध्यक्ष मो. इमामुद्दीन, कार्यालय अधीक्षक पल्लव पारस, केशव कुमार चौधरी, राजेश कुमार गिरी, हसन राजा अंसारी, उमा शंकर चंदन, योगेश कुमार, नीलम कुमारी, रूपम कुमारी, रूपक कौशल थे. वहीं शिक्षा विहार में योग शिविर का आयोजन निदेशक सुशांत चन्द्र मिश्र के नेतृत्व में किया गया. मौके पर संस्थान के मनीष सिंह, वीरेंद्र कुमार, प्रीति प्रियदर्शीनी थे. अनुमंडलीय विधिक सेवा समिति की ओर से सिविल कोर्ट परिसर में न्यायाधीश व अधिवक्ताओं ने योगाभ्यास किया. कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए अनुमंडल न्यायिक दंडाधिकारी सह अनुमंडलीय विधिक सेवा समिति के सचिव काजल सोनावाला ने कहा कि योग का अर्थ एकसाथ होना है. यह हमारे शरीर, मन और आत्मा को एक साथ जोड़ने का एक तरीका है. पूसा : स्थानीय उच्च विद्यालय में सीओ पल्लवी, बीडीओ रवीश कुमार रवि, थानाध्यक्ष ब्रजेश कुमार सिंह, प्राचार्य नूतन कुमारी ने संयुक्तरूप से दीप जलाकर योग शिविर का उद्घाटन किया.

**Prabhat khabar 22-06-2025**

# योग साधक महर्षि पतंजलि योग गुरु सम्मान से सम्मानित

**पूसा .** डॉ. राजेश कुमार जो स्थनीय डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में सहायक के पद पर कार्यरत हैं उन्हें योग साधना एवं योग के प्रति लोगों में जागरूकता लाने तथा योग के क्षेत्र में में विशेष योगदान के लिए 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर भारत सरकार, लघु उद्योग मंत्रालय से मान्यता प्राप्त संस्था भावना कला एवं साहित्य फाउंडेशन जयपुर, राजस्थान द्वारा महर्षि पतंजलि योग गुरु सम्मान, 2025 से नवाजा गया है. डॉ. कुमार का कहना है, कि निरंतर योग साधना और खानपान में परंपरागत विधियों खासकर मोटे अनाज से पकवान तैयार कर सही समय पर आहार-विहार युक्त जीवन पद्धति से आम जनमानस असाध्य रोगों से बिल्कुल मुक्त रह सकते हैं. उनकी इस उपलब्धि पर स्थानीय समाज एवं उनके शुभचिंतक काफी गौरवान्वित है. इसकी चर्चा चारों तरफ हो रही है.

Prabhat Kahara 22-6-25

# योग हमें रखता है निरोग : कुलपति

**पूसा (एसएनबी)।** डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के परिसर में छात्र कल्याण निदेशालय की ओर से अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर सामुहिक योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ उपस्थित योग गुरु व कुलपति ने संयुक्त रुप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के

**डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति ने कहा-तन-मन और आत्मा के संतुलन की विद्या है योग**

वैज्ञानिक, शिक्षक, छात्र छात्राएं एवं पदाधिकारी शामिल हुए।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि योग हमें निरोग रखता है। इससे शारीरिक और मानसिक मजबूती

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में दीप प्रज्वलित करते योग गुरु व कुलपति।

मिलती है। इसलिए योग को जीवन में अपना कर ऊर्जावान बना जा सकता है। उन्होंने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री के प्रयास से योग दिवस अब पूरे विश्व में मनाया जा रहा है। उन्होंने ने कहा कि योग ऐसी विद्या है जो तन मन और आत्मा को संतुलन में रखती है। वही योग अनुशासन और आत्म चिंतन सिखातीं है। डॉ पाण्डेय ने कहा कि आत्म निर्भर भारत बनाने में योग की भूमिका अहम होगी। अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में प्रतिदिन सुबह में योग का क्लास चलता है। कुछ लोग तो इसमें प्रतिदिन आते है लेकिन कुछ लोग उदासीन है। यह आपके स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता है। योग गुरु डॉ जितेंद्र कुमार ने कहा कि अब एलोपैथी चिकित्सा में भी योग के महत्व को समझा जा रहा है। अब चिकित्सक लोगों से योग करने की अपील कर रहे है। उन्होंने कहा कि सभी लोगो को कम से कम आधा घंटा अपने स्वास्थ्य के लिए योग करना चाहिए। डॉ जितेंद्र ने उपस्थित लोगों को कई तरह के योग और प्राणायाम करवायें। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार ने भी जीवन में योग के महत्व एवं इसके प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता का जिक्र किया। सह निदेशक छात्र कल्याण डॉ सतीश कुमार सिंह ने कार्यक्रम के दौरान लोगों का स्वागत किया और डॉ राजीव कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मौके पर निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, डीन पीजी सीए डॉ मयंक राय, निदेशक शिक्षा डॉ उमाकांत बेहरा, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ महेश कुमार, ई मनोज कुमार, डॉ कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

Rashtriya Sahara 22-06-2025

दैनिक भास्कर - 23/06/25 P. 17

**मौसम** • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग के वरीय वैज्ञानिक ने दी जानकारी

# तय समय से पहले आया मानसून, इस साल सामान्य से अधिक वर्षा की बन रही संभावना

## किसानों को लाभ : दो से तीन दिनों में 40-50 एमएम बारिश के आसार

भास्कर न्यूज़ | पूसा

इस साल मानसून तय समय से कुछ दिन पहले ही भारत में प्रवेश कर गया है। गत वर्ष की तुलना में इस साल मानसून के दौरान अच्छी बारिश होने की भरपूर संभावना है। अच्छी बारिश खासकर बिहार के धान उत्पादक किसानों को काफी फायदा पहुंचाएगा। ये बातें डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के मौसम विभाग के वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक डॉ. अब्दुस सत्तार ने भास्कर से खास बातचीत के दौरान कही। मानसून क्या हैं और यह कब तक सक्रिय रहता हैं। इस सवाल का जबाब देते हुए मौसम वैज्ञानिक डॉ. अब्दुस सत्तार ने कहा कि मानसून हवा की एक ऐसी प्रणाली हैं जिसकी दिशा बदलने से औसतन 100 से 110 दिनों तक रुक रुककर बारिश होती रहती हैं। मानसून पूरी तरह हवाओं के बहाव पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि भारतीय उप महादेश का मॉनसून सबसे बेहतर मानसून माना जाता है। कभी कभी मॉनसून कमजोर पड़ जाता हैं लेकिन जब हवाओं में मौसमीय बदलाव होने लगता हैं तब मॉनसून सक्रिय हो जाता हैं। मौसम वैज्ञानिक ने बताया कि इस साल मॉनसून के चक्र में सामान्य से ज्यादा बारिश होने की संभावना हैं। वैज्ञानिक के अनुसार आने वाले दो से तीन दिनों में बिहार में अच्छी बारिश होने के आसार हैं। इस दौरान औसतन 40 से 50 एमएम बारिश होने की संभावना हैं।

रविवार को दिनभर आसमान में बादल छाए रहे।

### दो प्रकार के होते हैं मानसून, अभी दक्षिण मानसून का प्रभाव

मौसम वैज्ञानिक के अनुसार मानसून दो प्रकार के होते हैं। पहला दक्षिण पश्चिम मानसून और दूसरा उत्तर पूर्व मॉनसून। जून महीने में शुरू होने वाला मॉनसून दक्षिण पश्चिम कहलाता है। यह जून से सितंबर यानी 100 से 110 दिनों तक सक्रिय रहता हैं। इस दौरान अच्छी बारिश होती हैं। जून वाले मॉनसून में औसतन 75 से 80 प्रतिशत बारिश होती हैं। दक्षिण पश्चिम मॉनसून अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से नमी लाकर देश में बारिश करता है। औसतन देश को सालाना 880.6 एमएम वर्षा मानसून से ही प्राप्त होती है। डॉ. अब्दुस सत्तार ने बताया कि उत्तर पूर्वी बिहार में मॉनसून 17 जून से सक्रिय हो गया है। फिलहाल मॉनसून पूरे बिहार में सक्रिय हो गया हैं।

### किसान लंबी अवधि वाले धान की किस्मों का बिचड़ा तत्काल गिरा दें

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के धान वैज्ञानिक डॉ. नीलांजय के अनुसार धान की खेती के लिए मॉनसून बिहार में दस्तक दे चुका है। आने वाले दिनों में अच्छी बारिश होगी। किसान जहां सिंचाई की सुविधा कम हैं वैसे खेतों में धान लगाने के लिए वे मध्यम व कम अवधि वाले किस्मों जैसे राजेंद्र श्वेता, राजेंद्र नीलम, प्रभात, राजेंद्र कस्तूरी, राजेंद्र सुहासिनी आदि किस्मों का बिचाड़ा बारिश शुरू होते ही गिरा सकते हैं। जब बिचाड़ा 22 से 25 दिन हो जाएं तो उसे उखाड़कर खेत में रोपाई कर सकते हैं। यदि कोई किसान सीधी बुआई करना चाहते है तो वे धान की सीधी बुआई भी कर सकते है। ऊपर बताएं गए धान के किस्में सीधी बुआई के लिए उपयुक्त हैं। धान वैज्ञानिक ने बताया वैसे किसान जिनके खेत के पास सिंचाई की व्यवस्था हैं वे लंबी अवधि वाले धान की किस्मों जैसे राजश्री, राजेंद्र मसूरी 1, स्वर्णा, बीपीटी 5204 आदि का बिचड़ा भी गिरा सकते है। किसान लंबी अवधि वाले धान के किस्मों का बिचाड़ा तत्काल गिरा दें। डॉ. नीलांजय ने बताया कि गुणवत्तापूर्ण चावल के लिए विश्वविद्यालय की किस्म राजेंद्र कस्तूरी, राजेंद्र सुभाषिनी, राजेंद्र श्वेता, सुगंधा आदि धान के किस्मों को लगा सकते हैं। ये किस्में मध्यम अवधि की किस्में हैं।

कृषि • सोयाबीन की खेती में कम लागत व अधिक मुनाफा, बीमारियों को दूर करने में भी है सहायक

# सोयाबीन की खेती के लिए समय उपयुक्त वैज्ञानिक तकनीक से होगी बेहतर उपज

दैनिक भास्कर - 23/6/25 P-20

भास्कर न्यूज | पूसा

बिहार के किसान जून-जुलाई माह में सोयाबीन की वैज्ञानिक खेती कर उससे बेहतर उत्पादन और आय दोनों प्राप्त कर सकते हैं। सोयाबीन की खेती में जहाँ लागत पूंजी काफी कम लगती है। वहीं इसका सेवन कई तरह की बीमारियों को दूर करने में सहायक होता हैं। ये जानकारी बोरोलॉग इंस्टीच्यूट फॉर साउथ एशिया के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजकुमार जाट ने दी है। उन्होंने कहा कि इसकी खेती को अन्य फसलों के साथ भी आसानी से किया जा सकता है। बीसा के परिसर में इसकी खेती अनुसंधान के तौर पर कई वर्षो से की जा रही है। किसान यहां पहुंचकर भी इसे लगाने की जानकारी वैज्ञानिकों से प्राप्त कर सकते हैं। डॉ. जाट ने बताया कि सोयाबीन लगाने के लिए किसान सबसे पहले रोटावेटर से 4 चास खेत की जुताई अच्छे से करें तत्पश्चात इसमें किसी भी अनुसंशित कंपनी का सोयाबीन बीज प्रति कट्ठा एक किलो ग्राम की दर से बुआई कर दें। सोयाबीन की फसल में न तो विशेष रूप से कुछ खास उर्वरक डालने की आवश्यकता होती है और न ही खास सिंचाई की। सोयाबीन के फसल में कभी कभी उखड़ा रोग देखने को मिलता है जिससे फसल को बचाने के लिए किसान बुआई के समय ही खेतों में निर्धारित मात्रा में थाइमेट मिला देते है। उन्होंने बताया कि सोयाबीन के बुआई का समय और इसका कार्यकाल बरसात के मौसम में ही होता है इसलिए इसमें कुछ खास सिंचाई भी जरूरत नही पड़ती है। पौधा निकल जाने के बाद खरपतवार नियंत्रण के लिए एक बार निकौनी कराने की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि सोयाबीन की उपज प्रति बीघा लगभग आठ क्विंटल तक होती है। एक बीघे में सोयाबीन की खेती करने पर किसानों को लगभग 10 हजार रुपये की लागत आती है जबकि इससे कम से कम 25 हजार की आमदनी किसानों को प्राप्त आसानी से होती है।

खेत में लगी सोयाबीन की फसल।

## इसका सेवन लोगों के लिए काफी लाभकारी

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि सोयाबीन का सेवन शरीर के कोशिकाओं का विकास करने के साथ क्षतिग्रस्त कोशिकाओं की मरम्मत भी करता है। यह मानसिक संतुलन को बेहतर बनाकर दिमाग को तेज करने का काम करता है। इसका सेवनदिल के रोग सहित कई तरह के बिमारियों में काफी फायदेमंद है। सोयाबीन में एंटी-ऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं जो कई तरह के कैंसर को रोकने में मदद करता है।

## सोयाबीन की खेती के लिए दोमट मिट्टी जरूरी

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि सोयाबीन की फसल के लिए दोमट मिट्टी काफी उपयुक्त मानी जाती है। इस मिट्टी का पीएच मान 6 से 7.5 के बीच होना चाहिए। जिस एरिया में सोयाबीन की खेती की जानी है वहा अगर बारिश 60 से लेकर 70 सेंटीमीटर तक होती है तो यह अच्छी मानी जाती है। बुआई करने से पहले किसानों के लिए मिट्टी की जांच करा लेना जरूरी होता हैं। इसकी बुआई का उपयुक्त समय 15 जून से 15 जुलाई के बीच होता है।

## रोग दिखे तो करें दवा का छिड़काव

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि सोयाबीन की फसल पर कभी कभी कली झुलसा रोग लग जाता है। यह एक प्रकार का बीज जनित रोग है। इस रोग से बचाव के लिए किसान खड़ी फसल पर डाइथेन जेड 78 और डाइथेन एम 45 की दो किलो मात्रा प्रति हेक्टेयर हजार लीटर पानी में घोलकर फसलों पर छिड़काव करें। इन दवाओं का छिड़काव करने से फसल कीट रहित होकर रोग से बची रहेगी।

दैनिक भास्कर - 23/06/25 P- 17

मंडे पॉजिटिव मछलियों के बीज उत्पादन में किसान आधुनिक व वैज्ञानिक विधि को अपनाएं, , प्रशिक्षण के साथ प्रोत्साहन भी मिलेगा

# छोटे तालाब में भी मछली बीज उत्पादन से लाखों की कमाई होगी

भास्कर न्यूज़ | पूसा

सीमांत किसान अब कम जमीन और लागत में मछली बीज यानी बिचरे का उत्पादन कर अच्छी कमाई कर सकते हैं। मत्स्य वैज्ञानिकों ने बताया कि 5 से 7 कट्ठा जमीन वाले किसान भी सालाना एक लाख रुपए तक कमा सकते हैं। सरकार भी इस दिशा में किसानों को प्रोत्साहित कर रही है। बीज उत्पादन शुरू करने पर सब्सिडी दी जा रही है। बेरोजगार ग्रामीण युवा और किसान प्रशिक्षण लेकर इस व्यवसाय को आमदनी का जरिया बना सकते हैं। इससे गांव के अन्य बेरोजगारों को भी रोजगार मिलेगा। ग्रामीण इलाकों में अभी मछली बीज उत्पादन की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। मछलीपालकों को दूर-दराज के केंद्रों से बीज लाना पड़ता है। इससे लागत बढ़ती है और बीज के मरने का खतरा भी रहता है। छोटे तालाबों में बड़ी मछलियों का पालन मुश्किल होता है। ऐसे में सीमांत किसान छोटे तालाबों में बीज उत्पादन कर मुनाफा कमा सकते हैं। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मत्स्य वैज्ञानिक डॉ. शिवेंद्र कुमार ने बताया कि छोटे तालाबों में जीरा, स्पॉन, फ्राई पौना और अंगुलिका का उत्पादन कुछ जरूरी उपायों से आसानी से किया जा सकता है। जीरा उत्पादन से पहले तालाब से खरपतवार, अवांछित मछलियों और जलीय कीटों का उन्मूलन जरूरी है। कुछ किसान खरपतवार हटाने के लिए रसायन का प्रयोग करते हैं। रसायन के बाद 20 से 25 दिन तक मछली नहीं डालनी चाहिए। बेहतर होगा कि खरपतवार को हाथ से हटाया जाए।

## नर्सरी तालाब में प्राकृतिक भोजन के साथ पूरक आहार भी जरूरी

स्पॉन को तालाब में छोड़ने से पहले उसकी प्लास्टिक थैली को 10 से 15 मिनट तक पानी की सतह पर रखें। फिर थैली खोलकर तालाब का थोड़ा पानी उसमें भरें और धीरे-धीरे स्पॉन को तालाब में छोड़ें। नर्सरी तालाब में प्राकृतिक भोजन के साथ पूरक आहार भी जरूरी है। इसके लिए सरसों की खली और चावल की भूसी बराबर मात्रा में मिलाकर, पीसकर और छानकर सुबह-शाम दो बार दें। एक लाख स्पॉन के लिए पहले 5 दिन तक 600 ग्राम, 6 से 10 दिन तक 1200 ग्राम और 11 से 14 दिन तक 1800 ग्राम आहार प्रतिदिन दें। एक लाख स्पॉन का कुल वजन लगभग 140 ग्राम होता है।

## कीट नियंत्रण : एक हेक्टेयर जल क्षेत्र में 50 लीटर डीजल का छिड़काव करें

तालाब में अवांछित मछलियां नहीं होनी चाहिए। ये जीरा को खा जाती हैं। जलीय कीट भी जीरा को तेजी से मारते हैं। कीट नियंत्रण के लिए एक हेक्टेयर जल क्षेत्र में 50 लीटर डीजल का छिड़काव करें। यह सुबह या शाम को करें, जब हवा शांत हो। तालाब में चुना डालना भी जरूरी है। यह मछलियों के प्राकृतिक भोजन और बीमारी फैलाने वाले जीवों पर असर करता है। चुना 200 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से डालें। जीरा डालने से पहले ब्लीचिंग पाउडर का प्रयोग भी किया जा सकता है। जीरा डालने से एक सप्ताह पहले तालाब में 500 किलोग्राम केंचुए की खाद या 2000 किलोग्राम सड़ा हुआ गोबर प्रति हेक्टेयर डालें। इसके साथ 25 किलोग्राम यूरिया और 50 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट भी डालें। नर्सरी तालाब में 50 लाख स्पॉन प्रति हेक्टेयर की दर से डाले जाते हैं। ये स्पॉन एक ही जाति या मिश्रित हो सकते हैं। स्पॉन हमेशा मान्यता प्राप्त संस्थान या हेचरी से ही खरीदें।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 25 जून तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों में अच्छी वर्षा होने की संभावना है। दो दिनों के बीच कई स्थानों पर वर्षा होने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में तापमान में 2-3 डिग्री की गिरावट आ सकती है। अधिकतम तापमान 29 से 31 डिग्री जबकि न्यूनतम 23 से 25 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 23 जून | 34.0 | 26.0 |
| 24 जून | 34.5 | 26.0 |
| दरभंगा | | |
| 23 जून | 34.5 | 26.0 |
| 24 जून | 34.5 | 27.0 |
| पटना | | |
| 23 जून | 35.5 | 28.0 |
| 24 जून | 35.5 | 28.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 23-6-25

# मशरूम से जुड़ी तीन योजनाओं पर मिलेगा अनुदान, किसान होंगे मालामाल

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : मशरूम उत्पादन से जुड़े किसानों के लिए खुशखबरी है। इस खेती से जुड़े किसानों को भी सरकार अनुदान देगी। इससे पहले सरकार मुफ्त प्रशिक्षण के अलावा मशरूम स्पान पर ही किसानों को अनुदान देती थी। सरकार ने पहली बार चालू वित्तीय वर्ष से मशरूम से जुड़ी तीन योजनाओं पर अनुदान देने का फैसला लिया है। इसमें मशरूम उत्पादन इकाई, मशरूम स्पान इकाई तथा मशरूम कंपोस्ट इकाई शामिल है। योजना का मुख्य उद्देश्य राज्य में मशरूम उत्पादन में वृद्धि करते हुए किसानों की आय में वृद्धि करना एवं मशरूम उत्पादन कार्यक्रम के द्वारा लोगों को स्वरोजगार में वृद्धि करना है। इन तीनों योजनाओं की लागत 80 लाख है। जिस पर किसानों को 40 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा। किसान अलग-अलग योजनाओं को लेना चाहें तो इसकी भी स्वतंत्रता है। किसान किसी भी योजना का चयन कर सकते हैं। केंद्र प्रायोजित योजना एकीकृत बागवानी विकास मिशन अंतर्गत मशरूम उत्पादन के लिए वातानुकूलित आधारभूत संरचना की योजना वित्तीय वर्ष 2025-26 में कार्यान्वयन हेतु स्वीकृति प्रदान की है। सहायक निदेशक उद्यान प्रशांत कुमार ने बताया कि मशरूम से जुड़ी तीन योजनाओं की शुरुआत की गई है। सभी योजनाओं पर 40 फीसद तक अनुदान देने का प्रावधान है। इसके लिए किसानों से आवेदन लिया जा रहा है।

- मशरूम स्पान, मशरूम उत्पादन एवं मशरूम कंपोस्ट इकाई पर मिलेगा अनुदान
- मशरूम उत्पादन कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को स्वरोजगार में वृद्धि करने का लक्ष्य

**40** प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा किसानों को

## पहले आओ पहले पाओ की तर्ज पर मिलेगा लाभ

योजना का लाभ लेने के लिए इच्छुक किसानों को डीबीटी पोर्टल पर आनलाइन आवेदन करना होगा। इसमें किसानों को पहले आओ पहले पाओ की तर्ज पर लाभ मिलेगा। मशरूम उत्पादन, मशरूम कंपोस्ट एवं मशरूम स्पान में आनलाइन आवेदन करने पर मुख्यालय स्तर पर समीक्षा की जाएगी। योजना का लाभ लेने के लिए आवेदकों को आवेदन के साथ मशरूम का दो दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण प्रमाण पत्र, ले-आउट प्लान, परियोजना प्रस्ताव एवं बैंक द्वारा ऋण देने की सहमति पत्र रिपोर्ट आनलाइन अपलोड करना अनिवार्य किया गया है।

**तीन योजनाओं पर देय है अनुदान की राशि :** मशरूम उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने तीन योजनाएं शुरू की है। इस पर लागत का 40 फीसद अनुदान किसानों को दिया जाएगा। मशरूम उत्पादन इकाई की लागत 30 लाख है। इस पर 12 लाख अनुदान है। इसी तरह मशरूम कंपोस्ट उत्पादन इकाई की लागत भी 30 लाख है। इस पर 12 लाख अनुदान दिया जाएगा। मशरूम स्पान इकाई की लागत 20 लाख है। इस पर 8 लाख रुपये का अनुदान है।

Dainik Jagran 23-6-25

# 25 से 29 जून तक हल्की बारिश की संभावना

**समस्तीपुर.** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग 25 से 29 जून 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया. पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा होने की संभावना है. समस्तीपुर, वैशाली, बेगूसराय, सारन, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी तथा पूर्वी चम्पारण जिलों में अगले 3 से 4 दिनों में अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा होने की संभावना है. उसके बाद 28 से 29 जून को उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है. पूर्वी तथा पश्चिमी चम्पारण जिलों में कुछ स्थानों पर पूर्वानुमानित अवधि में मध्यम से भारी वर्षा हो सकती है. इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 35 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है. जबकि न्यूनतम तापमान 24 से 26 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है. सापेक्ष आद्रर्ता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 10 से 15 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने का अनुमान है.

आज का अधिकतम तापमान 29.8 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 4.4 डिग्री सेल्सियस कम रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 25.0 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 1.6 डिग्री सेल्सियस कम रहा.

प्रभात खबर
Wednesday, June 25, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/685af9f99c734065c2c6122e

# देश को दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाना जरूरी : डा राय

**प्रतिनिधि,पूसा**

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा द्वारा मैनेज हैदराबाद के सहयोग से 3 दिवसीय राष्ट्रीय स्तरीय प्रशिक्षण (वर्चुअल मोड) कार्यक्रम का आयोजन भारत के संदर्भ में वैश्विक भूख सूचकांक को कम करने के लिए खाद्य एवं पोषण सुरक्षा विषय पर किया गया. शुभारंभ करते हुए कृषि स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं प्रसार शिक्षा निदेशक, डा. मयंक राय ने कहा कि समय आ चुका है कि भारत दलहन और तिलहन उत्पादन में भी आत्मनिर्भर बने. उन्होंने बल देते हुए कहा कि भारत द्वारा परीक्षण की जा रही जैव-संवर्धित बायो-फोर्टीफाइड फसलें किस प्रकार खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा दे सकती है और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को भी कम कर सकती है. डॉ. उषा सिंह ने आहार विविधता के माध्यम से पोषण सुरक्षा प्राप्त करना एवं विश्वविद्यालय के कई पोषणयुक्त उत्पादों के माध्यम से कैसे कुपोषण को काम किया जा सकता है इस पर बल दिया. डॉ ऋतंभरा सिंह ने किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ), मूल्य श्रृंखला और बाजार संपर्क द्वारा कुपोषण को कैसे काम किया जा सकता है पर विस्तार से चर्चा की. डॉ. अपर्णा राधाकृष्णन ने उर्ध्वाधर खेती और केरल मॉडल को अपनाकर खाद्य और पोषण सुरक्षा के लक्ष्य पर ज्ञान साझा किया. प्रशिक्षण कार्यक्रम में 21 राज्य, 68 विभिन्न संस्थानों के 214 प्रशिक्षणार्थी ने भाग लिये. डा. सुधानन्द प्रसाद लाल ने संचालन किया. धन्यवाद ज्ञापन डा. सत्य प्रकाश ने किया.

प्रभात खबर
Wednesday, June 25, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/685af9f99c734065c2c61240

भास्कर 25/6/25 पेज 14

कार्यक्रम • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि की ओर से तीन दिवसीय राष्ट्रीय स्तरीय प्रशिक्षण

# देश को दलहन व तिलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने की जरूरत : मयंक

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा द्वारा मैनेज हैदराबाद के सहयोग से 3 दिवसीय राष्ट्रीय स्तरीय (वर्चुअल मोड) प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का विषय भारत के संदर्भ में वैश्विक भूख सूचकांक को कम करने के लिए खाद्य एवं पोषण सुरक्षा पर आधारित था। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए कृषि स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं प्रसार शिक्षा निदेशक डा. मयंक राय ने कहा कि समय आ चुका है कि भारत दलहन और तिलहन उत्पादन में भी आत्मनिर्भर बने और विदेशों पर निर्भरता कम करें। उन्होंने कहा कि भारत द्वारा परीक्षण की जा रही जैव-संवर्धित (बायो-फोर्टीफाइड) फसलें खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा दे सकती हैं और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को भी कम कर सकती हैं। डॉ. उषा सिंह, अधिष्ठाता सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय ने आहार विविधता के माध्यम से पोषण सुरक्षा प्राप्त करने एवं विश्वविद्यालय के कई पोषण युक्त उत्पादों के माध्यम से कैसे कुपोषण को कम किया जा सकता है इस पर बल दिया। डॉ. ऋतंभरा सिंह ने किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ), मूल्य श्रृंखला और बाजार संपर्क द्वारा कुपोषण को कैसे कम किया जा सकता है इस पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. अपर्णा राधाकृष्णन वैज्ञानिक केरल कृषि विश्वविद्यालय ने ऊर्ध्वाधर खेती और केरल मॉडल को अपनाकर खाद्य और पोषण सुरक्षा के लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया जा सकता है इस पर अपनी ज्ञान साझा की। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 21 राज्य के 68 विभिन्न संस्थानों के 214 प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे हैं। डा. सुधानन्द प्रसाद लाल ने कार्यक्रम का संचालन किया। बता दें कि भारत में पाँच वर्ष से कम उम्र के 35.5 प्रतिशत बच्चे कुपोषण के कारण अविकसित (स्टंटेड) में हैं। इसका मुख्य कारण जीवन के प्रारंभिक वर्षों में पौष्टिक आहार की कमी है। इसे सुधारने के लिए गर्भवती महिलाओं और बच्चों को संतुलित आहार देना, छह महीने तक केवल स्तनपान कराना, टीकाकरण, स्वच्छ पानी और स्वच्छता सुनिश्चित करना जरूरी है। इसके अलावे पोषण जागरूकता और सरकारी योजनाओं जैसे आंगनवाड़ी व मिड-डे मील को मजबूत करना भी आवश्यक है। धन्यवाद ज्ञापन डा. सत्य प्रकाश ने किया।

ऑनलाइन मोड में मीटिंग करते विशेषज्ञ।

## शिविर में दी गई वैज्ञानिक तरीके से मछली पालन की जानकारी

समस्तीपुर | डॉ राजेन्द्र प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय पूसा एवं बिहार के मत्स्यकी महाविद्यालय, ढोली द्वारा जिला मत्स्य कार्यालय समस्तीपुर में मत्स्य उपचार शिविर का आयोजन किया गया। इसमें समस्तीपुर के विभिन्न मत्स्यपालकों को निःशुल्क जल परीक्षण एवं मत्स्य की अभिवृद्धि के लिए परामर्श दिया गया। इस मौके पर मात्स्यिकी महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ राजीव कुमार ब्रहमचारी ने उपस्थित मत्स्य पालकों को वैज्ञानिक तरीके से आधुनिक मत्स्य पालन के बारे में बताया गया। साथ ही पानी की गुणवत्ता, मिट्टी की गुणवत्ता, ऑक्सीजन की उपलब्धता, अमोनिया का नियंत्रण, चूने का प्रयोग, गोबर का प्रयोग के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही मछलियों में होने वाली बिमारी एवं उसके निदान के बारे में भी बताया गया। सभी उपस्थित मत्स्य कृषकों के सामने उनके द्वारा लाए गए पानी के नमूने का परीक्षण किया गया एवं तत्काल उसका निदान बताया गया। बीज संचयन पूर्व तालाब की तैयारी के बारे में भी बताया गया।

भास्कर 25/5/25 पेज 13

पूर्वानुमान • इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 35 डिग्री व न्यूनतम तापमान 24 से 26 डिग्री रहेगा

# अगले 3-4 दिनों में हल्की व उसके बाद अच्छी बारिश की संभावना, 10-15 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलेगी हवा

भास्कर न्यूज़ | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के कई जिलों में अगले 3 से 4 दिनों तक हल्की बारिश हो सकती है। समस्तीपुर, बेगूसराय, वैशाली, सारन, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी और पूर्वी चंपारण में बारिश की संभावना है। इसके बाद 28 और 29 जून को इन जिलों में मध्यम बारिश हो सकती है। पूर्वी और पश्चिम चंपारण के कुछ इलाकों में इस दौरान मध्यम से भारी बारिश हो सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 35 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। न्यूनतम तापमान 24 से 26 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है। सुबह की सापेक्ष आर्द्रता 90 से 95 प्रतिशत और दोपहर में 40 से 50 प्रतिशत रह सकती है। पूरवा हवा 10 से 15 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलने का अनुमान है। मौसम विभाग, पूसा के नोडल पदाधिकारी डॉ. ए. सत्तार ने किसानों को खेती से जुड़े सुझाव दिए हैं। उन्होंने कहा कि अगात और मध्यम अवधि की धान की किस्मों की सीधी बुवाई खेत में छिटकाव विधि से की जा सकती है। यदि खेत सूखा है तो सीडड्रिल मशीन या छिटकाव विधि से बुवाई करें। सूखे खेत में बुवाई के 48 घंटे के अंदर पेन्डिमेथीलीन दवा 1 लीटर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। यदि बुवाई के बाद बारिश हो जाए तो यह दवा न छिड़कें। ऐसी स्थिति में बुवाई के 10 से 15 दिन बाद नामिनी गोल्ड दवा सि छिड़काव करें।

हल्की बारिश में बचाव कर जाती छात्रा।

## खरीफ की फसल में मिट्टी परीक्षण के आधार पर खाद का प्रयोग करें

खरीफ मौसम की सब्जियों जैसे कद्दू, नेनुआ, झींगली और खीरा की बुवाई की जा सकती है। किसान खेत में नमी बनाकर ही बुवाई करें। मिट्टी परीक्षण के आधार पर खाद का प्रयोग करें। यदि परीक्षण न हो तो प्रति हेक्टेयर 20 से 25 टन सड़ा हुआ गोबर डालें। साथ ही 60 किलो नेत्रजन, 50 किलो फॉस्फोरस और 40 किलो स्कूर का उपयोग करें। फसल को 3 मीटर x 1 मीटर की दूरी पर लगाएं। प्रति थाल 2 से 3 मीटर की दूरी रखें। बरसाती भिंडी की बुवाई का समय अनुकूल है। इसके लिए अर्का अभय, पंत मिडी-1 और काशी लीला किस्में उपयुक्त हैं। इस फसल में मौजेक और फल छेदक कीट नुकसान पहुंचाते हैं। रोकथाम के लिए मैलाथियन दवा 2 से 2.5 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें। आम और लीची जैसे फलों के पेड़ों के लिए इस माह में गड्ढों में मिट्टी के साथ खाद, उर्वरक और थीमेट डालकर भराई का काम पुरा करें।

दैनिक जागरण 25/6/25 पेज 5

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 29 जून तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों में हल्की वर्षा होने की संभावना है। दो दिनों के बीच कहीं मध्यम वर्षा और कहीं भारी वर्षा होने का अनुमान है।

विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 35 डिग्री सेल्सियस जबकि न्यूनतम 24 से 26 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 25 जून | 33.0 | 25.0 |
| 26 जून | 33.0 | 25.5 |
| | दरभंगा | |
| 25 जून | 33.0 | 25.5 |
| 26 जून | 33.5 | 25.5 |
| | पटना | |
| 25 जून | 36.5 | 27.0 |
| 26 जून | 36.5 | 27.0 |

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 25/6/25 पेज 4

# 'देश में कुपोषण से हर तीसरा बच्चा पीड़ित'

- खाद्य और पोषण सुरक्षा पर चिंतन मंथन शुरू
- तीन दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण आयोजित

पूसा, निज संवाददाता। मैनेज, हैदराबाद के सहयोग से डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में तीन दिवसीय राष्ट्रीय स्तरीय प्रशिक्षण (वर्चुअल मोड) कार्यक्रम का आयोजन मंगलवार को किया गया। विषय था शुभारंभ भारत के संदर्भ में वैश्विक भूख सूचकांक को कम करने के लिए खाद्य एवं पोषण सुरक्षा।

कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए डीन पीजीसीए डॉ. मयंक राय ने कहा कि भारत को दलहन और तेलहन उत्पादन में आत्मनर्भिर बनने की जरूरत है। जिससे विदेशों पर नर्भितरता कम हो सके। उन्होंने कहा कि जैव संवर्धित (बायो फोर्टीफाइड) फसलो के खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देने पर देश में कार्य चल रहा है। इसे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से भी कम किया जा सकता है।

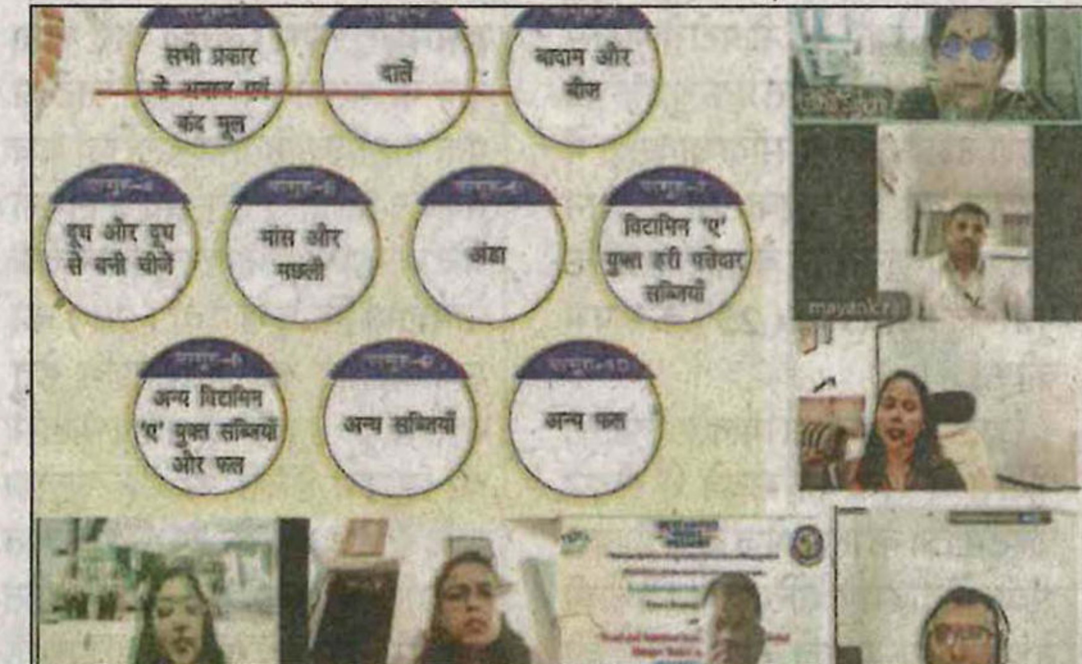


पूसा विवि में वर्चुअल मोड में आयोजित प्रशिक्षण में चर्चा करते वैज्ञानिक। • हिन्दुस्तान

डीन डॉ.उषा सिंह ने आहार विविधता से पोषण सुरक्षा, पोषणयुक्त उत्पादों से कुपोषण को कम करने पर चर्चा की। डॉ. ऋतंभरा सिंह ने किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ), मूल्य श्रृंखला और बाजार संपर्क से कुपोषण को कम करने-पर ज्ञान साझा किया। केरल विवि की वैज्ञानिक डॉ. अपर्णा राधाकृष्णन, ने केरल मॉडल को अपनाकर खाद्य और पोषण सुरक्षा के लक्ष्य प्राप्त करने का सुझाव दिया। प्रशक्षिण में 21 राज्य, 68 संस्थानों के 214 प्रशक्षिणार्थियों ने हस्सिा लिया। संचालन करते हुए विवि के वैज्ञानिक डॉ. सुधानन्द प्रसाद लाल ने कहा कि भारत में 5 वर्ष से कम उम्र के 35.5 बच्चे कुपोषण के कारण अविकसित हैं। इसका मुख्य कारण पौष्टिक आहार की कमी है। इसे सुधारने के लिए गर्भवती महिलाओं और बच्चों को संतुलित आहार देना, 6 महीने तक केवल स्तनपान कराना, टीकाकरण, स्वच्छ पानी और स्वच्छता सुनश्चिति करना जरूरी है। वैज्ञानिक ने पोषण जागरूकता और आंगनवाड़ी व मिड-डे मील जैसे सरकारी योजनाओं को मजबूत करने पर बल दिया। धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ.सत्य प्रकाश ने किया।

हिन्दुस्तान 25/6/25 पेज 4

कैंपस 30s

मत्स्यपालकों को जानकारी देते वैज्ञानिक व जिला मत्स्य पदाधिकारी। • हिन्दुस्तान

# वैज्ञानिकों ने किया जल परीक्षण

समस्तीपुर। जिला मत्स्य कार्यालय में मंगलवार को डा. राजेन्द्र प्रसाद कृषि वशि‍ववद्यिालय पूसा बिहार के मा्स्यियकी महावद्यिालय ढ़ोली द्वारा मत्स्य उपचार शिविर का आयोजन किया गया। इसमें जिले के विभन्नि मत्स्यपालकों को नि:शुल्क जल परीक्षण एवं मत्स्य की अभिवृद्धि आदि का परामर्श दिया गया। वहीं मत्स्य कृषक तेज नारायण सहनी, उपेन्द्र सहनी, रंधीर त्रिवेदी के अलावा तीस से पैंतीस मत्स्य पालकों का जल परीक्षण किया गया। मौके पर मा्स्यियकी महावद्यिालय के सहायक प्राध्यापक डा. राजीव कुमार ब्रह्मचारी ने मत्स्य पालकों को वैज्ञानिक तरीके से आधुनिक मत्स्य पालन की जानकारी दी। साथ ही मछलियों में होने वाली बीमारी एवं उसके उपचार पर भी चर्चा की। शिविर में जिला मत्स्य पदाधिकारी मो. नियाज उद्दीन के अलावा अन्य वैज्ञानिक मौजूद थे।

# मत्स्य उपचार शिविर आयोजित

**समस्तीपुर (एसएनबी)।** मंगलवार को डॉ राजेन्द्र प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार के मात्स्यिकी महाविद्यालय, ढोली, मुजफ्फरपुर द्वारा जिला समस्तीपुर मत्स्य कार्यालय, में मत्स्य उपचार शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें समस्तीपुर के विभिन्न मत्स्यपालकों को निःशुक्ल जल परीक्षण एवं मत्स्य की अभिवृद्धि हेतु परामर्श दिया गया। इस अवसर पर मत्स्यिकी महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ राजीव कुमार ब्रहमचारी ने उपस्थित मत्स्य पालकों को वैज्ञानिक तरीके से आधुनिक मत्स्य पालन के बारे मे बताया। साथ ही पानी की गुणवत्ता, मिट्टी की गुणवत्ता, ऑक्सीजन की उपलब्धता, अमोनिया का नियंत्रण, चूने का प्रयोग, गोबर का प्रयोग के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इसके अलावा उन्होंने मछलियों में होने वाली बिमारी एवं उसके निदान के बारे में भी बताया। इस अवसर पर सभी उपस्थित मत्स्य पालकों के सामने उनके द्वारा लाए गए पानी के नमूने का परीक्षण कियाएवं तत्काल उसका निदान बताया। इस दौरान उपस्थित मत्स्य पालक किसानों को बीज संचयन पूर्व तालाब की तैयारी के बारे में भी बताया गया। मौके पर मत्स्यिकी महाविधालय के सहायक प्राध्यापक/वैज्ञानिक डॉ राजीव कुमार ब्रहगबारी, जिला मत्स्य पदाधिकारी-सह-मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, सगस्तीपुर, मो0 नियाजुद्दीन सहित कई वैज्ञानिक व तेज नारायण सहनी, उपेन्द्र सहनी, रंधीर त्रिवेदी के अतिरिक्त 30-35 मत्स्य पालक किसान मौजूद थे।

जानकारी देते वैज्ञानिक।

**Rashtriya Sahara 25-06-2025**

# वैश्विक भूख सूचकांक को कम करने के लिए खाद्य एवं पोषण सुरक्षा विषयक तीन दिवसीय वर्चुअल मोड में राष्ट्रीय प्रशिक्षण आरंभ

**पूसा (एसएनबी)।** डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार द्वारा मैनेज हैदराबाद के सहयोग से भारत के संदर्भ में वैश्विक भूख सूचकांक को कम करने के लिए खाद्य एवं पोषण सुरक्षा विषय पर आधारित 3 दिवसीय राष्ट्र स्तरीय वर्चुअल मोड प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका शुभारम्भ करते हुए कृषि स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं प्रसार शिक्षा निदेशक, डॉ. मयंक राय ने कहा कि समय आ चुका है भारत को दलहन व तिलहन उत्पादन के क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर बनने की और विदेशों पर निर्भरता कम रहने की । उन्होंने बल देते हुए कहा कि भारत द्वारा परीक्षण की जा रही जैव-संवर्धित (बायो-फोर्टीफाइड) फसलें किस प्रकार खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा दे सकती है वहीं जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने से जुड़े अपनी बातों को रखा वहीं डॉ. उषा सिंह, अधिष्ठाता सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय ने आहार विविधता के माध्यम से पोषण सुरक्षा प्राप्त करना एवं विश्वविद्यालय के कई पोषण युक्त उत्पादों के माध्यम से कैसे कुपोषण को कम किया जा सकता है उस पर बल दिया। डॉ ऋतंभरा सिंह ने एफपीओ एवं मूल्य श्रृंखला और बाजार संपर्क ने कुपोषण को कैसे कम किया जा सकता है के बारे में विस्तार से चर्चा की। वैज्ञानिक, केरल कृषि विश्वविद्यालय डॉ. अपर्णा राधाकृष्णन,ने उर्ध्वाधर खेती और केरल मॉडल को अपनाकर खाद्य और पोषण सुरक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति से जुड़ने पर चर्चा किया। बताते चलें कि इस प्रशिक्षण में 21 राज्यों के 68 विभिन्न संस्थानों से 214 प्रशिक्षणार्थी हिस्सा ले रहे है। आंकडों की बात करें तो भारत में पाँच वर्ष से कम उम्र के 35.5 प्रतिशत बच्चे कुपोषण के कारण अविकसित ट्ठस्टंटेड) हैं। इसका मुख्य कारण जीवन के प्रारंभिक वर्षो में पौष्टिक आहार की कमी है। इसे सुधारने के लिए गर्भवती महिलाओं और बच्चों को संतुलित आहार देना, छह महीने तक केवल स्तनपान कराना, टीकाकरण, स्वच्छ पानी और स्वच्छता सुनिश्चित करना जरूरी है। साथ ही, पोषण जागरूकता और सरकारी योजनाओं जैसे आंगनवाड़ी व मिड-डे मील को मजबूत करना भी आवश्यक है, कार्यक्रम का संचालन डा. सुधानन्द प्रसाद लाल ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डा. सत्य प्रकाश ने किया।

प्रशिक्षण में शामिल प्रशिक्षु।

**Rashtriya Sahara 25-06-2025**

# प्रक्षेत्र में प्रयोग: गन्ना के लालसर रोग प्रतिरोधी क्लोन की हुई सीधी रोपाई

<u>प्रतिनिधि,पूसा</u>

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित ईख अनुसंधान संस्थान के प्रक्षेत्र में गन्ने की लालसर रोग प्रतिरोधी क्लोन की सीधा रोपाई की गयी. इस दौरान मौजूद वैज्ञानिक सह परियोजना के पीआई डा बलवंत कुमार ने बताया कि गन्ना उत्पादक किसानों के हित में लालसर रोग प्रतिरोधी किस्मों के विकास के लिए संकरण से जो भी हाइब्रिड बिचड़ा तैयार किया गया है उसकी रोपाई किया जा रही है. द्रुतगामी गति से एक वर्ष की बचत करते हुए अगले वर्ष क्लोनल प्रत्यक्षण में लगाया गया है. पीआई डा कुमार के द्वारा कोयंबतूर के गन्ना राष्ट्रीय संकरण बगीचा में बनाया गया था. कुछ प्री ब्रीडिंग मटेरियल भी लालसर रोग प्रतिरोधी, सूखा एवं जल जमाव प्रतिरोधी हाइब्रिड भी पूसा संस्थान को दिया गया. जिसका बिचड़ा भी लगाया गया है. गन्ने की किसी भी प्रभेद को विकसित होने में करीब 10 से 12 वर्ष का समय लग जाते हैं. इस परियोजना के माध्यम से चयनित क्लोन को लालसर रोग से ग्रसित किया जाता है. उसमें से प्रतिरोधक क्लोन का चयन किया जायेगा. परियोजना सह अन्वेषक डा एसएन सिंह ने कहा कि इस प्रत्यक्षण के दौरान चयनित क्लोन को लगातार लालसर रोग से गुजरना पड़ेगा जो क्लोन प्रभावित नहीं होगा वही क्लोन आगे के लिए चयन किया जायेगा. इधर, बायोटेक्नोलॉजी के कार्य में डा विष्णुदेव प्रसाद ने कहा कि इसी क्लोन को जैव प्रौद्योगिकी की अध्ययन करेंगे. ताकि वैसे जीन का पता लगाया जा सके जो लालसर रोग के प्रतिरोधी हो सके. संस्थान के निदेशक डा देवेंद्र सिंह ने कहा कि संस्थान में हाइब्रिड बिचड़े उगाने के लिए नेट हाउस उपलब्ध है. जिसने इस वर्ष पूसा एवं कल्याणपुर फार्म को मिलाकर करीब 16 हजार बिचड़ा लगाया गया है. इसे दो महीने के बाद सेकेंड राउंड के नर्सरी में ट्रांसप्लांटिंग किया जायेगा. मौके पर ब्रजभूषण प्रसाद सिंह, अर्जुन राय आदि मौजूद थे.

प्रत्यक्षण के दौरान मौजूद वैज्ञानिक.

प्रभात खबर
Thursday, June 26, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/685c4920e8580c9f9b91543c

# बागों के पोषक तत्व को प्रबंधन करने की जरूरत : डॉ तिवारी

बागों का प्रबंधन करते विशेषज्ञ.

**प्रतिनिधि, पूसा**

डॉ राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली द्वारा आम उत्पादकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन आयोजित किया गया. शुभारंभ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ आरके तिवारी व सहायक निदेशक उद्यान प्रशांत कुमार के द्वारा किया गया. डॉ तिवारी ने कहा कि समस्तीपुर में आम उत्पादन परम्परागत रूप से बहुत पहले से ही किया जाता रहा है. किसानों को आधुनिक तरीके से बाग प्रबंधन करते हुए अधिक आय प्राप्त किया जा सकता है. सहायक निदेशक उद्यान ने उद्यान विभाग की विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि आम उत्पादक किसान पैक हाउस योजना का लाभ ले सकते हैं. प्रशिक्षण के दौरान उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ धीरु कुमार तिवारी ने विस्तारपूर्वक आम के बाग में छत्रक प्रबंधन, पोषक तत्व प्रबंधन तथा बाग की मिट्टी का स्वास्थ्य प्रबंधन पर चर्चा किया. डॉ धीरु ने कहा कि आम के फल की तुड़ाई हो जाने के पश्चात पेड़ की बीच वाली ऊपरी टहनी को काटकर हटा देना चाहिए. ऐसा करने से सूर्य की रौशनी व हवा का संचार पूरे पेड़ में होने लगता है. फसल सुरक्षा विशेषज्ञ सुमित कुमार सिंह ने आम में लगने वाली बीमारियों एवं कीटों के नियंत्रण हेतु समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन के बारे में जानकारी दी. डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कृषि व्यवसाय एवं प्रबंधन के सहायक प्राध्यापक डॉ रमनदीप सिंह ने आम की फसल से अच्छी आमदनी लेने हेतु रणनीतियों के बारे में चर्चा की. कार्यक्रम में मुख्य रूप से विपिन सिंह, अमरनाथ सिंह, प्रदीप महतो आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Thursday, June 26, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/685c4920e8580c9f9b91543c

# कृषि छात्र-छात्राओं ने जुटायी प्रोडक्ट की जानकारी

भ्रमण के दौरान वैज्ञानिक के साथ छात्र व छात्राएं .

---

**पूसा.** डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधीन प्रसंस्करण एवं खाद्य अभियांत्रिकी विभाग से फूड टेक्नोलॉजी में बीटेक कर रहे छठे एवं चौथे सेमेस्टर के 41 छात्र-छात्राओं का जत्था प्रायोगिक क्षेत्र भ्रमण पर रवाना हुआ. छात्रों का यह जत्था सबसे पहले लक्ष्मी फ्लोर मिल समस्तीपुर पहुंचा. यहां प्रोक्योरमेंट, लिफ्टिंग, प्रोडक्ट, प्रोडक्ट का क्वालिटी टेस्ट करने के अलावे गेहूं से बनाये जा रहे विभिन्न प्रोडक्ट आटा, मैदा, सूजी, चोकर आदि के बारे में जानकारी जुटाई. प्लांट के कर्मचारी रौशन कुमार ने सभी छात्रों को विस्तृत जानकारी दी. इसके बाद छात्रों ने मां छिन्नमस्तिका राइस मिल समस्तीपुर में पहुंच कर पारबॉयलिंग से लेकर फाइनल प्रोडक्ट राइस एवं पैकेजिंग के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की. बाद में छात्रों का जत्था नयानगर के प्रोग्रेसिव फार्मर सुधांशु कुमार के फार्म हाउस पर पहुंचा. विभिन्न प्लॉट में लगे हॉर्टिकल्चर क्रॉप जैसे स्ट्राबेरी, ड्रैगन फ्रूट्स, आम, लीची, जी 9 केला, पपीता सहित अन्य तरह के फ्रूट्स की बेराइटी व विभिन्न ड्रिप एरिगेशन सिंचाई पद्धति सहित अन्य तरह के मशीनरी के बारे में जानकारी प्राप्त की. किसान सुधांशु कुमार ने छात्रों को विस्तृत जानकारी दी. भ्रमण कार्यक्रम का नेतृत्व डॉ. दिनेश रजक, डॉ. पिंटू चौधरी एवं डॉ. निकिता ने किया.

प्रभात खबर
Thursday, June 26, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/685c4920e8580c9f9b915442

खेती-किसानी • किसान प्राथमिकता के साथ शुरू करें धान की नर्सरी लगाने का कार्य : कृषि वैज्ञानिक

# किसान मध्यम व कम अवधि वाले धान के प्रभेद जैसे राजेंद्र सरस्वती, नीलम, प्रभात, राजेंद्र सुहासनी को दें प्राथमिकता

भास्कर 26/6/25 पेज 18

भास्कर न्यूज | पूसा

बिहार में मॉनसून का प्रवेश हो चुका हैं। जल्द ही यह बेहतर ढंग से सक्रिय हो जाएगा तथा इस वर्ष अच्छी बारिश होने के आसार भी हैं। बिहार के किसान मौजूदा समय में धान की खेती को सफल तरीके से करने के लिए अब खेतों की जुताई करवाने के साथ-साथ धान की नर्सरी लगाने का काम प्राथमिकता के साथ शुरू करें। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के धान वैज्ञानिक डॉ. नीलांजय ने दी है। उन्होंने कहा की किसान मध्यम व कम अवधि वाले धान के प्रभेद जैसे राजेंद्र सरस्वती, नीलम, प्रभात, राजेंद्र सुहासनी, राजेंद्र कस्तूरी, राजेंद्र भगवती, सुगंधा आदि किस्मों को लगाकर अधिक व उच्च स्तरीय गुणवत्ता वाले धान का उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि धान की ये सभी किस्में विवि और अन्य कृषि संस्थानों के द्वारा किसानों के लिए अनुसंशित किए जा चुके हैं। धान वैज्ञानिक ने बताया की वैसे किसान जो धान की नर्सरी लगाकर तथा उसे बाद में उखाड़कर खेतों में धान की रोपाई करते है वे एक हेक्टेयर खेत में धान की रोपाई करने के लिए खेत के 800 से 1000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में धान का बीज गिराएं। धान का बीज गिराने से पूर्व किसान क्यारियों से खरपतवार निकालकर मिट्टी को साफ सुथरा बना दें। किसान नर्सरी में क्यारी की चौड़ाई 1.25 से 1.5 मीटर तथा लंबाई अपने सुविधा के अनुसार रखें। बीज को क्यारियों में गिराने से पूर्व किसान वेवेस्टिन नामक दवाई की 2 ग्राम मात्रा से प्रति किलों धान के बीज को उपचारित करने के बाद नर्सरी में धान की बुआई करें। इसके अलावे जब धान के बिचरे 10 से 12 दिन के हो जाएं तब नर्सरी से निश्चित रूप से खरपतवार निकाल दें। किसानों को अगर नर्सरी में गिराएं गए धान के छोटे छोटे पौधों की ऊपरी पत्तियां पीली तथा नीचे की पत्तियां हरे रंग की दिखाई देने लगे तो यह लौह तत्व की कमी का लक्षण हो सकता हैं। इसके निदान के लिए किसान 0.5 प्रतिशत फेरस सल्फेट नामक दवाई एवं 0.25 प्रतिशत चुने का घोल को मिलाकर धान के बिचरो पर छिड़काव करें। धान का बिचरा जब 22 से 25 दिन का हो जाएं तब किसान उसे उखाड़कर कदवा किये गए खेतों में उसकी रोपाई कर दें।

विवि परिसर में लगाई गई धान की नर्सरी।

दैनिक जागरण — 26/6/25 पेज 3

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 29 जून तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों में हल्की वर्षा होने की संभावना है। दो दिनों के बीच कहीं मध्यम वर्षा और कहीं भारी वर्षा होने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 35 डिग्री सेल्सियस जबकि न्यूनतम 24 से 26 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | मोतिहारी | |
| 26 जून | 33.0 | 25.0 |
| 27 जून | 33.0 | 25.5 |
| | बेतिया | |
| 26 जून | 33.0 | 25.5 |
| 27 जून | 33.5 | 25.5 |
| | पटना | |
| 26 जून | 36.5 | 27.0 |
| 27 जून | 36.5 | 27.0 |

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 26/6/25 पेज 4

कार्यशाला | कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली में आम उत्पादन की उन्नत तकनीक विषय पर प्रशिक्षण आयोजित, लोगों ने लिया कार्यक्रम में भाग

# आधुनिक तकनीक के उपयोग से होगी बेहतर आमदनी

- पैक हाउस योजना का लाभ लें आम उत्पादक: सहायक निदेशक
- आम उत्पादक किसान समूह बनाने आदि पर जोर दिया

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में बुधवार को आम उत्पादन की उन्नत तकनीक विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित की गई। उदघाटन केन्द्र प्रमुख डॉ.आरके तिवारी, सहायक उद्यान निदेशक प्रशांत कुमार ने दीप प्रज्जवलित कर की। मौके पर डॉ.आरके तिवारी ने कहा कि बदलते समय में किसानों को आधुनिक तरीके से बाग प्रबंधन करने की जरूरत है। यह अधिक आय प्राप्त करने में मददगार साबित होगा। सहायक निदेशक उद्यान ने सरकार की योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि आम उत्पादक किसान पैक हाउस योजना का लाभ ले सकते हैं। प्रशिक्षण के दौरान उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ धीरु कुमार तिवारी ने आम के बाग में छत्रक प्रबंधन, पोषक तत्व प्रबंधन एवं बाग की मिट्टी का स्वास्थ्य प्रबंधन पर विस्तार से चर्चा की। कहा कि आम के फल की तुड़ाई के बाद पेड़ के बीच वाली ऊपरी टहनी को काटकर हटा देना चाहिए। जिससे छत्रक खुल जाए। ऐसा करने से सूर्य की रौशनी एवं हवा का संचार पूरे पेड़ में होने लगता है। सूखी, रोगग्रस्त, अधिक घनी टहनियों की भी कटाई-छंटाई करनी चाहिए। फसल सुरक्षा विशेषज्ञ सुमित कुमार सिंह ने आम में लगने वाली बिमारियों, कीटों का नियंत्रण, समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन पर चर्चा की। विवि के सहायक प्राध्यापक डॉ.रमनदीप सिंह ने आम की फसल से अच्छी आमदनी लेने के लिए रणनीति, आम उत्पादक किसान समूह बनाने आदि पर जोर दिया। मौके पर विपिन सिंह, अमर नाथ सिंह, प्रदीप महतो आदि मौजूद थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र के बाग में आम छंटाई की जानकारी देते वैज्ञानिक।

हिन्दुस्तान 25/6/25 पेज 6

# विवि के छात्रों ने सीखे प्रोसेसिंग व पैकेजिंग के गुर

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े कृषि अभियंत्रण एवं प्रौधोगिकी महाविद्यालय, पूसा के छात्रों ने (प्रसंस्करण एवं खाद्य अभियांत्रिकी विभाग) प्रायोगिक क्षेत्र भ्रमण के दौरान समस्तीपुर स्थित मां छिन्यमस्तिका राईस मिल का भ्रमण किया। इस दौरान छात्रों की टीम ने पार बॉयलिंग से लेकर फाइनल प्रोडक्ट निर्माण व पैकेजिंग के संबंध में विस्तार से जानकारी लीं।

वहीं लक्ष्मी फ्लोर मिल में रौशन कुमार के नेतृत्व में गेहूं से बने उत्पादों, प्रोक्योरमेंट, लिफ्टिंग, क्वालिटी टेस्ट, आटा, मैदा, सूजी एवं चोकर निर्माण के बारे में जानकारी ली। बाद में छात्रों की टीम नयानगर (रोसड़ा) के प्रगतिशील कृषक सुधांशु कुमार का प्रक्षेत्र भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान स्ट्राबेरी, ड्रैगन फ्रुट्स जैसे उद्यानिकी फसलों के प्रभेद, आधुनिक कृषि यांत्रीकरण व सिंचाई प्रणाली की व्यवस्था को देखा। मौके पर सह प्राध्यापक डॉ.दिनेश रजक, डॉ पिंटू चौधरी, डॉ. निकिता आदि मौजूद थे।

समस्तीपुर स्थित मिल का भ्रमण करने पहुंचे विवि के छात्र व वैज्ञानिक।

राष्ट्रीय सहारा 26/6/25 पेज 5

# आधुनिक तरीके से बाग प्रबंधन कर प्राप्त कर सकते हैं अधिक आय : डॉ तिवारी

समस्तीपुर (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के द्वारा आम उत्पादकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन आम उत्पादन की उन्नत पद्धति विषय पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ आरके तिवारी तथा सहायक निदेशक उद्यान प्रशांत कुमार के द्वारा किया गया। डॉ तिवारी ने कहा कि समस्तीपुर में आम उत्पादन परम्परागत रूप से बहुत पहले से ही किया जाता रहा है। किसानों को आधुनिक तरीके से बाग प्रबंधन करते हुए अधिक आय प्राप्त किया जा सकता है। सहायक निदेशक उद्यान ने उद्यान विभाग की विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि आम उत्पादक किसान पैक हाउस योजना का लाभ

संबोधित करते डॉ तिवारी।

ले सकते है। प्रशिक्षण के दौरान उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ धीरु कुमार तिवारी ने विस्तार पूर्वक आम के बाग में छत्रक प्रबंधन, पोषक तत्व प्रबंधन तथा बाग की मिट्टी का स्वास्थ्य प्रबंधन पर चर्चा किया। डॉ धीरु ने कहा कि आम के फल की तुड़ाई हो जाने के पश्चात पेड़ की बीच वाली ऊपरी टहनी को काटकर हटा देना चाहिए जिससे कि छत्रक खुल जाए। ऐसा करने से सूर्य की रौशनी तथा हवा का संचार पूरे पेड़ में होने लगता है। सूखी हुई या रोगग्रस्त तथा अधिक घनी टहनियों की भी कटाई छंटाई करनी चाहिए। फसल सुरक्षा विशेषज्ञ सुमित कुमार सिंह ने आम में लगने वाली बिमारियों एवं कीटों के नियंत्रण हेतु समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कृषि व्यवसाय एवं प्रबंधन के सहायक प्राध्यापक डॉ रमनदीप सिंह ने आम की फसल से अच्छी आमदनी लेने हेतु रणनीतियों के बारे में चर्चा किया। उन्होंने बताया कि आम उत्पादक किसान समूह बनाकर अपनी उपज का विपणन कर सकते है जिससे उन्हें अधिक लाभ मिल सकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान छत्रक प्रबंधन तथा पोषक तत्व प्रबंधन के बारे में प्रायोगिक रुप से भी जानकारी दी गई। मौके पर विपिन सिंह, अमर नाथ सिंह, प्रदीप महतो इत्यादि उपस्थित रहे।

# कृषि व जलवायु अध्ययन में अनुसंधान को बढ़ावा देने की जरूरत : कुलपति

**पूसा** . स्पेस एप्लीकेशन सेंटर (एसएसी), भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के बीच सहयोग स्पेस एप्लीकेशन सेंटर (एसएसी), भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा में एक उच्च-रिज़ॉल्यूशन एडी कोवेरियंस (ईसी) टावर स्थापित करेगा. इस पहल का उद्देश्य कृषि और जलवायु अध्ययन के लिए उच्च-गुणवत्ता वाले फ्लक्स डेटासेट उत्पन्न करना और वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देना है, जो चल रहे और भविष्य के अंतरिक्ष-आधारित कृषि मिशनों का समर्थन करेगा. इसका उद्देश्य कार्बन और जल प्रवाह निगरानी करना है. यह कार्बन और जल प्रवाह की निगरानी में वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोगी अनुसंधान को मजबूत करेगा. फसल उत्पादकता का अनुमान लगाने और भूमि-वायुमंडल अंतःक्रिया अध्ययन के लिए डेटा उत्पन्न करेगा. ईसी टावर से उत्पन्न डेटा का कई उपयोग है. यह ग्रॉस प्राथमिक उत्पादकता (जीपीपी) और शुद्ध प्राथमिक उत्पादकता (एनपीपी) विश्लेषण का काम करेगा. जीपीपी और एनपीपी के विश्लेषण के लिए उच्च आवृत्ति और सटीक डेटा देगा.

प्रभात खबर
Friday, June 27, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/685d974e3e9d09f3e3a76ba3

# कार्बन फार्मिंग में इसरो के साथ कार्य करने की जरूरत

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा में अनुसंधान परिषद की दो दिवसीय बैठक

कार्यक्रम का उद्घाटन करते वीसी व अन्य .

**प्रतिनिधि, पूसा**

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा में अनुसंधान परिषद की दो दिवसीय बैठक हुई. खरीफ 2025 का आयोजन किया जा रहा है. कार्यक्रम को संबोधित करते हुये कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय कार्बन फार्मिंग के क्षेत्र में इसरो ( भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) के साथ मिलकर कार्य करेगा. उन्होंने कहा कि इस अनुसंधान परियोजना के लिए इसरो की तरफ से फंड भी उपलब्ध करवाया जाएगा. उन्होंने बताया कि इससे संबंधित पत्र आज ही प्राप्त हुआ है. उन्होंने कहा कि यह विश्वविद्यालय की अनुसंधान के क्षेत्र में प्रगति को दर्शाता है, लेकिन अब अनुसंधान के क्षेत्र में और तेज प्रगति लाने की आवश्यकता है.

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अभी हाल ही में 89 नये फैकल्टी सदस्यों ने अपना योगदान दिया है. नये वैज्ञानिकों में ऊर्जा है और आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा है. उन्होंने कहा कि अनुभवी वैज्ञानिकों और नये वैज्ञानिकों के साथ मिलकर अगले कुछ सालों में नये अनुसंधान के क्षेत्र में एक क्रांति लाने की आवश्यकता है. उन्होंने कहा कि अनुसंधान किसानों को ध्यान में रख कर किया जाना चाहिए. उन्होंने कहा कि डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने काफी काम किया है, लेकिन बहुत सारे काम किये जाना शेष है. उन्होंने कहा कि केसर की खेती मशरूम की ही तरह वातानुकूलित वातावरण में की जा सकती है. इसकी खेती की कम खर्च में संभावना तलाशने का निर्देश उन्होंने वैज्ञानिकों को दिया. डॉ. पांडेय ने इंजीनियरिंग के वैज्ञानिकों से कहा कि स्मार्ट मशीन विकसित किये जाने चाहिए जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लैश हों और जरूरत के मुताबिक स्वयं निर्णय लेने में सक्षम हो. उन्होंने कृषि के क्षेत्र में ग्लोबल जरूरतों और निर्यात की संभावनाओं पर भी काम करने का निर्देश वैज्ञानिकों को दिया. उन्होंने कहा कि पैकेजिंग और शेल्फ लाइफ बढ़ाने पर भी अनुसंधान में तेजी लानी होगी, जिससे कि ट्रांसपोर्टेशन के दौरान उत्पाद की गुणवत्ता बनी रहे. बाह्य विशेषज्ञ के रूप में नवसारी और जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. एआर पाठक ने कहा कि विश्वविद्यालय में डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में काफी अच्छा कार्य किया है. इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय ने अरहर, हल्दी, मक्का, गन्ना, धान और गेहूं के कई प्रभेद विकसित किये हैं, जो किसानों के द्वारा पसंद किये जा रहें हैं. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को स्पीड ब्रीडिंग और माइक्रोबायोम के क्षेत्र में भी काम करने की आवश्यकता है. निदेशक अनुसंधान डॉ. एके सिंह ने कहा कि लीची के शेल्फ लाइफ बढ़ाने को लेकर अनुसंधान के अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं. इसके परीक्षण के विभिन्न दौर के बाद निष्कर्षों को जारी किया जाएगा. उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त किसानों की समस्याओं पर आधारित 11 अनुसंधान परियोजना पर भी इन दो दिनों से चर्चा की जायेगी और बाह्य विशेषज्ञों के विचार और सुझाव के आधार पर उसे स्वीकृति प्रदान की जायेगी. अनुसंधान परिषद में की बैठक दो दिन तक जारी रहेगी. जिसमें बाह्य विशेषज्ञ के रूप में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट रिसर्च के निदेशक डॉ. सी तारा सत्यार्थी और भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान कानपुर के निदेशक डॉ. जीपी दीक्षित भी शिरकत करेंगे. अनुसंधान परिषद की बैठक में सभी कालेजों के डीन, विभागाध्यक्ष , सह निदेशक अनुसंधान डॉ मुकेश कुमार, डॉ एस के ठाकुर, समेत सभी वैज्ञानिकों ने भाग लिया.

प्रभात खबर
Friday, June 27, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/685d974e3e9d09f3e3a76ba3

कार्यक्रम • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में 19वीं अनुसंधान परिषद की बैठक

# पूसा विवि व इसरो के विशेषज्ञ एक साथ कार्बन फार्मिंग पर करेंगे काम : कुलपति

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के विद्यापति सभागार में 19वीं अनुसंधान परिषद की दो दिवसीय बैठक (खरीफ 2025) का आयोजन किया गया। इस बैठक में विवि के तमाम कृषि वैज्ञानिक व विशेषज्ञों के अलावे कानपुर, हैदराबाद, गुजरात आदि जगहों के कृषि संस्थानों से पहुंचे वाह्य विशेषज्ञों ने भी हिस्सा लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन कृषि विवि पुसा के कुलपति डॉ. पी एस पांडेय एवं बाह्य विशेषज्ञ नवसारी व जूनागढ़ एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी गुजरात के पूर्व कुलपति डॉ. एआर पाठक, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट रिसर्च हैदराबाद के निदेशक डॉ. सी तारा सत्यवती, भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान कानपुर के डायरेक्टर डॉ. जीपी दीक्षित आदि ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय कार्बन फार्मिंग के क्षेत्र में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के साथ मिलकर कार्य करेगा। यह काफी गर्व का विषय है। उन्होंने कहा कि इस अनुसंधान परियोजना के लिए इसरो की तरफ से फंड भी उपलब्ध करवाया जाएगा। उन्होंने बताया कि इससे संबंधित पत्र आज ही विवि को प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि इसरो और कृषि विवि पुसा के विशेषज्ञों के बीच कार्बन फार्मिंग के क्षेत्र में कार्य शुरू किया जाना विवि में अनुसंधान के क्षेत्र में हुई प्रगति को दर्शाता है। हालांकि उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से कहा कि अभी अनुसंधान के क्षेत्र में और तेज प्रगति लाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अभी हाल ही में 89 नये फैकल्टी सदस्यों ने अपना योगदान दिया है। नये वैज्ञानिकों में ऊर्जा है और आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा है।

वैज्ञानिकों को संबोधित करते कुलपति।

## केसर की खेती मशरूम की तरह वातानुकूलित वातावरण में बेहतर

उन्होंने कहा कि डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने काफी काम किया है लेकिन बहुत सारे काम अब भी किये जाने बाकी हैं। उन्होंने कहा कि केसर की खेती मशरूम की ही तरह वातानुकूलित वातावरण में की जा सकती है। इसकी खेती कम खर्च में किये जाने की संभावना को तलाशने का दिशा-निर्देश कुलपति ने वैज्ञानिकों को दिया। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि खासकर बिहार के साथ-साथ पूरे देश भर में छोटे और मध्यम जोत के किसानों की संख्या काफी अधिक है। विश्वविद्यालय ने किसानों के लिए यंत्र बनाया है लेकिन छोटे किसानों के लिए नये यंत्रों को बनाए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि छोटी जोत की जरूरत के हिसाब से यंत्र विकसित किया जाना चाहिए। कुलपति ने इंजीनियरिंग के वैज्ञानिकों से कहा कि वे स्मार्ट मशीन विकसित करें जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लैस हों और जरूरत के मुताबिक स्वयं निर्णय लेने में सक्षम हों। उन्होंने कृषि के क्षेत्र में ग्लोबल जरूरतों और निर्यात की संभावनाओं पर भी काम करने का दिशा-निर्देश वैज्ञानिकों को दिया। उन्होंने कहा कि पैकेजिंग और शेल्फ लाइफ बढ़ाने पर भी अनुसंधान में तेजी लानी होगी जिससे कि ट्रांसपोर्टेशन के दौरान उत्पाद की गुणवत्ता बनी रहे। उन्होंने कहा कि विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत विश्वविद्यालय एवं बिहार के योगदान की सराहना की गई है। इस अभियान के दौरान किसानों की बहुत सारी समस्याओं के बारे में जानकारी विवि को वैज्ञानिकों के माध्यम से प्राप्त हुई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि वे किसानों की समस्याओं पर आधारित अनुसंधान परियोजनाओं को विकसित करें। बाह्य विशेषज्ञ के रूप में नवसारी और जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. ए आर पाठक ने भी संबोधित किया।

## लीची के शेल्फ लाइफ बढ़ाने पर अच्छा परिणाम

निदेशक अनुसंधान डॉ. ए के सिंह ने कहा कि लीची के शेल्फ लाइफ बढ़ाने को लेकर जारी अनुसंधान से अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं। इसके परीक्षण के विभिन्न दौर के बाद निष्कर्षों को जारी किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त किसानों की समस्याओं पर आधारित ग्यारह अनुसंधान परियोजना पर भी इन दो दिनों से चर्चा की जायेगी तथा बाह्य विशेषज्ञों के विचार और सुझाव के आधार पर उसे स्वीकृति प्रदान की जायेगी। निदेशक पीजीसीए ने अपने कॉलेज में चल रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यों के प्रगति के बारे में जानकारी दी। अनुसंधान परिषद की बैठक दो दिन तक जारी रहेगी जिसमें खासकर सभी बाह्य विशेषज्ञ विश्वविद्यालय में चल रहे अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा करेंगे। इसके बाद ग्यारह नये परियोजना को स्वीकृति के लिए अनुसंधान परिषद के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। दूसरे दिन की बैठक के अंत में फसलों के कई नए प्रभेद और कृषि तकनीकों को रिलीज कराने के लिए काउंसिल के समक्ष प्रस्तुत भी किया जाएगा। कार्यक्रम में अंत में विवि द्वारा प्रकाशित कई पुस्तकों का विमोचन भी किया गया।

दैनिक भास्कर-27/6/25 p-20

दैनिक भास्कर - 27.01.25 - 20 -

# स्पेस एप्लीकेशन सेंटर व इसरो के सहयोग से पूसा विवि में स्थापित होगा ईसी टावर

## कृषि व जलवायु अध्ययन के लिए उच्च-गुणवत्ता वाले फ्लक्स डेटासेट होगा

भास्कर न्यूज | पूसा

स्पेस एप्लीकेशन सेंटर (एसएसी), भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के सहयोग से स्पेस एप्लीकेशन सेंटर (एसएसी) व भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में एक उच्च-रिज़ॉल्यूशन एडी कोवेरियंस यानी (ईसी) टावर स्थापित करेगा। इस पहल का उद्देश्य कृषि और जलवायु अध्ययन के लिए उच्च-गुणवत्ता वाले फ्लक्स डेटासेट उत्पन्न करना और वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देना है जो वर्तमान में चल रहे और भविष्य के अंतरिक्ष-आधारित कृषि मिशनों का समर्थन करेगा। कार्बन और जल प्रवाह निगरानी, कार्बन और जल प्रवाह की निगरानी में वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोगी अनुसंधान को मजबूत करना, फसल उत्पादकता का अनुमान लगाना एवं भूमि-वायुमंडल अंतः क्रिया अध्ययन के लिए डेटा उत्पन्न करना

पूसा विवि का परिसर।

हैं। ग्रॉस प्राथमिक उत्पादकता (जीपीपी) और शुद्ध प्राथमिक उत्पादकता (एनपीपी) का विश्लेषण, जीपीपी और एनपीपी के विश्लेषण के लिए उच्च आवृत्ति और सटीक डेटा प्राप्त करना, सतह वाष्पीकरण के अनुमान के लिए डेटा इकट्ठा करना, फसल जल उपयोग दक्षता के मूल्यांकन के लिए डेटा प्राप्त करना, फसल जल उत्पादकता के मूल्यांकन के लिए डेटा प्राप्त करना आदि शामिल हैं। उपग्रह-व्युत्पन्न उत्पादों का सत्यापन-डेटासेट बिहार क्षेत्र में हमारे उपग्रह-व्युत्पन्न उत्पादों को सत्यापित करने में सहायक होगा।जलवायु-लचीला कृषि- उत्पन्न डेटा जलवायु-लचीला कृषि के समर्थन में सीओ और ऊर्जा प्रवाह-आधारित कृषि अनुसंधान का आकलन करने में मदद करेगा। वैज्ञानिकों की मानें तो इसका मुख्य उद्देश्य कृषि और जलवायु अध्ययन में अनुसंधान को बढ़ावा देना और जलवायु-लचीला कृषि के लिए आवश्यक डेटा प्रदान करना है।

# इसरो के साथ मिलकर कार्बन फार्मिंग पर काम करेगा पूसा केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय

## एसएसी व इसरो की ओर से लगाया जाएगा हाई रिजोल्यूशन एडी कोवेरियंस टावर

अजय पांडेय • जागरण

**मुजफ्फरपुर :** डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के साथ मिलकर कार्बन फार्मिंग पर काम करेगा। अनुसंधान परियोजना के लिए इसरो की तरफ से फंड उपलब्ध कराया जाएगा। गुरुवार को इस संबंध में इसरो की तरफ से पत्र प्राप्त हुआ है। कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि स्पेस एप्लीकेशन सेंटर, अहमदाबाद (एसएसी) व इसरो मिलकर विश्वविद्यालय में उच्च रिजोल्यूशन एडी कोवेरियंस (ईसी) टावर स्थापित करेंगे। इसका उद्देश्य कृषि और जलवायु अध्ययन के लिए उच्च गुणवत्ता वाले फ्लक्स डेटासेट उत्पन्न करना और अंतरिक्ष आधारित कृषि अनुसंधान को बढ़ावा देना है। यह वर्तमान और भविष्य के अंतरिक्ष आधारित कृषि मिशन को सपोर्ट करेगा। यह डेटा पृथ्वी के विभिन्न स्थानों पर कार्बन डाइआक्साइड, जल वाष्प और ऊर्जा के प्रवाह के रिकार्ड को उपलब्ध कराएगा।

**विज्ञानी और सहयोगी अनुसंधान को मिलेगी मजबूती :** कुलपति के अनुसार, कार्बन फार्मिंग से कार्बन और जल प्रवाह निगरानी से विज्ञानी और अनुसंधान को मजबूती मिलेगी। फसल उत्पादकता का अनुमान लगाने और भूमि वायुमंडल अंतःक्रिया अध्ययन के लिए डेटा उत्पन्न किया जा सकेगा। वहीं, ईसी टावर से उत्पन्न डेटा का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा सकेगा। इससे ग्रास प्राथमिक उत्पादकता (जीपीपी) और शुद्ध प्राथमिक उत्पादकता (एनपीपी) विश्लेषण के लिए उच्च आवृत्ति और सटीक डेटा एकत्र किया जा सकेगा। साथ ही, सतह वाष्पीकरण के अनुमान, फसल जल उपयोग दक्षता के मूल्यांकन और फसल जल उत्पादकता के मूल्यांकन के लिए डेटा एकत्र किया जा सकेगा। यह डेटासेट बिहार में उपग्रह-व्युत्पन्न उत्पादों को सत्यापित करने में सहायक होगा। इसके अलावा उत्पन्न डेटा जलवायु अनुकूल कृषि के समर्थन में कार्बन डाइआक्साइड और ऊर्जा प्रवाह आधारित कृषि अनुसंधान का आकलन करने में मदद करेगा।

**एआइ युक्त मशीनों को विकसित करने पर बल :** कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय में अभी हाल ही में 89 नये फैकल्टी सदस्यों ने योगदान दिया है। नये विज्ञानियों में ऊर्जा है और आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा भी। अनुभवी विज्ञानियों और नये वैज्ञानिकों के साथ मिलकर अगले कुछ वर्षों में अनुसंधान क्षेत्र में क्रांति लाने की आवश्यकता है। अनुसंधान किसानों को ध्यान में रख कर किया जाना चाहिए। स्मार्ट मशीन विकसित किए जाने चाहिए जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) से युक्त हों। पैकेजिंग और शेल्फ लाइफ बढ़ाने पर भी अनुसंधान में तेजी लानी होगी, जिससे कि ट्रांसपोर्टेशन के दौरान उत्पाद की गुणवत्ता बनी रहे।

(इनपुट : पूसा से पूर्णेंदु कुमार)

कृषि व जलवायु अध्ययन के लिए उच्च गुणवत्ता वाले फ्लक्स डेटासेट उत्पन्न कर विज्ञानी अनुसंधान को देंगे बढ़ावा

डा. पीएस पांडेय, कुलपति, डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि वि. पूसा। • सौ.वि.

### वातावरण से कार्बन डाइआक्साइड को कम करेगी कार्बन फार्मिंग

कुलपति के अनुसार, यह कदम अनुसंधान क्षेत्र में विश्वविद्यालय की प्रगति को दर्शाता है, लेकिन और लाने की आवश्यकता है। कार्बन फार्मिंग, एक ऐसी कृषि पद्धति है जो मिट्टी और पौधों में कार्बन को संग्रहित करके वातावरण से कार्बन डाइआक्साइड को कम करती है। इसका मुख्य उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करना और मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करना है। कार्बन फार्मिंग मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों को बढ़ाकर, जैसे खाद और कंपोस्ट का उपयोग करके, जुताई को कम करके या समाप्त करके मिट्टी में कार्बन को जमा करती है। कार्बनिक पदार्थों का उपयोग करके फसल चक्रण को बढ़ावा देकर और पशुधन प्रबंधन में सुधार करके ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने का प्रयास करती है। कुलपति ने बताया कि कार्बन फार्मिंग से मिट्टी के स्वास्थ्य, जल प्रतिधारण और जैव विविधता में सुधार जैसे कई लाभ प्राप्त होते हैं।

**Dainik Jagran 27-06-2025**

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 29 जून तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों में हल्की वर्षा होने की संभावना है। दो दिनों के बीच कहीं मध्यम वर्षा और कहीं भारी वर्षा होने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 35 डिग्री सेल्सियस जबकि न्यूनतम 24 से 26 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 27 जून | 33.0 | 25.0 |
| 28 जून | 33.0 | 25.5 |
| दरभंगा | | |
| 27 जून | 33.0 | 25.5 |
| 28 जून | 33.5 | 25.5 |
| पटना | | |
| 27 जून | 36.5 | 27.0 |
| 28 जून | 36.5 | 27.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 27-06-2025

# केसर की खेती पर विचार करें विज्ञानी : कुलपति

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में अनुसंधान परिषद की दो दिवसीय बैठक खरीफ 2025 का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय कार्बन फार्मिंग के क्षेत्र में इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) के साथ मिलकर कार्य करेगा, यह गर्व की बात है। यह विश्वविद्यालय की अनुसंधान के क्षेत्र में प्रगति को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में हाल ही में 89 नए फैकल्टी सदस्यों ने योगदान दिया है। नए विज्ञानियों में ऊर्जा है और आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा भी है।

- अनुसंधान परिषद की दो दिवसीय बैठक, खरीफ-2025 में कुलपति ने अनुसंधान में और प्रगति पर दिया जोर
- कहा, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के साथ मिलकर कार्य करना गर्व की बात, अनुसंधान में आएगी तेजी

अनुभवी और नए विज्ञानियों के साथ मिलकर अनुसंधान के क्षेत्र में एक क्रांति लाने की आवश्यकता है। डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने काफी काम किया है, लेकिन बहुत सारे काम किए जाने बाकी हैं। मशरूम की ही तरह केसर की खेती वातानुकूलित वातावरण में की जा सकती है। उन्होंने विज्ञानियों को इसकी खेती में संभावना तलाशने का निर्देश दिया। कृषि के क्षेत्र में ग्लोबल जरूरतों और निर्यात की संभावनाओं पर भी काम करने का निर्देश दिया।

अनुसंधान परिषद की बैठक को संबोधित करते कुलपति • जागरण

**स्पीड ब्रीडिंग और माइक्रोबायोम के क्षेत्र में काम करने की आवश्यकता :** बाह्य विशेषज्ञ के रूप में नवसारी और जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. एआर पाठक ने कहा कि विश्वविद्यालय ने डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में काफी अच्छा काम किया है। अरहर, हल्दी, मक्का, गन्ना, धान और गेंहू के कई प्रभेद विकसित किए हैं, जो किसानों द्वारा पसंद किए जा रहे हैं। उन्होंने स्पीड ब्रीडिंग और माइक्रोबायोम के क्षेत्र में भी काम करने की आवश्यकता पर बल दिया। निदेशक अनुसंधान डा. एके सिंह ने कहा कि लीची के सेल्फ लाइफ बढ़ाने को अनुसंधान के अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं।

Dainik jagran 27-06-2025

## डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में 19वीं अनुसंधान परिषद की दो दिवसीय बैठक शुरू

# कार्बन फार्मिंग के क्षेत्र में इसरो से मिलकर होगा काम : वीसी

**पूसा,निज संवाददाता।** डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि विवि कार्बन फार्मिंग के क्षेत्र में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन(इसरो) के साथ मिलकर कार्य करेगा। इस अनुसंधान परियोजना के लिए इसरो की ओर से फंड उपलब्ध करा दी गई है।

इससे संबंधित पत्र आज ही प्राप्त हुआ है।यह गौरव का विषय है।वे गुरूवार को विवि के विद्यापति सभागार में वैज्ञानिको को संबोधित कर रहे थे।मौका था विवि में आयोजित 19वीं अनुसंधान परिषद (खरीफ) की दो दिवसीय बैठक के उद्घाटन सत्र का।वीसी ने कहा कि यह विवि के अनुसंधान के क्षेत्र में प्रगति को दर्शाता है।जरूरत है किसान हित में शोध गति को तेज करने की।इसमें नवचयनित व अनुभवी वैज्ञानिको का दायित्व काफी बढ़ गया है।उन्होंने किसान की मांग को ध्यान में रखकर छोटे कृषि यंत्र, नई तकनीको व प्रभेदो का विकास के साथ डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में गति देने की जरूरत है। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लैश स्मार्ट मशीन विकसित करने, निर्यात की संभावनाओं को ध्यान में रखकर पैकेजिंग, शेल्फ टाईम बढ़ाने को लेकर तकनीकी विकास पर जोर दिया।नवसारी और जूनागढ़ कृषि विवि के पूर्व कुलपति डॉ.एआर पाठक ने स्पीड ब्रीडिंग और माइक्रोबायोम के क्षेत्र में कार्य करने, किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखकर शोध की दिशा तय करने पर बल दिया। निदेशक अनुसंधान डॉ.अनिल कुमार सिंह ने स्वागत करते हुए प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए आगामी योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की। संचालन डॉ.कुमारी अंजनी ने किया। मौके पर डॉ.मुकेश कुमार, डॉ.संतोष ठाकुर, कुलसचिव डॉ. मृत्युंजय कुमार आदि मौजूद थे।

कृषि विवि के विद्यापति सभागार में मौजूद डीन-डायरेक्टर व वैज्ञानिक। • हिन्दुस्तान

- इसरो की ओर से राशि करा दी गई उपलब्ध
- किसान हित में शोध की गति होगी तेज

## उच्च रिजॉल्यूशन एडी कोवेरियंस टावर लगेगा

**पूसा।** भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) से जुड़ा स्पेस एप्लीकेशन सेंटर (एसएसी) डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा में एक उच्च-रिज़ॉल्यूशन एडी कोवेरियंस (ईसी) टावर स्थापित करेगा। इसका उद्देश्य कृषि और जलवायु अध्ययन के लिए उच्च-गुणवत्ता वाले फ्लक्स डेटासेट उत्पन्न कराने के साथ वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देना है। यह पूर्व व भविष्य के अंतरिक्ष-आधारित कृषि मिशनों का समर्थन करेगा। विवि के मौसम वैज्ञानिक ए.सत्तार ने जानकारी देते हुए कहा कि इससे कार्बन और जल प्रवाह की निगरानी में वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोगी अनुसंधान को मजबूत कर सकेंगे। इसके सहयोग से फसल उत्पादकता का अनुमान लगाने के साथ भूमि-वायुमंडल अंत:क्रिया अध्ययन के लिए डेटा उत्पन्न करेगा।

Hindustan 27-06-2025

# मध्यम एवं लघु किसानों की खेती से जुड़े यंत्र पर शोध करे वैज्ञानिक : डॉ पीएस पाण्डेय

**पूसा (एसएनबी)।** डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के विद्यापति सभागार में अनुसंधान परिषद की दो दिवसीय बैठक खरीफ 2025 का शुभारंभ हुआ। अतिथियों के स्वागत और कुलगीत प्रसारण के बाद विवि के कुलपति डॉ पीएस पाण्डेय व अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर बैठक का विधिवत उद्घाटन किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय कार्बन फार्मिंग के क्षेत्र में इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) के साथ मिलकर कार्य करेगा। यह एक गर्व का विषय है। उन्होंने कहा कि इस अनुसंधान परियोजना के लिए इसरो की तरफ से फंड भी उपलब्ध करवाया जाएगा। इसरो की यह पेशकश विश्वविद्यालय की अनुसंधान के क्षेत्र में हुए प्रगति को दर्शाता है। लेकिन अब अनुसंधान के क्षेत्र में और तेज प्रगति लाने की जरूरत है। डॉ पाण्डेय ने कहा कि विश्वविद्यालय में अभी हाल ही में 89 नये फैकल्टी सदस्यों ने अपना योगदान दिया है। उन नये वैज्ञानिकों में ऊर्जा है और आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा भी। उन्होंने कहा कि अनुभवी वैज्ञानिकों और नये वैज्ञानिकों साथ मिलकर अगले कुछ सालों में अनुसंधान के क्षेत्र में एक क्रांति ला सकते है। डॉ पाण्डेय ने कहा कि अनुसंधान किसानों की आवश्यकता और उनकी सुविधा को ध्यान में रख कर किया जाना चाहिए। डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने काफी काम किया है लेकिन किसानो से जोडने सहित बहुत सारे काम किये जाने बाकी है। उन्होंने कहा कि केसर की खेती मशरूम की तरह वातानुकूलित वातावरण में की जा सकती है। कम खर्च में इसके खेती की संभावना तलाशने का निर्देश देते हुए उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि बिहार में और देश भर में छोटे और मध्यम जोत के किसानों की संख्या काफी अधिक है। इस लिए छोटे किसानों के लिए नये यंत्रों को बनाए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि छोटी जोत की जरूरत के हिसाब से यंत्र विकसित किया जाये। डॉ पांडेय ने इंजीनियरिंग के वैज्ञानिकों से कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लैश स्मार्ट मशीन विकसित किये जाने की आवश्यकता है जो जरूरत के मुताबिक स्वयं निर्णय लेने में सक्षम हों। उन्होंने कहा कि फल सब्जियों के पैकेजिंग और शेल्फ लाइफ बढ़ाने पर भी अनुसंधान में तेजी लानी होगी ताकि ट्रांसपोर्टेशन के दौरान उत्पाद की गुणवत्ता बनी रहे। डॉ पांडेय ने विकसित कृषि संकल्प अभियान में विश्वविद्यालय एवं बिहार के योगदान की सराहना करते हुए बताया कि दौरान किसानों के बहुत सारी समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त हुई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि वे किसानों की समस्याओं पर आधारित अनुसंधान परियोजना विकसित करें। बाह्य विशेषज्ञ के रूप में नवसारी एवं जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ ए आर पाठक ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को स्पीड ब्रीडिंग और माइक्रोबायोम के क्षेत्र में भी काम करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह ने बताया कि इन दो दिनों में किसानों की समस्याओं पर आधारित ग्यारह अनुसंधान परियोजना पर चर्चा व उनकी समीक्षा की जायेगी। पर भी चर्चा की जायेगी और बाह्य विशेषज्ञों के विचार और सुझाव के आधार पर उसे स्वीकृति प्रदान की जायेगी। बैठक में बाह्य विशेषज्ञ के रूप में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट रिसर्च के निदेशक डॉ सी तारा सत्यवती और भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान कानपुर के निदेशक डॉ जीपी दीक्षित भी शिरकत करेंगे।

मौके पर सभी कालेजों के डीन, विभागाध्यक्ष एवं डॉ मुकेश कुमार, डॉ एस के ठाकुर, समेत सभी वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

उद्घाटन करते वीसी व अन्य।

**Rashtriya Sahara 27-06-2025**

# इसरो के साथ मिलकर कार्बन फार्मिंग में अनुसंधान करेगा डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय : वीसी

**पूसा (एसएनबी)।** भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा परिसर में एक उच्च-रिजॉल्यूशन एडी कोवेरियंस (ईसी) टावर स्थापित करेगा। इस का उद्देश्य कृषि और जलवायु अध्ययन के लिए उच्च-गुणवत्ता वाले फ्लक्स डेटासेट उत्पन्न करना और वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देना है। जो चल रहे और भविष्य के अंतरिक्ष-आधारित कृषि मिशनों का समर्थन करेगा। गुरूवार को अनुसंधान परिषद के दो दिवसीय बैठक के उद्घाटन सत्र के दौरान अपने संबोधन में उक्त जानकारी देते हुए डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्याल के कुलपति डॉ पीएस पांडेय कहा कि इससे कार्बन और जल प्रवाह की निगरानी में वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोगी अनुसंधान को मजबूती मिलेगी। फसल उत्पादकता का अनुमान लगाने और भूमि-वायुमंडल अंतःक्रिया अध्ययन के लिए अपेक्षाकृत विश्वसनीय डेटा उत्पन्न किया जा सकेगा। उन्होंने बताया कि ईसी टावर से उत्पन्न डेटा का उपयोग किया जा सकेगा। ग्रॉस प्राथमिक उत्पादकता ट्ठजीपीपी) और शुद्ध प्राथमिक उत्पादकता ट्ठएनपीपी) विश्लेषण के लिए उच्च आवृत्ति और सटीक डेटा उपलब्ध हो सकेगा। इसके अलावा सतह वाष्पीकरण के अनुमान के लिए डेटा, फसल जल उपयोग दक्षता के मूल्यांकन के लिए डेटा, 'फसल जल उत्पादकता ट्ठसीडब्ल्यूपी) मूल्यांकन के लिए डेटा उपलब्ध होगा। डॉ पांडेय ने कहा कि यह डेटा सेट बिहार क्षेत्र में हमारे उपग्रह-व्युत्पन्न उत्पादों को सत्यापित करने में सहायक होगा। उत्पन्न डेटा जलवायु-लचीला कृषि के समर्थन में सीओ टू ट्ठकार्बन डाइ ऑक्साईड) और ऊर्जा प्रवाह-आधारित कृषि अनुसंधान का आकलन करने में मदद करेगा। इस सहयोग का उद्देश्य कृषि और जलवायु अध्ययन में अनुसंधान को बढ़ावा देना और जलवायु-लचीला कृषि के लिए आवश्यक डेटा प्रदान करना है।

संबोधित करते वीसी व अन्य।

**Rashtriya Sahara 27-06-2025**

# कृषकों के बीच कृषि यंत्र वितरण

**शिवहर (एसएनबी)** ।आज कृषि विज्ञान केंद्र, शिवहर में अनुसूचित जाति उप-योजना टैब-ैच) परियोजना के अंतर्गत कृषकों को कृषि यंत्र वितरित किए गए। इस अवसर पर केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. अनुराधा रंजन कुमारी की अध्यक्षता में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में चयनित लाभार्थी किसानों को आधुनिक कृषि उपकरण जैसे कि स्प्रे मशीन, ग्रबर एवं मक्का शेलर वितरित किए गए।डॉ. अनुराधा रंजन कुमारी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि इन आधुनिक यंत्रों के प्रयोग से न केवल कृषि कार्यों में सहूलियत होगी, बल्कि किसानों की उत्पादकता एवं आय में भी वृद्धि होगी। उन्होंने बताया कि ैबैच परियोजना का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जाति के किसानों को तकनीकी सहायता एवं संसाधन प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है।कार्यक्रम में किसानों को यंत्रों के सही उपयोग एवं रख-रखाव की जानकारी भी दी गई। इसके साथ ही डॉ सौरभ संकर पटेल वैज्ञानिक कृषि अभियंत्रण द्वारा कृषकों को फसल सुरक्षा, उन्नत बीज चयन, मृदा परीक्षण और मौसम आधारित खेती पर भी मार्गदर्शन दिया।इस अवसर पर बड़ी संख्या में स्थानीय किसान, कृषक महिला एवं किसानों ने कृषि विज्ञान केंद्र की इस पहल की सराहना की और भविष्य में और अधिक सहयोग की अपेक्षा जताई। इस अवसर पर डॉ संचिता घोष वैज्ञानिक उद्यान द्वारा सब्जी उत्पादन की जानकारी दी गई डॉ एन एम एच इनलिंग द्वारा महिलाओं को शसक्त करने के लिए कृषि उद्यम की जानकारी दी गई।इस कार्यक्रम में मीणा देवी, रंजू देवी, जानकी देवी, गनौरी मांझी, राजे देवी, रविन्द्र मांझी, राकेश पासवान, अनीता देवी, उमेश पासवान, इंदु देवी, उमेश पासवान, मुन्नीलाल राम उषा, अमिता देवी सहित 50 लोगो ने भाग लिया।

**Rashtriya Sahara 27-06-2025**

Time of India. Date - 27/6/25 P - 01.

# Isro to fund carbon farming at RPCAU

B K Mishra | TNN

Patna: In a major scientific leap for agricultural sustainability in Bihar, Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU), Pusa, has entered into a partnership with the Indian Space Research Organisation (ISRO) to promote carbon farming, an emerging practice seen as vital to mitigating climate change. The collaboration, announced on Thursday, is a significant shift towards space-assisted agricultural research in the state. RPCAU vice-chancellor P S Pandey announced the development during the inauguration of the university's 19th general research council (kharif) meeting, saying that official communication from Isro was received earlier in the day.

"The entire funding for this collaborative work will be provided by Isro," he said. Under this initiative, ISRO's Space Applications Centre will install a high-resolution Eddy Covariance tower on the university campus.